ज्वरतिमिरनाशक (or क्याखूब चिकित्सा) - with commentary in Hindi by क्याखूबचौबेरामप्रसाद. - Part I. Mumbai, 1994 Vikram era.

1119

10

184

Bill No. 3/07-08

141.

2008-0306

आयु० 290

श्रीः

ज्वरतिमिरनाशक

प्रथम भाग.

मुद्रक व प्रकाशक

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-' श्रीवेङ्कटेश्वर ' स्टीम् प्रेस, बम्बई ४.

संवत् २०१४.] [सन् १९५८.

ज्वरतिमिरनाशक

Indira Gandhi National Centre for the Arts

श्रीः ।

ज्वरतिमिरनाशक.

श्रीमथुरानिवासी चातुर्वेद शंकरलालजीके पुत्र
क्याखूब चौबे रामप्रसादकी बनायी.

क्याखूबचिकित्सा ।

प्रथम भाग.

खेमराज-श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस

बम्बई

संवत् १९९४, शके १८५९.

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

SAN
616.047
RAM

मुद्रक और प्रकाशक-

खेमराज-श्रीकृष्णदास,

मालिक-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षाधीन है।

KALANIDHI
Rare Book Collection
ACC No.: R-306
IGNCA Date: 25.3.08

DATA ENTERED
Date 23/06/08

Indira Gandhi National Centre for the Arts

॥ श्रीः ॥

ज्वरतिमिरनाशककी-विषयानुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठ.
नीति विषय	१
डाक्टरी तोल परिमाण. ...	४
वैद्य, रोगी और सेवकके कर्म	६
ज्वरप्रकरण	७
डाक्टरीमतसे ज्वरका हाल.	१०
ज्वरोंके उपचार और लंघनादि	१८
डाक्टरी मतके अनुसार उपचार	२१
ज्वररोगीके जल पीनेके नियम	२६
डाक्टरीमतके अनुसार जलके नियम	२८
टूस्टवाटर बनानेकी विधि. ...	,,
सोडावाटर बनानेकी विधि.	२९
लैमूनेट बनानेकी विधि ...	,,
आवमुकत्तर	,,
बूझा हुआ पानी बनाना. ...	३०
रात्रिसमयके जलपानके गुण.	,,
ज्वरोंमें औषध देनेका समय और उपचार	३१
भोजन विषय	३६
ज्वरके पश्चात् वर्जित कर्म. ...	४१
वातज्वरनिदान	४४
वातज्वरचिकित्सा	४५
पाचनरूप	४६
भैरवरस	४८
शीतमंजरी	,,
पित्तज्वरनिदान	४९
पित्तज्वरचिकित्सा	,,
मतबूख (काढा)	५०
खमीरा खस	५१
सिकंजबीन बजूरी	५२
कुर्सतवासीर (वंशलोचनकी टिकिया)	५५
बनफशाका शर्बत	५८
नीलोफरका शर्बत	,,
खांसीपर योग	,,
खांसीपर कत्थेकी गोली ...	,,
इमलीका शर्बत	,,
चंदनका शर्बत	५९
आलूबुखारेका शर्बत	,,
अर्ककपूरयोग यूनानी ...	,,
क्याखूब सिकंजवीन ...	६०
कमौनी मुस्ल (जुलाबके लिये)	६१
बनफशाकी गोलियां	,,

Indira Gandhi National Centre for the Arts

विषय.	पृष्ठ.
द्राक्षदि काढा	६१
पटोलादि काढा	६२
भूनिंबादि काढा	,,
ससिक्तादि काढा	,,
जवारशजरश्क	,,
सिकंजवीन सादा	,,
सिकंजवीन वजूरी मौतदिल.	६३
नींबूकी सिकंजवीन	,,
सिकंजवीन वजूरी सर्द ...	,,
सिकंजवीन वजूरी गरम ...	६४
सिकंजवीन जंगली प्याजकी.	,,
वंशलोचनका चूर्ण	,,
सिरफ आफ लैमन (नींबूका शर्बत)	६५
नारंगीका शर्बत	,,
टिन्चर आफ औरेंजपिल ...	,,
सिरफ आफ औरेंजपिल. ...	६६
शर्बत शहतूतका	,,
मीठे अनारका शर्बत ...	६७
शर्बत गाउजुबां	,,
हर्डका शर्बत	,,
गुलाबका शर्बत	,,
कफज्वरका निदान	६८
कफज्वरकी चिकित्सा ...	६९
आंवलेकी चटनी	७२
कायफर अवलेह	,,
वातपित्तज्वरलक्षण	७३

विषय.	पृष्ठ.
वातपित्तज्वरचिकित्सा. ...	७४
वातकफज्वरनिदान ...	७६
वातकफज्वरचिकित्सा ...	,,
पित्तकफज्वरनिदान	७९
पित्तकफज्वरचिकित्सा ...	,,
डैंग्यूफीवरका निदान ...	८१
डैंग्यूफीवरकी चिकित्सा ...	८२
सन्निपातज्वरलक्षण	८३
सन्निपातज्वरादौ रस ...	८४
कुलवधूरस	,,
ज्वरांकुश रस	८५
दूसरा ज्वरांकुश रस ...	८६
तीसरा योग ज्वरांकुश रस.	,,
मृतसंजीवनी वटिका ...	८७
निंबाद्यचूर्ण	,,
टाईफसफीवर	८८
टाईफसफीवरकी चिकित्सा.	९१
सिरेविरोइस पाइनल फीवर. ...	,,
सिरेविरोइस पाइनल फीवरकी चिकित्सा	९३
टाईफाइड फीवरका निदान.	,,
इनफनटायल रीमीटेंट फीवर (बालकोंका ज्वर) ...	९८
टाईफइडफीवरकी चिकित्सा	१०१
केम्फर वाटर बनानेकीविधि.	१०४

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ज्वरोंका परस्पर फर्कचक्र.

टाईफाइड फीवर.

१ इस ज्वरमें शीत केई वार लगता है और विना मालूम चढता है.

२ इस ज्वरमें रोगी प्रारम्भसेही कमजोर नहीं होता है, नेत्र चमकदार होते हैं, कपोलोंमें लाल दाग विना मालूम पड जाते हैं.

३ इसमें आठवें दिन पीठ हृदय उदरपर गुलाबी फुंसियां दूर दूरपर निकलती हैं सो दो तीन दिनमें नष्ट हो जाती हैं फिर दूसरे स्थानपर निकलती हैं और इसी भांतिसे नष्ट हो जाती हैं इसीभांतिसे कई वार होता रहता है.

४ दस्त रक्तयुत होते हैं. एल्यूस्केलवालोंके पास एकमेन्ट गिलांटमें घाव हो जाते हैं.

५ धीरे धीरे गरमी (ज्वरका वेग) बढता है, गरमी सन्ध्याको १०२ दरजेपर हो तौ प्रभातको १०१ दरजेपर हो जाती है फिर प्रभातको १०२ और सन्ध्याको १०४ पर हो जाती है. चार पांच दिनतक बराबर इसी भांतिसे घटती बढती रहती है.

६ यह ज्वर चालीस वर्षसे अधिक अवस्थावालोंको कम आता है और एक वार जाकर फिरभी आने लगता है. धनवानों और सुखियोंको विशेष करके यह ज्वर आता है.

७ इस ज्वरकी छूत बहुत कम दूसरे प्राणीको लगती है, न इसका विष देहमें फैलता है.

८ मर्यादा इस ज्वरकी २१ दिनसे ३० दिनतककी है.

टाईफस फीवर.

१ यह ज्वर एकवारही देह कंपकर चढ आता है, मस्तकमें पीडा अधिक होती है और रोगी सुस्त और काहिल हो जाता है.

२ इस ज्वरके प्रारम्भसेही रोगीका बल नष्ट हो जाता है, नेत्र भारी और चढे हुए, चेहरेपर तेजी आ जाती है.

३ इसमें पांचवें दिन कलाईपर सहतूतके सदृश और सहतूतके रंगसमान दाने निकलते हैं और अन्ततक एकसेंही ये दाने बने रहते हैं.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

४ न आंतोंमें घाव होते हैं, न पेटसे रक्त निकलता, दस्त कम होते हैं.

५ चौवीस घंटेसे और तीसरे दिनतक ज्वरका वेग (गरमी) और नाडीका गमन बढता रहता है, ठहरकर आठवे दिनसे कम होने लगता है.

६ यह ज्वर एक वार नष्ट हुए पीछे फिर नहीं आता है और गरीब मनुष्यों और भूखे मनुष्योंको अधिक करके आता है और जो रोगीके पास सुखिया धनवान् इत्यादि आवें तौ उनको भी आ जाता है.

७ इस ज्वरकी छूत बहुत जल्दी दूसरे मनुष्यको लग जाती है और विषभी देहमें शीघ्र फैल जाता है.

८ मर्यादा इस ज्वरकी १४ दिनसे २१ दिनतककी है.

गौरीशंकरका क्याखूबजीसेप्रश्न–और कौन कौन ज्वरोंमें फरक है ? उत्तर.

यलो फीवर.

१ ज्वर हर समय एकसा रहता है.

२ ज्वरके दूसरे दिन मूत्रमें अलब्यूमन निकलता है.

३ इसमें प्लीहा नहीं बढती है.

४ उलटी और दस्त रक्तयुक्त होते हैं.

५ इसमें रोगी तीसरे दिन मर जाता है.

६ ऐंठन देहमें (वाइंटे) हो जाते हैं और ये देहमें ऐंठन शीघ्रही हो जाती है.

लोरीमीटेंट फीवर.

१ ज्वर घटता बढता रहता है.

२ इस ज्वरमें मूत्रमें अलब्यूमन नहीं निकलता.

३ इसमें प्लीहा बढ जाती है.

४ कभी रक्तयुक्त दस्त उलटी होती है.

५ इसमें सातवें दिनसे प्रथम कम रोगी मरते हैं.

६ ऐंठन देहमें धीरे धीरे होती है.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

एडनेमक रीमींटेंट फीवर

१ देहपर किसी प्रकारकी फुंसी दाने नहीं उत्पन्न होते.

२ आमाशय और डियोडीन्ममें खराश हो जाता है.

३ किञ्चित् वारीका है (नौवर्ती कुछ है)

४ देहका चर्म पीला पड जाता है.

५ उदरमें केवल आमाशय और हैपाट •करे जन्मेही शूल होता है और कहीं नहीं होता.

६ दस्तमें मल काले रंगका पित्तयुक्त निकलता है.

७ कदापि रक्त वहे तौ नाक और.आंतोंसे, और मूत्र मेहोंकर वहत्ता रहता है.

८ इसकी उत्पत्तिका हेतु मलेरिया है.

इनटर्क फीवर.

१ दहपर गुलाबी रंगके दाने निकलते हैं.

२ इसमें खराश नहीं होता है.

३ दायमी.

४ इसमें देहका चर्म पीला नहीं पडता है.

५ सम्पूर्ण पेटमें शूल होता है.

६ दस्तोंमें मल भूरा पीले रंगका निकलता है.

७ जब ज्वरकी वृद्धि हो तौ आंतोंहीसे रक्त बहता रहता है.

८ जब मरे हुए पशु गांवों और शहरोंके पास पडे सडते हैं तब यह पवन इस ज्वरको उत्पन्न करती है.

इति ज्वरतिमिरनाशक तथा क्याखूबचिकित्सा समाप्त।

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्रय्य पुस्तकें (वैद्यक-ग्रन्थाः)

नाम. की. रु. आ.

अष्टाङ्गहृदय-(वाग्भट) मूल, वाग्भटविरचित । इसमें सूत्रस्थान, शारीरस्थान, निदानस्थान, चिकित्सास्थान कल्पस्थान, उत्तरस्थान इत्यादिमें संपूर्ण रोगोंकी उत्पत्ति, निदान, लक्षण और क्काथ, चूर्ण, रस, घी, तैल, आदिसे अच्छी चिकित्सा वर्णित है. ४–०

अष्टाङ्गहृदय-(वाग्भट) भाषाटीकासहित । इस वाग्भटकृत मूलकी "शिवदीपिका" नामक भाषाटीका पटियाला राज्यके प्रधान चिकित्सक वैद्यरत्न पं० रामप्रसादजी राजवैद्यके सुपुत्र पं० शिवशर्मा आयुर्वेदाचार्यजीने ऐसी सरल बनाई है कि जो सर्वसाधारणके परमोपयोगी है. १०–०

अष्टाङ्गहृदय-(वाग्भट) सूत्रस्थान–वाग्भटकृत मूल तथा अरुणदत्तकृत सर्वाङ्गसुन्दरा, चन्दनदत्तकृत पदार्थचन्द्रिका, हेमाद्रिकृत आयुर्वेदरसायन और कठिन स्थलपर पटियाला-राजवैद्य वैद्यरत्न पं. रामप्रसादजीकृत टिप्पणीसहित (शेष स्थान छप रहे हैं) ६–०

अष्टाङ्गहृदय–(वाग्भट) सूत्रस्थान-वाग्भटविरचित तथा पटियाला राजवैद्य वैद्यरत्न पं० रामप्रसादजीके सुयोग्य पुत्र, विद्यालंकार शिवशर्मकृत भाषाटीका और संदिग्ध विषयोंपर संस्कृत टिप्पणी सहित ३–०

अमृतसागर-भाषा । इसमें सर्व रोगोंके वर्णन और यत्न हैं । इसके द्वारा विना गुरु वैद्य हो सकते हैं। ग्लेज कागज. ३–०

अमृतसागर–भाषा । उपरोक्त रफ कागज. २–८

Indira Gandhi National Centre for the Arts

विषय.	पृष्ठ.
सोल्यूशन ऑफ लाइम ...	१०५
सकरेटैड सोल्यूशन आफ लायम	,,
मियूसलिज आफ गम एकिसिया	१०६
लनसैडपुलटिस (अलसीकी पुलटिस)	,,
सिरप आफ पापीज (शर्बत खशखाश)	,,
रसधातुगत ज्वरलक्षण. ...	१०७
मांसगत ज्वरलक्षण ...	,,
मेदोगत ज्वरलक्षण ...	,,
रक्तगत ज्वरलक्षण	१०८
अस्थिगत ज्वरलक्षण ...	,,
मज्जागत ज्वरलक्षण ...	,,
शुक्रगत ज्वरलक्षण ...	१०९
रिलैपैसिंग फीवर ...	,,
रिलैपैसिंग फीवरकी चिकित्सा ...	१११
आंगतुक ज्वरनिदान ...	,,
स्त्रीके कामज्वरके लक्षण. ...	११३
विषमज्वरनिदान ...	,,
विषमज्वरके भेद ...	११४
इन्टरमिटेंट फीवर और मलैरिया	,,
क्यूटीडैनफीवरका निदान.	११९
टरशियन फीवर (तृतीयक ज्वर) ...	१२४
कारटन फीवर (चातुर्थिक ज्वर)	१२५
इन्टरमेटेंट फीवरकी चिकित्सा ...	१२७
कोइनाइनका सेवन ...	१३०
कोइनाइनकी मिक्सचर ...	१३१
कोइनाइनकी गोलियां ...	,,
कोइनाइनकी पिचकारी ...	१३२
ऐनजैक्ट आफ कोइनाइन.	,,
कोइनाइनके विशेष योग. ...	१३३
कोइनाइनके विशेष गुण ...	१३४
कोइनाइनकी मात्राका प्रमाण.	१३५
संखियाकी गोलियां ...	१३६
दूसरा योग संखियाकी गोलीका	,,
एमोनी अटेड मिक्सचर आफ कोइनाइन ...	,,
वाइन्म आफ कोइनाइन ...	,,
टिंचर आफ हरडो क्लोरेट आफ कोइनाइन ...	१३७
फीवरी साइड लिपज ...	,,
सिंकोना फैवरी फियूज ...	,,
सिकोना फैवरी फियूज की गोलियां	१३८
सिकोना फैवरी फियूजकी मिक्सचर	,,
रैडसिंकोनावार्क	,,
डिकोकशन आफ सिंकोना.	,,

Indira Gandhi National Centre for the Arts

विषय.	पृष्ठ.
टिन्चर आफ सिंकोना ...	१३९
कम्पौंड टिन्चर आफ सिंकोना.	,,
एकाहिक एकांतरा तृतीयक चातुर्थिक ज्वरचिकित्सा.	,,
यूनानी योगतृतीयकज्वरपर.	१४०
चातुर्थिक जो बादीयुक्त हो चिकित्सा	१४१
मिश्रितचिकित्साडाक्टरीमतसे.	,,
विषमज्वरचिकित्सा ...	१४२
सिंपल कंटीन्यूड फीवरका निदान	१४४
चिकित्सा	१४५
प्रलेपकज्वरलक्षण	१४६
जीर्णज्वरलक्षण	,,
जिर्णज्वरकी चिकित्सा. ...	१४७
यलो फीवर (पीलाज्वर).	१४८
चिकित्सा	१५०
पिलैग (ताउन)	,,
वातबलासकज्वर ...	१५१
गंभीरज्वरलक्षण ...	,,
साध्यलक्षण और उपद्रव....	१५२
रीमीटेंटफीवर ...	१५३
रीमीटेंटफीवरकी चिकित्सा.	१५५
सिकंजवीनसिरकाअंगूरी.	१५७
सर्वज्वरोंकी चिकित्सा. ...	१६०
शर्वत नीलोफर ...	१६१
अर्क शीरवसेत ...	,,

विषय.	पृष्ठ.
अर्ककपूर दूसरा योग ...	१६१
कुर्सजरश्क ...	१६२
कुर्सजरश्क तथा दूसरा योग.	,,
कुर्सतवाशीर ममसिक ...	१६३
कुर्स कपूर ...	,,
कुर्सबनफशा ...	,,
कुर्समुवार्क ...	१६४
मतबूख (काढा) ...	१६५
काढा तपल्र्जा ...	,,
जुशांदा ...	१६६
योग ...	,,
हुव्व (गोली खांसीपर)...	१६७
खांसीकी गोली ...	,,
शर्वत ऐजाज खांसीपर. ...	१६८
शर्वत सिपस्तां ...	,,
शर्वत अन्जवार ...	१६९
लाऊकअलसी ...	,,
लाऊक वंशलोचन ...	,,
लाऊकबादाम ...	१७०
जवारश ऊद ...	,,
जवारश ऊद मीठी ...	१७१
जवारश ऊद तुर्स (खट्टी)...	,,
दूसरा योग जवारश ऊद....	,,
सफूफ दस्त बंद करनेका....	१७२
सुदर्शनचूर्ण ...	,,
दूसरा योग सुदर्शन चूर्णका ...	१७४

Indira Gandhi National Centre for the Arts

विषय.	पृष्ठ.	विषय.	पृष्ठ.
चंडेश्वररस ...	१७५	क्याखूबजीकाफकीरीकालटिका	१८६
व्याधिनाशक रस ...	१७६	पंचजीरकपाक ...	१८७
स्कार्लट फीवर (लालज्वर).	१७८	सुंठीपाक ...	,,
स्कार्लटफीवरकी चिकित्सा ...	१७९	सुपारीपाक ...	१८९
पियोरपर्लफीवर(प्रसूतज्वर)	१८०	गर्भिणीके ज्वरकीचिकित्सा.	१९०
पियोरपर्लफीवरकी चिकित्सा ...	१८३	लवंगादि चूर्ण ...	१९१
पियोरपर्लइफीमैरा (जच्चाका ज्वर) ...	१८४	कंजाका सफूक ज्वरोंपर ...	१९३
प्रसूतकी विशेष चिकित्सा.	१८६	अतीस पौडर ज्वरोंपर ...	१९४
		रसौतका योग ज्वरपर ...	,,
		एपियोल ज्वरपर ...	,,
		ज्वरोंके परस्पर फर्कका चक्र.	,,

इत्यनुक्रमणिका समाप्त.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

चौबे क्याखूब हकीमकृत–

ज्वरतिमिरनाशक

प्रसिद्ध क्याखूबचिकित्सा.

प्रथम भाग १.

धनिकः श्रोत्रियो राजा नदी वैद्यस्तु पञ्चमः ॥ पञ्च यत्र न विद्यन्ते न तत्र दिवसं वसेत् ॥ १ ॥

धनवान्, वेदका ज्ञाता, राजा, नदी और वैद्य जहांपर ये पांच विद्यमान न रहते होवें वहां एक दिन भी वास नहीं करे ॥ १ ॥

लोकयात्रा भयं लज्जा दाक्षिण्यं त्यागशीलता ॥ पंच यत्र न विद्यन्ते न कुर्य्यात्तत्र संगतिम् ॥ २ ॥

जीविका, भय, लज्जा, कुशलता, देनेकी प्रकृति जहां ये पांच नहीं तहांके लोगोंके साथ संगति नहीं करनी चाहिये ॥ २ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यन्न भवति तन्न भाव्यं भवति च भाव्यं विना प्रयत्नेन ॥ करतलगतमपि नश्यति यस्य तु भवितव्यता नास्ति ॥३॥

जो होनेवाला नहीं है वह नहीं होता है और होनेवाला विना उपाय किये ही होता है। जो होनेवाला नहीं है तो वह हाथमें आया भी नष्ट होता है ॥ ३ ॥

तादृशी जायते बुद्धिर्व्यवसायोऽपि तादृशः॥ सहायास्तादृशा एव यादृशी भवितव्यता ॥ ४ ॥

वैसेही बुद्धि और वैसाही उपाय होता है और वैसेही सहायक मिलते हैं जैसा कि होनेवाला होता है ॥ ४ ॥

न तान् पश्यंत्यधर्मिष्ठाः कृतघ्नाश्चापि मानवाः ॥ भिषजद्वेषिणश्चापि ब्राह्मण-द्वेषिणस्तथा ॥ ५ ॥

अधर्मी, कृतघ्नी, वैद्यद्वेषी और ब्राह्मणद्वेषी ऐसे मनुष्योंको सोमलता नहीं दीखती है ॥ ५ ॥

लुब्धमर्थेन गृह्णीयात् स्तब्धमंजलि-कर्मणा ॥ मूर्खं छन्दानुवृत्त्या च यथा-र्थत्वेन पण्डितम् ॥ ६ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लोभीको धन देकर, अहंकारीको हाथ जोड़कर, मूर्खको उसके अनुसार वर्तनेसे और पंडितको सचाईसे वशमें लावे ॥ ६ ॥

सुखस्पर्शप्रशंसित्वं दुःखद्वेषणलोलता ॥ शक्तस्य चाप्यनुत्साहः कर्मस्वालस्यमुच्यते ॥ ७ ॥

जिसमें सुखदायक पदार्थोंके भोगनेकी इच्छा हो, दुःखसे द्वेष हो, चंचलता हो, सामर्थ्य होते भी काम करनेको जो न चाहता हो उस अवस्थाको आलस्य कहते हैं ॥ ७ ॥

दूरस्थोऽपि न दूरस्थो यो यस्य मनसि स्थितः ॥ यो यस्य हृदये नास्ति समीपस्थोऽपि दूरतः ॥ ८ ॥

जो जिसके हृदयमें रहता है वह दूरभी हो तो भी कदापि दूर नहीं है. जो जिसके मनमें नहीं है वह समीपभी हो तौभी दूरही है ॥ ८ ॥

स्त्रीणां द्विगुण आहारो लज्जा चापि चतुर्गुणा ॥ साहसं षड्गुणं चैव कामश्चाष्टगुणः स्मृतः ॥ ९ ॥

पुरुषोंसे स्त्रियोंका आहार दूना, लज्जा चौगुनी, साहस छःगुना और काम अठगुना अधिक होता है ॥ ९ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

डाक्टरी तोलपरिमाण.

नव्वे ग्रेनभरकी एक अठन्नी होती है इसलिये चौअन्नीभरका चांदीका एक टुकडा लेकर उसके बराबरके तीन टुकडे कर डालनेसे प्रत्येक टुकडा पंद्रह ग्रेनका हो जावेगा; फिर उस पंद्रह ग्रेनवाले एक टुकडेके बराबरके तीन टुकडे कर डालनेसे प्रत्येक टुकडा पांच २ ग्रेनका हो जावेगा, फिर उस पांच ग्रेनवाले एक टुकडेके बराबर पांच टुकडे कर डालनेसे प्रत्येक टुकडा एक २ ग्रेनका हो जावेगा. यही एक ग्रेन जो आधी रत्तीसे कुछ कम है उसीका नाम ग्रेन है. ऐसे वीस ग्रेनका एक स्क्रूपल होता है और तीन स्क्रूपल तथा साठ ग्रेनका एक ड्राम होता है और आठ ड्रामका एक औंस होता है. यह तोल सूखे पदार्थोंकी है और सोलह औंसका एक पौंड होता है.

हिंदुस्थानी और डाक्टरीतोलका मिलान.

सेर.	छटांक.	तोला.	मासा.	रत्ती.	पौंड.	औंस.	ऐपोथिकेरीजरेट.			ग्रेन.
							पौंड.	औंस.	ड्राम.	
१	१६	८०	९६०	७६८०	२ पौंड. ४०० ग्रेन.	३२ औंस. ४०० ग्रेन.	४	२०	२४०	१४४००
०	१	५	६०	४८०	०	२ औंस. २५ ग्रेन.	०	०	१५	९००
०	०	१	१२	९६	०	०	०	०	३	१८० हैरादाग् रुपयेभर
०	०	०	१	८	०	०	०	०	१/४	१५
०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	पौने दो ग्रेन.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पतले गीले पदार्थोंकी तोल.

ग्यालन.	पाइंट.	फिल्यूड औंस.	फिल्यूड ड्राम.	मिनियम् बूंद.	कैफियत.
१	८	१६०	१२८०	७६८००	मिनियम् नाम बूंदका है और ड्राम नाम बड़ी बूंदका है. ६० मिनियमका एक फिल्यूड ड्राम होता है आठ फिल्यूड ड्रामका १ फिल्यूड औंस होता है।
०	१	२०	१६०	९६००	
०	०	१	८	४८०	
०	०	०	१	६०	

चमचोंका प्रमाण.

टीस्पून (चाहके पीनेकी चमच) एक ड्रामकी होती है और डजरेटस्पून (साहिबलोगोंके खाना खानेकी चमच) दो ड्रामकी होती है और टेबल स्पून (दाल-सालन पतले पदार्थोंके लेनेकी चमच) चार ड्रामकी होती है. मिन्म मेजर गिलास चिह्न पडे हुए काचके होते हैं. जिन्होंसे औषध नापी जाती है वे ही तोलका प्रमाण जानो और पत्थरकी बनी एक सिल्ली होती है उसपरभी चिह्न बने होते हैं. गोलियां बनाते समय उसीसे नापकर बनानेसे ठीक प्रमाण और ठीक बरा-बरीकी तोलमें बन जाती हैं और अनेक पैमाने तोल नापके बने हुए ठीक मिलते हैं. विदित हो कि आधा लिखना हो तथा आधा लेना हो तो आधेका यह चिह्न है. S. S. ग्रेनकी तराजूमें तेरह बांट होते हैं सात ग्रेनके

Indira Gandhi National Centre for the Arts

बांट अर्थात् आधे ग्रेनसे लेकर छः ग्रेनतकमें होते हैं. स्क्रूपलके यानी आधेसे लेकर दो स्क्रूपलतक और इतने ही बांट ड्रामके होते हैं अर्थात् आधे ड्रामसे लेकर दो ड्रामतक इन तेरह बांटोंको फैलानेसे ३०१ ½ ग्रेन होते हैं.

वैद्य और रोगी और सेवकके कर्म.

भिषक् सर्वेषु रोगेषु निर्दिष्टानि यथा-यथम् ॥ निदानपथ्याऽपथ्यानि त्रीणि यत्नाद्विचिंतयेत् ॥ १० ॥

वैद्य सम्पूर्ण रोगोंमें यथायोग्य निदान, पथ्य और अपथ्य इन तीनोंको सावधानीके साथ विचारे कि किस कारणसे यह रोग हुआ है और उस रोगपर कौन वस्तु पथ्य है और कौन अपथ्य है ॥ १० ॥

वैद्यो व्याध्युपसृष्टश्च भेषजं परिचा-रकः ॥ एते पादाश्चिकित्सायाः कर्म-साधनहेतवः ॥ ११ ॥

वैद्य, रोगी, औषध और वैद्यका सेवक ये चिकित्साके चार पाद कर्मकी सिद्धिके हेतु हैं. यदि इनमेंसे एक भी अयोग्य होता है तो कार्य्य सिद्ध नहीं होता है ॥ ११ ॥

रुक्षु सर्वास्वपथ्यानि यथास्वं परिवर्ज-येत् ॥ तास्त्वपथ्यैर्विवर्द्धन्ते दोहदैरिव वीरुधः ॥ १२ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts.

रोगी सम्पूर्ण रोगोंमें यथायोग्य अपथ्यको त्याग देवे कारण यह है कि रोग कुपथ्यकरके ऐसे बढते हैं जैसे जलके सींचनेसे लता बढती है ॥ १२ ॥

विनापि भेषजैर्व्याधिः पथ्यादेव निवर्त्तते ॥ नतु पथ्यविहीनस्य भेषजाणां शतैरपि ॥ १३ ॥

विना औषधकेही रोग पथ्य करनेसे नष्ट हो जाते हैं कुपथ्य करनेसे रोगकी वृद्धि होती है ॥ १३ ॥

इति श्रीमन्माथुरकुलोद्भवचातुर्वेदीयशंकरलालमथुरानिवासी तस्यात्मजचौबेक्याखूबरामप्रसादाविरचते ज्वरतिमिरनाशके प्रथमं प्रकरणम् ॥ १ ॥

अथ ज्वरप्रकरणम्.

ज्वरको डाक्टरीमतमें फीवर और यूनानीमतमें हुमी जिसका बहुवचन हुमीयात है और उर्दूभाषामें बुखार कहते हैं.

तेषां तद्वचनं श्रुत्वा प्राब्रवीद्भिषजां वरः ॥ ज्वरमादौ प्रवक्ष्यामि स रोगानीकिराट् स्मृतः ॥ १ ॥

शिष्योंके वचनोंको सुनकर भिषग्वर धन्वन्तरि बोले

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कि, हम ज्वरका वर्णन करते हैं. यह ज्वर रोगसमूहोंका राजा होता है ॥ १ ॥

दक्षापमानसंक्रुद्धरुद्रनिःश्वाससंभवः ॥
ज्वरोऽष्टधा पृथग्द्वंद्वसंघातागंतुजः
स्मृतः ॥ २ ॥

जब दक्ष प्रजापतिने शंकरका अपमान किया और उस अपमानसे शंकरको क्रोध आया तब रुद्रकी श्वाससे ज्वर उत्पन्न हुआ सो आठ प्रकारका है. जैसे वातादिक न्यारे २ तीन, द्वंद्वज दोषों करके तीन, सन्निपात और आगंतुक. यथा वातज्वर, पित्तज्वर, कफज्वर, वातपित्त-ज्वर, वातकफज्वर, पित्तकफज्वर, सन्निपात और आगं-तुक इनके रूप आगे कहेंगे ॥ २ ॥

मिथ्याहारविहाराभ्यां दोषा ह्यामाश-
याश्रयाः ॥ बहिर्निरस्य कोष्ठाग्निं ज्व-
रदाः स्यू रसानुगाः ॥ ३ ॥

जैसे कि आमाशयमें रहे हुए जो वातादिक दोष सो वे मिथ्या आहारविहारसे दूषित हुए रसधातुमें प्राप्त होकर जठराग्निको बाहर निकालकर ज्वरदायक होते हैं ॥ ३ ॥

अथ ज्वरका पूर्वरूप कहते हैं.

श्रमोऽरतिर्विवर्णत्वं वैरस्यं नयनप्लवः ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

इच्छाद्वेषो मुहुश्चापि शीतवातातपादिषु ॥ ४ ॥ जृंभांगमर्दो गुरुता रोमहर्षोऽरुचिस्तमः ॥ अप्रहर्षश्च शीतं च भवंत्युत्पत्स्यति ज्वरे ॥ ५ ॥ सामान्यतो विशेषात्तु जृंभात्यर्थं समीरणात् ॥ पित्तान्नयनयोर्दाहः कफान्नान्नाभिनंदनम् ॥ ६ ॥

विना परिश्रम किये थकावट मालूम होवे, सम्पूर्ण वस्तुमात्रमें प्रीति न हो, शरीरका रंग औरका और हो जावे, मुखका स्वाद नष्ट होता है, नेत्रोंमें आंसू भरि २ आना, शीत वायु और घाम इनके सेवनमें वारंवार प्रीति और वैर होना, कभी ठंड अच्छी मालूम पडे कभी ठंड बुरी मालूम पडे, जंभाई आवे, हडफूटन, अंगडाई, पीडा, शरीरका भारी होना, रोमांच होना, अन्नपर अरुचि होना, उबकाई, नेत्रोंके आगे अंधेरा आना, मनमें उदासी, शीतका लगना, किसी कामके करनेको भी नहीं चाहता है, न कहीं मन लगता है, मस्तकमें घबराहट और गरमी मालूम होती है ये लक्षण ज्वरकी उत्पत्तिसमयपर होते हैं. और विशेषकरके वातज्वरके पूर्वरूपमें अतिशय जंभाई, पित्तसे नेत्रदाह और कफसे अन्नपर अरुचि होवी है ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अथ ज्वरका सामान्यरूप.

स्वेदावरोधः संताप सर्वांगग्रहणं तथा॥
युगपद्यत्र रोगे तु स ज्वरो व्यप-
दिश्यते ॥ ७॥

जिस रोगमें पसीनेका अवरोध, शरीरमें संताप, सब अंगोंका जकड जाना जिसमें ये लक्षण एकवारही हों उसको ज्वर जानो ॥ ७ ॥

डाक्टरीमतसे कहते हैं.

डाक्टरीभाषामें ज्वरका नाम फीवर है, सो कई प्रकारके होते हैं. उन सम्पूर्णको हम न्यारे २ आगे कहेंगे अगर किसी अजूयासाख्तमें सोजिश होनेसे या सद्मा पहुँचनेसे अर्थात् देहकी बनावटमें सूजन होने तथा कष्ट होनेसे जो ज्वर उत्पन्न हो तो उसका नाम सैकन्डरी तथा स्मपिटोमैटिक फीवर तथा पाईरेक्सिया अर्थात् अलामती बुखार कहते हैं. जैसे जातउलरियाका बुखार और इसके विपरीत (उलटे) जब किसी दोषकरके अर्थात् जब समियत (विष) नामालूमा बदनमें पैवस्त (प्रवेश) होनेसे ज्वर हो तौ उस ज्वरको प्राईमरी तथा एड्योपेथिक तथा इस्पेफिक फीवर अर्थात् खास बुखार कहते हैं. सो लौकिकमें ज्वर प्रसिद्ध है जिसके रूपके लक्षण हम कहते हैं.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लक्षण.

सम्पूर्ण ज्वरोंमें अवश्य ऐसे लक्षण होते हैं जिनको कहते हैं.

१ देहमें गरमी अधिक होती है जिसको हरारत कहते हैं. यह गरमी रोगीको तौ आपही विदित होती है और मनुष्यको रोगीकी देह रस्य रस (छूनेसे) करनेसे जान पडती है और थरमामेटर (जो एक यंत्र पाराभरा हुआ और दरजे लिखे हुए कांचका होता है) रोगीकी बगलमें दबा देने और देहके भागोंपर लगानेसे गरमीकी कम और अधिकताकी दशा भली प्रकारसे विदित हो जाती है. यह गरमी बहुतसे ज्वरोंमें तौ एक सौ आठ दर्जेसे लेकर पंद्रह दर्जेतक हो जाती है.

२ मामूलीरतूवातकी तराशमें फर्क हो जाता है. रक्तसे पतला भाग कम निकलता है अर्थात् खूनसे सैयाल हिस्सा कम खारज होता है, जिस्मकी कल-साख्तमें बनस्पत तन्दुरस्तीके खराबी आइद होती है अर्थात् देहकी सम्पूर्ण बनावटोंमें आरोग्यदशासे इस दशामें बुराई प्राप्त होती है. उन आलातकाफेल जिनसे रतूबत तराशा पाती हैं कम हो जाता है अर्थात् रसधा-तुओंका कार्य्य कम हो जाता है और रतूवात मजकू-रको माहीयतमेंभी फर्क पड़ जाता है अर्थात् रसधातु-ओंके लक्षणों (व्यवस्थाओं) मेंभी फर्क पड जाता है.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

जिनके कारणसे यह दशा हो जाती है अर्थात् ऐसे लक्षण होते हैं कि देह खुरदरी, जिह्वा मलीन (मैली) और खुश्क (रूखी) वमन, तृषा अधिक, भूक कम, गसयान (उबकाई), अजीर्ण, मूत्र कम और तेजाबी दशा और लालरंगका होता है जिसमें अनोखी दुर्गंध आतीहै.

३ निजामशिरयानीमें फर्क पड जाता है यानी रुधिरमें रालकिलाइन साल्ट (क्षार), लाल दाने अलव्यूमन कम और श्वेत दाने अधिक हो जाते हैं और सिरममें खार (क्षार) की दशा कम हो जाती है, नाडी शीघ्रगमनी और भरी हुई होती है. कभी एक सौ चालीस वार फुदकनेसे भी अधिक फडकती है. शदीद बुखार जब मजमन हो जावे अर्थात तीव्रज्वर जब प्राचीन पड़ जावे तब तो नाडी अधिक महीन, बलहीन बेप्रबंध और कभी ठहर ठहर कर चलती है.

४ निजामातनफुस (श्वास) में फर्क हो जाता है रोगी श्वास शीघ्र शीघ्र लेता है. यथा नाडी जितनी शीघ्र चले उसी हिसाबसे श्वासका गमन भी बढ जाता है.

५ निजामअसाबीमें भी फर्क पड़ जाता है.आरम्भ रोगमें शीत लगता है तथा कांपकर ज्वर चढता है. सम्पूर्ण देहमें दर्द और थकावट जब रोग बढता है तब सम्पूर्ण कामोंसे जी हट जाता है, सुस्ती, बेचैनी, निद्राका नाश, झपनी, मस्तकपीडा, कभी कभी रात्रि-

समयमें बकवाद, बलका नष्ट, सामार्थ्यका न रहना, तामसी निद्रा, संज्ञाका नाश इत्यादि लक्षण और उपद्रव हो जाते हैं.

६ अरुचि बदहजमी भी हो जाती है,विशेष ज्वरोंके निदानमें हम आगे कहेंगे. ज्वरोंके चार भेद किये गये हैं अर्थात् ज्वरके चार प्रकार किये गये हैं जिनको हम इस भांतिसे कहते हैं.

१ कंटीन्यूड फीवर (दायमीबुखार) इसमें गरमी देहमें एकदमसे अधिक बढ जाती है और कुछ काल पीछे यह गरमी धीरे धीरे कम हो जाती है.

२ रीमीटंट फीवर यह ज्वर गरमदेशोंमें उत्पन्न होता है और चौवीस घंटेके भीतर बढता घटता रहता है परंतु बिलकुल नहीं उतरता है अर्थात् सम्पूर्ण नहीं उतरता.

३ इन्टरमेटेंट फीवर (बारीक ज्वर) यह ज्वर कुछ काल त्यागकर चढता है और उतर जाता है यथा तपलर्जा (कांपकर ज्वर आता है) इसके उतरनेके पश्चात् फिर किसी प्रकारका कष्ट नहीं रहता है.

४ रिलैपसिंग फीवर (दूबाराभी फिर चढ आनेवाले ज्वर) यह ज्वर थोडे दिन एकसरीखा रहकर फिर जाता रहता है और यह निश्चय हो जाता है कि जब ज्वर नष्ट हो गया और आरोग्य हो गया परंतु कुछ दिनों पीछे ज्योंका त्यों बडे वेगके साथसे आ जाता है.इसी भांतिसे

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यह ज्वर कितनीही वार नष्ट हो जाता है और फिर आ जाता है और फिर नष्ट हो जाता है. योंही बहुत कालतक प्राणोंको कष्ट देता रहता है.

तीव्रता और अल्पदशाके कारण करके चार भेद हैं एक सिंपल फीवर (अल्प), दूसरा शोजसी बुखार, तीसरा हायपर पाइरक्सल फीवर और चौथा कमजोरीका बुखार सो हम कहते हैं.

१ सिंपर फीवर, जैसा कि फैवरीक्यूला.

२ सोजशी बुखार, जो देहके किसी भागमें सूजनेके कारण करके उत्पन्न होवे.

३ हायपरपाइरक्सल फीवर, इस ज्वरमें गरमी एकवारही १०७ दर्जेंसे एक सौ पंद्रह दर्जे तथा अधिक दर्जोंतक बढ जाती है. विशेष आगे कहेंगे.

४ कमजोरीका ज्वर, इसके कई भेद हैं.

१ इस्थेनक तथा अडेनमक फीवर, इसमें बल नष्ट होकर रोगीकी सामर्थ्य भी जाती है, नाडी महीन बलरहित, तृषा, जीभपर थोडा रूखापन, कभी थोडा बकवाद भी करने लगता है.

२ टाईफाईन्ड तथा एटेक्सक फीवर, इसमें रोगी असामर्थ्य हो जाता है. विशेष लक्षण इसके निदानमें आगे कहेंगे.

३ मिलगनेट फीवर, यह कठिन और घोर व्याधि

Indira Gandhi National Centre for the Arts

है इसमें सिलयानखून होता है या चर्मदेहपर लाल फुंसियां उत्पन्न होती हैं. इस ज्वरको पियूटर्ड तथा सिपेटिक फीवर कहते हैं.

४ हैकटिक फीवर, यह ज्वर देहमें अधिक पीप पडने का किसी भांतिकी रतूबतके अधिक निकलनेसे उत्पन्न होता है और यह ज्वर इंटरमेटेंट कभी रीमीटेंट हो जाता है. धीरे धीरे चढता है, प्रारम्भ रोगमें संध्यासमयपर गरमीका वेग कुछ अधिक हो जाता है, नाडी भी तीव्र चलती है, परंतु अन्तसमयपर ज्वर कमं किंवा अधिक हर समय मौजूद रहता है. संध्यासमय ज्वरका वेग अधिक हो जाता है. ज्वरके प्रारम्भमें किंचित् जाडा लगकर तथा विना जाडा लगे उत्पन्न होता है और आधी रात्रितक चढा रहता है फिर पसीनां आता है फिर गरमी लगती है. हथेली और तलुएमें जलन होने लगती है,कपोलोंपर फुंसियां उत्पन्न होती हैं जिसको हिकटिक फिलशन कहते हैं.विशेष आगे कहेंगे.

ये सम्पूर्ण ज्वर दो प्रकारके हैं एक तौ मुतअद्दी वे ज्वर हैं जिन्होंमें विषका प्रवेश देहमें होकर असर होनेसे उत्पन्न होते हैं और दूसरे गैर मुतअद्दी ये वे ज्वर हैं कि विषका प्रवेश देहमें हो जावे और मालूम न पडे फिर ज्वर उत्पन्न हो जावे जिन्होंको हम पृथक् पृथक् कहते हैं.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मुतअद्दी.

ये ज्वर उस प्रकारके हैं कि जिन्होंकी उत्पत्तिका हेतु देहमें विषके प्रवेश करनेसे है और ऐसे ज्वरसे पीडित रोगीका विष पवनद्वारा दूसरे मनुष्योंकी देहमें जो प्रवेश कर जावे तौ उन्होंके भी इसी प्रकारके ज्वर उत्पन्न हो जाते हैं. इस भांतिके ज्वरोंका नाम जयेमोटिक फीवरभी कहते हैं अर्थात् खमीरदार जो ववाइन (मरीके समान) देश ग्राम इत्यादि स्थानमें फैल जाता है. विशेषकरके अकालके पडनेसे और स्थानोंको मलीन रखनेसे ये उत्पन्न हो जाते हैं. कदापि इस प्रकारके ज्वरोंसे पीडित मनुष्योंकी देहपर किस भांतिके दाने फुंसियां उत्पन्न हो जावें तौ अक्सथिमेटा तथा अक्सथीमैंटिक किंवा आरपेटियू फीवर नामसे प्रसिद्ध करेंगे. ये ज्वर नियत की हुई मर्यादापर त्यागेत हैं अर्थात् जाते हैं और इन्होंके मोक्षसमयतक चार दरजे होते हैं अर्थात् चार प्रकारके लक्षण और कर्म होते हैं जिन्होंको हम न्यारे न्यारे कहते हैं.

१ प्रकार दरजा (प्रकार) विषके देहमें प्रवेश करनेके असर करनेसे और लक्षणोंके विदित होनेपर्यंतका है. जिसको प्रीओड आफ लैटनी किंवा प्रीओड आप इनक्यूवेशन (असेंमादूदा) कहते हैं.इस दर्जेमें अकसर (बहुधा) कोई लक्षण विदित नहीं होते हैं कभी विदित होतेभी हैं तौ कोई निश्चय तथा खास पहँचानका चिह्न

तथा लक्षण विदित नहीं होता. इस प्रकारके ज्वरोंके सबही लक्षण एकसे मिले हुए होते हैं जैसे काहली, सुस्ती, आलस्य, भूँखकी कम माभूली, मर्यादाको त्यागकर दस्तोंका आना ये सम्पूर्ण ज्वरोंमेंही लक्षण होतेहैं.

२ दूसरा दर्जा वह है जिसका नाम इनवीसिरीन इस्टेज है अर्थात् हमले (वेग) का दरजा, इस दर्जेमें जाडा लगता है और गरमी देहमें बढती है और ज्वरके दूसरे लक्षण विदित होते हैं.

३ दरजेका नाम इरूपैटेव इस्टेज कहते हैं. जो सब्रूरदार बुखार है तौ देहपर दाने उत्पन्न होवेंगे या ज्वरका तीव्र वेग होगा.

४ दरजेका नाम डिकलाइन इस्टेज कहते हैं अर्थात ज्वरके मोक्ष (नष्ट) होनेका दरजा. इसमें पसीना आनकर किंवा और किसी कारणकरके ज्वर उतर जाता है इस प्रकारके ज्वर बवाई दूसरे छूतदार होते हैं. छूतरोगीकी देहसे स्पर्श होनेसे लगे तौ इनफैक्सिस कहते हैं और जो विना जाने छूतका असर हो तौ फोमाइटिस कहते हैं. ये ज्वर एकवार उत्पन्न होते हैं किंवा दुबाराभी आते हैं.

गैरमुतअद्दी.

ये उस प्रकारके ज्वर हैं कि जो विना जाने विषका प्रवेश देहमें होनेके हेतुसे उत्पन्न हो जाते हैं और एक मनुष्यसे दूसरे मनुष्यको कुछ असर नहीं जैसा

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तपलर्जा (शीत लगकर कांपकर ज्वर आता है) इस प्रकारके ज्वर फैल जाया करते हैं, इसलिये इन्होंके तीन भेद करके समझाते हैं.

१ इन्डेमक उन रोगोंको कहते हैं जो एक ग्राम तथा शहर तथा देशमें हरसमयके लिये निवास पा जाते हैं किंवा थोडे बहुत तौ उन स्थानोंमें उत्पत्ति समाप्ति रहाही करती है.जैसे कलकत्तेमें हैजा रहाआता है और मिश्रके देशमें पिलेग (ताऊन) सदा रहा आता है और रासियाई देशोंमें जगह२ ताऊन रहा आता है.

२ अपेडैमक उन रोगोंको कहते हैं जो एकदमसे बहुतसे मनुष्योंमें उत्पन्न होवें और चारों ओरको फैल जाते हैं और बहुतसे मनुष्योंके प्राण नाश करते हैं.

३ इसपोण्डक ये वे रोग हैं कि जिनमें एक दो मनुष्य पीडित होते हैं.

इति श्रीमन्माथुरकुलोद्भवचातुर्वेदीयशंकरलालजीमथुरा-
निवासी तस्यात्मजचौबेक्याखूबरामप्रसादविरचिते
ज्वरतिमिरनाशके द्वितीय प्रकरणम् ॥ २ ॥

अथ तृतीयं प्रकरणम्.

ज्वरोंके उपचार और लंघनादि.

**ज्वरस्य पूर्वरूपे तु वर्तमाने सुबुद्धि-
मान् ॥ पायथेत घृतं स्वच्छं ततः स**

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लभते सुखम् ॥ १ ॥ विधिर्मारुतजे चैष पैत्तिके तु विरेचनम् ॥ मृदु प्रच्छर्दनं तद्वत्कफजे हि विधीयते ॥ सर्वं द्विदोषजेषूक्तं यथादोषं विकल्पयेत् ॥ २ ॥

ज्वरके पूर्वरूपमें जो वात प्रधान होवे तो घृतपान कराना, पित्तप्रधानमें मृदु रेचन, कफप्रधानमें हलका वमन, द्विद्वोष और त्रिदोषमें निश्चयकरके ऊपर कहे हुए दो किंवा तीनों उपाय यथायोग्य करना ॥ १ ॥ २ ॥

अस्नेहनीयोऽशोध्यश्च संयोज्यो लंघनादिना ॥ रूपप्राग्रूपयोर्विद्यान्नानात्वं वह्निधूपवत् ॥ ३ ॥ प्रव्यक्तरूपेषु हितमेकांतेनापतर्पणम् ॥ आमाशयस्थे दोषे तु सोत्क्लेशे वमनं परम् ॥ ॥ ४ ॥ आनद्धस्तिमितैर्दोषैर्यावंतः कालमातुरः ॥ कुर्यादनशनं तावत्ततः संसर्गमाचरेत् ॥ ५ ॥

जो रोगी स्नेहपानके और वमन विरेचनादिके योग्य न होय उसको लंघनादिक कराना, रूप और पूर्वरूपमें अग्नि और धुआंकी तरह नानाप्रकार देखना चाहिये, जब ज्वरका रूप प्रगट होवे तब लंघनादिक करना

हित होता है. जो आमाशयमें दोष होवे और मतिलाई (जी मचलाता हो) तौ वमन कराना हित है. जहांतक वातपुरीषका अवरोध और दोष प्रबल होय तहांतक इनसे व्याकुल रोगी लंघन करे, जिस पीछे मिश्रित उपाय करे ॥ ३–५ ॥

न लंघयेन्मारुतजे क्षयजे मानसे तथा ॥ ऊर्ध्वमारुततृष्णाक्षुन्मुखशोषश्रमान्वितैः ॥ न कार्यं गर्भिणीवृद्धबालदुर्बलभीरुभिः ॥ ६ ॥

वातज्वर, क्षयजन्य ज्वर, मानसज्वर, ऊर्ध्ववात रोगी तथा तृषा, क्षुधा, मुखशोष और श्रमयुक्त पुरुष तथा गर्भिणी, वृद्ध, बालक, दुर्बल और भययुक्त ऐसे प्राणियोंको लंघन न करावे ॥ ६ ॥

अनवस्थितदोषाग्नेर्लंघनं दोषपाचनम् ॥ ज्वरघ्नदीपनं कांक्षारुचिलाघवकारकम् ॥ ७ ॥ सृष्टमारुतविण्मूत्रं क्षुत्पिपासाऽसहं लघुम् ॥ प्रसन्नात्मेंद्रियं क्षामं नरं विद्यात्सुलंघितम् ॥ ॥ ८ ॥ बलक्षयतृषाशोषतंद्रानिद्राभ्रमक्लमाः ॥ उपद्रवाश्च श्वासाद्याः संभवंत्यतिलंघनात् ॥ ९ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

चरकनेभी ऐसा कहा है कि जिसके वातादि दोष और जठराग्नि यथास्थित नहीं है उनके दोषोंका पकानेवाला लंघन है और ज्वरघ्न अग्निदीपन तथा अन्नकांक्षा रुचि और शरीरलघुताका करनेवाला है. अब सम्यक् लंघन किये हुए मनुष्यके लक्षण कहते हैं. जिसका अधोवायु डकार तथा मल और मूत्र खुलासा होवे तथा क्षुधातृषाको न सहन कर सके और शरीर हलका होवे मन और इंद्रियां प्रसन्न होवें और आप अशक्त हुआ होवे उसको जानना कि इसका लंघन हो चुका. अब अतिलंघनके उपद्रव कहते हैं. अतिलंघनसे बलका नाश, तृषा, शोष, तंद्रा, निद्रा, भ्रम, ग्लानि और श्वास इत्यादिक औरभी उपद्रव होते हैं इसलिये अतिलंघन न करावे ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

डाक्टरीमतके अनुसार उपचार.

ज्वरकी गरमीको कम करना इसके लिये शरदी पहुँचाते हैं और भी यत्न करते हैं. शीतलपानीसे छींटा देना तथा मस्तकपर टोंटीदार पात्रमें पानी भरकर ऊँचेसे तर्डा देवे, शीतलपानीसे स्नान करावे, बर्फ थैलीमें रखकर देहपर फेरना, टप या बडी नादमें गुनगुना (शीरगरम) पानी भरकर आधे घंटेसे एक घंटेपर्यंत रोगीको बैठावे और धीरे धीरे उस नादमें शीतल जल मिलाते रहे. जब रोगीको ठंढ मालूम होने

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लगे तब नांदमेंसे रोगीको उठाकर देहको पोंछ डालें इस प्रकारके यत्नोंकरके गरमी कम होकर ज्वरका वेग घट जाता है. गरम बोतल देहपर फेरनेसे पसीना आ जाता है और गरमीकी शांति करनेको एकोनाइट. ड-जीटल्स ब्रांडी, टारटिरेक एसिड, कोकनाइन अधिक मात्रामें हित है. तथा ससेनसल्क एसिड, एन्टीफेब्रिन, एन्टीपाइरन केरिन, थेलन इत्यादि काममें लाते हैं. कोई एक एक ड्राम सलफियूरिक एसिड दो दो तथा तीन तीन घंटेके अन्तरसे देना हित है और मामूली रतूवात-को असली हालतपर रखना जैसे कि जब देहके चर्मका कार्य्य कम हो जावे तौ डाईफारेटिक (स्वेदन) करे और गुरदेके लिये डायोरेटिक (मूत्रला निवाली) औषध देवे और आमाशयमें दोष हो और ईमायमें दोष होकर कार्य्य उनका कम हो गया हो तौ एमेटिक (वमन करा-नेवाली वामक) देवे और कथारटिक (दस्त लानेवाली) देवे कदापि अतीसार हो जावे तौ दस्तोंको एकदमसे बंद न करे. हलका और अल्प आहार करावे जैसे कि दूध, शोरूआ (मांसरस), वफटी, कच्चा अंडा इत्यादि जब ज्वरके प्रारंभ किंवा अन्तपर बलके नष्ट हो जानेसे कमजोरी हो तो शराब (मद्य विलायती) देनेकी जरू-रत होती है. सो आहारके समान न देवे केवल बढानेके लिये बहुतही कमदिया करे.जब इसके सेवनसे जीभ साफ

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तर हो जावे और देहकी गरमी कम होजावे और पसीना आ जावे तौ श्रेष्ठ है. ध्यान रहे कि शराब अधिक न पिलावे.जब मुखसे शराबकी गंध आने लगे तब जानो कि अब शराबका असर देहमें भले प्रकारसे हो गया और अधिक कालतक शराब न पिलावे क्योंकि अधिक कालतक शराबके पिलानेसे फिर शराब पीनेकी हैबिट (आदत) हो जाती है. कदापि मूत्रमें अलबूमन अधिक हो तौ फिर शराबका सेवन बहुत होसियारीसे करावे. बालकोंको शराबकी कमबरदास्त होती है और वृद्धोंको अवश्यही शराब देनी चाहिये. जल पवन निर्दोषित होने चाहिये. सफाई पवित्रता स्थान और रोगीकी देह की रक्षा भले प्रकारसे होना योग्य है. जिस स्थानमें रोगी रखा जावे वहां पवनका बचाव होना चाहिये और अधिक मनुष्योंको भी उस स्थानपर इकट्ठा न होना चाहिये. ज्वरमें उलटी हुआ करती है. साफ उलटी न हो तौ औषधि देकर उलटी करा देवे. जो उलटी स्वाभाविक आपही आप हो तौ भोजन न करावे केवल लघुमात्रामें मलाईकी बर्फ तथा सोडावाटर किंवा लाईमवाटर (चूनेका पानी) के साथ एक ड्राम बेफटी तथा बीफजूस मिलाकर देवे. बर्फका टुकडा मुखमें रखना और एफिरोसंगड्राफिटमें डायल्यूट हैडरोसियानक एसिड तीन बूंदसे पांच बूंदतक मिलाकरदेना हितहै.अफीम या मारफाइन

Indira Gandhi National Centre for the Arts

देवे- जब किसी तरहसे उलटी बंद न हो तौ लघुमात्रामें इस्टर क्विनाइन देवे.आमाशयके ऊपर बर्फकी थैली रखे किंवा अलसीकी पुलटिस तथा मस्टर्ड पिलास्टर(सरसों राईका फाया)रखे-इससे फायदा न हो तौ बिलास्टर लगावे(फफोला उठावे) आमाशय और इमायमें विकार हो तौ अजीर्ण हो जाता है इसलिये विलाक ड्राफट वाइट मिक्सचर सडलेज पौडर किंवा कस्टराओयल (- अरंडका तेल) और बालकोंको गिरग्रेस पौडरका सेवन हित है. कदापि दस्त होते हों तौ अफीम और अफीमकी बनी मिश्रित औषध कार्बोन्ट आफ विस्मथ, डोवर्स पौडर, कम्पौंड, काइन्यूपौडर, कम्पौडचाक पौडर, चाकमिक्सचर, टिन्चरकाटीकियू, मेदनीतजाब और ग्राही औषधी हित होती हैं. कदापि मस्तकपीडा अधिक होती हो और बराबर एकसरीखा शूल चले किंवा गनूदगी (झपनी) और बेहोशी हो तौ शीशके बालोंको मुडवा देवे किंवा कतर डाले. शीतल जल किंवा बर्फकी थैली शीशपर रखे. गद्दीपर खाली सिंगी लगावे और तरुण बलवान् मनुष्यको कनपटीपर जोक लगावे. रोगी बकवाद अधिक करता हो तौ शीतल किंवा गुनगुने पानीका शीशपर तर्डा देवे. गरदन किंवा कनपटीपर बिलास्टर लगावे(फफोला उठावे) और जो बकवाद करनेके हेतु बल नष्ट होनेसे हो तौ बलदायक

Indira Gandhi National Centre for the Arts

औषधियां देवे. नींद न आती हो बेचैनी हो तौ अफीम किंवा मारफाइनका सोल्यूशन सम्पूर्ण मात्रामें देना हित होता है. जो निद्रानाशके समय मस्तकमें शूल और अधिक बकवाद करता हो तौ अफीममें टारटरे-मेटिक किंवा इपीकाक्यूना देवे जैसा कि डबर्स पौडर हित है और कमजोरी भी हो तौ बलदायक औषधि अफीममें मिलाकर देवे लेकिन ध्यान रहे कि फैंफडे-की सूजन (निमोनियां) गुरदेके रोग झपनीकी दशामें तथा पुतलियां बहुत सुकडी हों तब अफीमं कभी न देवे. ऐसी दशामें किलोरल हैडरेट पंद्रह ग्रेनसे तीस ग्रेनतक ब्रोमाइड आफ पुटसियम किंवा एमोनि-यम टिन्चर, हाईसाइमिस पचास बूंदसे अस्सी बूंदतक टिन्चर बिलाडौना,किलोराफार्म, निपंथी इत्यादिक हित हैं. बेचैनी और बेकरारीके शांतिके अर्थ गरम पानीमें स्पंज भिजोकर देहको पोंछे जब कमजोरीके लक्षण विदित हों और रोगीकी सामर्थ्य जाती रहे तौ शराबका सेवन करे. पाचन, दीपन, हलका, अल्प आहार करावे रोगीको निद्रा आ जावे किंवा तामसी निद्रा(गफलत)हो और औषध और आहारके देनेकी आवश्यकता हो तौ रोगीको जगा देते रहें. उसके नींद भरकर सो उठ-नेका इन्तजार न करें. जब किसी कारणकरके आहार और औषधके निगलनेकी सामर्थ्य न रहे तब औषध

IGNCA RAR
ACC. No. R-306

और आहारको पिचकारीमें भरकर मुख किंवा गुदाद्वारा पेट (रेकटम) में पहुँचावे. सिंकौनाका काढा कोईनाइन, कार्बोनियट आफ एमोनियां इत्यादि औषध बलकर्त्ता देवे किंवा मेदनी तेजाब, सलफियूरिक तथा किलोरकईथर तथा किलोराफार्म, कस्तूरी, कपूर, इत्यादि देवें. कदापि मूत्र बंद हो तो कैथेटर (सलाई) से निकाल देवें. अधिक कालतक एक अंगसे पडे रहनेसेभी कष्ट होता है इसलिये करवट बदलवा दिया करें पंडे रहनेके कारणसे जो बिछौनापर लाल दाग पडजावें उसे शराब और पानीको मिलाकर वस्त्रसे धो डालें.

ज्वररोगीके जल पीनेके नियम.

अष्टमेनांशशेषेण चतुर्थेनार्धकेन वा ।
अथवा क्वथनेनैव सिद्धमुष्णोदकं वदेत् ॥ १० ॥

ज्वर रोगीको गरम जल पीनेको देवे. जलको औटाकर आठवां भाग तथा चौथाई भाग या अर्धावशेष (आधा जला) तथा उत्तमरीतिसे खूब औटा हुआ होवे ॥ १० ॥

पित्तमद्यविषोत्थेषु शीतलं तिक्तकैः शृतम् ॥ गाङ्गेयनागरोशीरपर्पटोदीच्यचन्दनैः ॥ ११ ॥ दीपनी पाचनी

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लघ्वी ज्वरार्त्तानां ज्वरापहा ॥ अन्न-
काले हिता पेया यथास्वं पाचनैः कृता १२

पित्त, मद्य और विषजनित ज्वरमें तिक्त औषधियोंके साथ औटायाहुआ पानी शीतल करके देवे. मोथा, खस, सोंठ, पित्तपापडा, नेत्रवाला, चंदन इत्यादि औषधी डालकर औटावे ॥ ११ ॥ १२ ॥

दीपनं कफविच्छेदि पित्तवातानुलोम-
नम् ॥ कफवातज्वरार्तेभ्यो हितमु-
ष्णांबु तृट्छिदम् ॥ १३ ॥ तद्धि मार्द-
वकृद्दोषस्रोतसां शीतमन्यथा ॥ सेव्य-
मानेन तोयेन ज्वरः शीतेन वर्द्धते ॥
पित्तमद्यविषोत्थेषु शीतलं तिक्तकैः
शृतम् ॥ १४ ॥

उष्ण जल यह जठराग्निदीपक, कफनाशक और पित्त तथा वातको यथास्थित करनेवाला है. सो जल कफ और वातज्वरवालेको हितहै और तृषाको दूर करनेवाला है. लोई जल इंद्रियोंकी कोमलताको करनेवाला है और शीतल जलको इससे उलटा जानना अर्थात् जिस जगह उष्ण जल गुण करता है वहांपर शीतल जल अवगुण करता है. शीतल जल पीनेसे ज्वर बढता है तथा पित्तविकार, मद्यविकार और विषविकार इन्होंमें तौ

Indira Gandhi National Centre for the Arts

शीतलही जल पिलावे; परंतु तिक्त औषध डालकर गरम करके फिर शीतल करके पिलावे ॥ १३ ॥१४॥

डाक्टरीमतके अनुसार जल पीनेके नियम.

डाक्टरीमतमें ज्वरसे पीडित रोगीको जल पीनेके लिये ऐसा लिखा है कि तृषाकी शांतिके लिये शीतल जल, बर्फ, मलाईकी बर्फ, सोडावाटर (सज्जीके क्षारका बना हुआ पानी),आशजौ (वारलीवाटर) जो जौको भिगोकर बनाते हैं, टूस्टवाटर, लैमूनेट (सज्जीका क्षार और नींबूका क्षार और मिश्री डालकर बनाते हैं), इमलीका पना, किलोरेट आफ पुटासका सोल्यूशन एक ड्राम एक पाइंटका बना हुआ तथा डाइमलोट हैडरोकिलोरक एसिड एक ड्राम एक पाइंटका बना हुआ अंगूर, नारंगी, ईखकी गंडेलियां, आलुबुखारा मुखमें रखना और इस्टूमेलेन्ट (बलकर्ता) वस्तु देना हो तौ श्यामपीन (एक प्रकारकी मद्य है) सोडावाटर मिलाकर देना अधिक गुणदायक होती है.

टूस्टवाटरके बनानेकी विधि.

डबल रोटीको तराशकर (तोडकर) गरम तवेपर खूब लाल करे, जब जलने लगे तौ उसको शीतल जलमें भिगोदेवे फिर आवजुलाल लेकर छान लेवे अर्थात् उस पानीको छान लेवे इसी छने हुए पानीका नाम टूस्ट वाटर है.

सोडावाटर बनानेकी विधि.

एक बोतल खाली सोडावाटरकी लेकर उसमें इतना पानी भरे कि वह छः अंगुल खाली रहे फिर उस बोतल में वाईकार्बोन्ट आफ सोडा वीस ग्रेन डाल देवे फिर थोडे काल पीछे टारटिर्क एसिड वीस ग्रेन उसी बोतलमें डालकर बहुत जल्दी उसमें काग लगाकर डोरी तथा तारसे उस डाटको बांधकर छोडे यही सोडावाटर है.

आवमुकत्तर (टबकाया हुआ शुद्ध पानी).

आव नाम पानीका है मुकत्तर नाम टपकाना अर्थात् बूंद बूंद करके जो टपकाकर पानी तैयार किया जावे यही पानीके शुद्ध करनेकी रीति है और यही शुद्ध किया हुआ पानी औषधियोंमें डाला जाता है और नित्यप्रति पियाभी जाता है. जिसके टपकानेकी विधि इस प्रकारसे है.एक टिकटी काष्ठकी चार घरोंकी बनावे अर्थात् चार बैठक एकके नीचे एककी तैयार करे और नीचेके घरमें एक मिट्टीका घट खाली रखे और उसके मुखपर वस्त्र बांध देवे. फिर उससे ऊपर दूसरा घट रखे फिर उससे ऊपर तीसरा घडा रख फिर उससे ऊपर चौथा घडा रखे और इन तीनों ऊपरवाले घड़ोंकी पेंदीमें छिद्र करके रुईकी बत्ती लगा देवे और सबसे ऊपरके चौथे घडेमें लकडीका कोयला डाले और उसके नीचेके तीसरे घडेमें वालू रेता डाल देवे फिर

Indira Gandhi National Centre for the Arts

इससे नीचेके दूसरे घडेमें कंकड डाले फिर पानीको अग्निपर गरम करके सबसे ऊपरवाले चौथे घडेमें भर देवे कि ऊपर के घडे कोयलावालेसे पानी टपकटपक कर रेतावालेमें आवेगा और रेतावालेसे टपककर कंकडवालेमें आवेगा और कंकडवालेसे टपककर खाली घडेमें आवेगा वही पानी काममें लावे. विदित रहे कि इन कंकड रेता कोयलाको सप्ताह तथा पंद्रह दिन पीछे बदल दिया करे और उन घड़ोंको भी भले प्रकारसे धो डाला करे और कोयला बडे बडे साबत डाला करे टुकडे तथा पिसे हुए न डाले.

बुझा हुआ पानी बनाना.

. जलती हुई लकडी अथवा गरम करके ईंट तथा चांदी तथा सोना तथा लोहेको शीतल जलमें बुझा देनेसे बुझा हुआ शुद्ध पानी पीनेके योग्य होजाता है.

रात्रिसमयके जलपानके गुण.

श्लेष्मामवातमेदोघ्नं बस्तिशोधनदीपनम् ॥ कासश्वासज्वरहरं पीतमुष्णोदकं निशि ॥ १९ ॥

जो गरम जल कहा गया है उसको रात्रिसमय पीनेसे कफ, आमवात, मेद, खांसी, श्वास, ज्वर नष्ट होते हैं ॥ १९ ॥

उशीरपर्पटोदीच्यमुस्तनागरचंदनैः ॥ जलं शृतं हिमं पेयं पिपासाज्वरनाशनम् ॥ १६ ॥ क्षुण्णं द्रव्यफलं साध्यं चतुःषष्टिपलेऽम्बुनि ॥ अधशिष्ट च तद्देयं पाने भक्तादिसनिधौ ॥ १७ ॥

खस, पित्तपापडा, नेत्रवाला, नागरमोथा,सोंठ,चंदन इन छः औषधियोंको मिलाकर चार तोले लेकर जौकूट करके दो सौ छप्पन तोले पानीमें डालकर औटावे जब आधा जलकर रह जावे तब छान लेवे और शीतल होनेपर जिस ज्वरमें प्यास अधिक हो तो इसमेंसे थोडा थोडा पिलावे. प्यास और ज्वर दोनों नष्ट हो जावेंगे और कहते हैं कि एक पल औषधको चौसठ पल पानीमें डालकर औटावे जब आधा जल जावे तब छानकर शीतल करके जब जब प्यास लगे पिलावे और भोजनके समय थोडा पिलावे ॥ १६ ॥ १७ ॥

ज्वरोंमें औषध देनेका समय और उपचार.

मृदौ ज्वरे लघौ देहे प्रचलेषु मलेषु च॥ पक्कं दोषं विजानीयाज्ज्वरे देयं तदौषधम् ॥१८॥ हृदयोद्वेष्टनं तंद्रा लालास्रुतिररोचकः ॥ दोषाप्रवृत्तिरालस्यं वि-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

बंधो बहुमूत्रता ॥ १९ ॥ गुरूदरत्वम-
स्वेदो न पक्तिः शकृतोऽरतिः ॥ स्वापः
स्तंभो गुरुत्वं च गात्राणां वह्निमार्द-
वम् ॥२०॥ मुखस्याशुद्धिरग्लानिः प्र-
संगी बलवान् ज्वरः ॥ लिंगैरेभिर्विजा-
नीयाज्ज्वरमाम विचक्षणः ॥२१॥ स-
प्तरात्रात्परं केचिन्मन्यन्ते देयमौष-
धम् ॥ दशरात्रात्परं केचिद्दातव्यमिति-
निश्चिताः ॥२२॥ वातिके सप्त रात्राणि
दशरात्राणि पैत्तिके ॥ श्लैष्मिके द्वाद-
शाहानि ज्वरपक्का स्थितिःस्मृता॥२३॥
पैत्तिके वा ज्वरे देयमल्पकालसमु-
त्थिते ॥ अचिरं ज्वरितस्यापि देयं
स्याद्दोषपाकतः ॥ २४ ॥ भेषजं ह्याम-
दोषस्य भूयो जनयति ज्वरम् ॥
शोधनं शमनीयं तु करोति विषम-
ज्वरम् ॥ २५ ॥ च्यवमानं ज्वरोत्क्लि-
ष्टमुपेक्षेत मलं सदा ॥ अतिप्रवर्तमानं
च साधयेदतिसारवत् ॥ २६ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अब ज्वरोंमें औषध देनेका काल कहत हैं.जब ज्वर नरम होय और शरीर हलका होय तथा वातादिक दोष यथास्थित हुए होंय तब दोष पका जानो, जब औषध देना.ऐसा भी कहा है कि वातादिक दोष और प्रकृतियें जैसे ज्वरकी प्रबलतामें थे उससे जब उलटे होंय तब दोष पका ऐसा जानना और औषध देना. जिस ज्वरमें हृदय घिरा हुआ मालूम होय और नेत्रोंपर झपकी, मुखसे लार गिरना, अन्नपर अरुचि, दोषोंकी आप आपके कार्योंमें अप्रवृत्ति, आलस, मलका अवरोध, मूत्रकी अधिकता, पेट भारी, पसीना न आना, मलका पाक न होना, अचैन, निद्रा, गात्रोंका स्तंभ, जडत्व, अग्नि मंद, मुखकी अशुद्धता, ग्लानिका अभाव तथा ज्वर देहमें व्याप्त और बलवान् होय इत्यादि चिन्होंकरके यह जानना कि ज्वर पका नहीं. यहां कोई ऐसाभी कहते हैं कि सात दिन पीछे औषध देना और कोई कहते हैं कि दस दिन पीछे औषध देना तहां कहा है कि वातज्वर सात रात्रिमें, पित्तज्वर दशरात्रिमें और कफज्वर बारह रात्रिमें पकते हैं. कोई कहते हैं कि जो पित्तज्वर अल्प कालसे उत्पन्न होय उसमें दस दिनसे औषध देना. जो बहुतकालका ज्वर है उसमें दोष पकेपर औषध देना, दोष पके विना औषधके देनेसे ज्वर बढता है और जो कच्चे ज्वरमें शोधन अथवा

Indira Gandhi National Centre for the Arts

शमनीय औषध दी तौ ज्वरको विषम करता है.ज्वरका निकला हुआ जो मल गिरने लगे तौ उसका प्रबंध करना, जो अतिप्रवृत्ति होय तौ अतिसारवत् औषध करना ॥ १८–२६ ॥

यदा कोष्ठानुगाः पक्का विबद्धाः स्रोतसां मलाः ॥ अचिरज्वरितस्यापि तदा दद्याद्विरेचनम् ॥ २७ ॥ पक्को ह्यनिर्गतो दोषो देहे तिष्ठन् महात्ययम् ॥ विषमं वा ज्वरं कुर्याद्बलव्यापदमेव च ॥ २८ ॥ तस्मान्निर्हरणं कार्यं दोषाणां वमनादिभिः ॥ प्राक्कर्म वमनं चास्य कार्यमास्थापनं तथा ॥ २९ ॥ विरेचनं तथा कुर्याच्छिरसश्च विरेचनम्॥क्रमेण बलिने देयं वमनं श्लैष्मिके ज्वरे ॥ ३० ॥ पित्तप्राये विरेकस्तु कार्यः प्रशिथिलाशये ॥ सरुजेऽनिलजे कार्यं सोदावर्ते निरूहणम् ॥ ३१ ॥ कटीपृष्ठग्रहार्तस्य दीप्ताग्नेरनुवासनम् ॥ शिरोगौरवशूलघ्नमिन्द्रियप्रति-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

बोधनम् ॥ ३२ ॥ कफाभिपन्ने शिरसि
कार्यमूर्ध्वविरेचनम् ॥ दुर्बलस्य समा-
ध्मातमुदरं सरुजं दिहेत् ॥ ३३ ॥
दारुहेमवतीकुष्ठाशताह्वाहिंगुसैंधवैः ॥
अम्लपिष्टैः सुखोष्णैश्च पवने तूर्ध्वमा-
गते ॥ ३४ ॥

जब ज्वरको बहुत दिन व्यतीत हो गये होवें और दोषवाहिनी नाडियोंके मल कोठेमें प्राप्त होके बंधि गये होवें तब रेचन देना, जो मल पका हुआ न निकला और वह दोषयुक्त देहमें रहा तौ महाअनर्थ करता है अथवा विषमज्वर किंवा बलका नाश करता है इस-लिये दोषोंका वमन इत्यादिकोंकरके निकालनाही योग्य है, तहां प्रथम वमन फिर आस्थापन अर्थात् निरूहबस्ति (जो काढा और दूधयुक्त तेलकी पिच-कारी गुदामें देते हैं सो) करना फिर रेचन देना और शिरकाभी विरेचन नाकमें देते हैं सो देना,जो बलवान् रोगी होय तौ कफज्वरमें क्रमसे वमन कराना, पित्त-ज्वरमें मलाशय शिथिल होता है इसलिये रेचन देना, पीडा और उदावर्त्तसहित वातज्वरमें निरूहबस्ति करना और जो कमर तथा पीठकी पीडाकरके दुःखी होवे उसकी जठराग्नि प्रदीप्त होय तौ उसको अनुवासन

(स्नेहबस्ति) देना, जो मस्तकमें कफ अधिक होय तौ औषध सुंघाकर नासिकाके द्वारा कफ गिराना. शिरोविरेचन मस्तकका भारीपन और शूल इनका नाशक तथा श्रवणादि इंद्रियोंका प्रकाशक है. जो दुर्बल होय और उसके वायु ऊर्ध्वगामी हुआ होवे तौ देवदारू, चोख, कुष्ठ, सौंफ, हींग और सैंधानोन इनको किसी खट्टे रस (नींबू मट्ठा इत्यादि) में पीसकर पेटपर सहता सहता लेप करे॥ २७–३४॥

भोजन विषय.

रुद्धमूत्रपुरीषाय गुदे वर्तिं निधापयेत्॥ पिप्पली–पिप्पलीमूल—यवानीचव्य-साधिताम्॥ ३५॥ पाययेत यवागूं वा मारुताद्यनुलोमनीम्॥ शुद्धस्योभयतो यस्य ज्वरः शान्ति न गच्छति॥३६॥सशेषदोषरूक्षस्य तं ज्वरं सर्पिषा जयेत्॥ कृशं चैवाल्पदोषं च शमनीयैरुपाचरेत्॥ ३७॥ उपवासैर्बलस्थं तु ज्वरे सन्तर्पणोत्थिते॥ क्लिन्नां यवागूं मन्दाग्नितृषार्तं पाययेन्नरम्॥ ३८॥ सक्षौद्रमम्भसा पश्चाज्जीर्ण यूषरसौद-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

नम् ॥ उपवासश्रमकृते क्षीणे वाताधिके ज्वरे ॥ ३९ ॥ दीप्ताग्निं भोजयेत्प्राज्ञो नरं मांसरसौदनम् ॥ मुद्गयूषौदनं चापि हितं कफसमुत्थिते ॥ ४० ॥ स एव सितया युक्तः शीतः पित्तज्वरे हितः ॥ दाडिमामलमुद्गानां यूषश्चानिलपैत्तिके ॥ ४१ ॥ ह्रस्वमूलकयूषेण भोजयेत्कफवातिके ॥ पटोलनिम्बयूषस्तु पथ्यः पित्तकफात्मके ॥ ४२ ॥ दाहच्छर्दियुतं क्षामं निरन्नं तृष्णयार्दितम् ॥ सिताक्षौद्रयुतं लाजतर्पणं पाययेत च ॥ ४३ ॥ कफपित्तपरीतस्य ग्रीष्मेऽसृक्पित्तिनस्तथा ॥ मद्यनित्यस्य न हिता यवागूस्तमुपाचरेत् ॥ ॥ ४४ ॥ यूषैरम्लैरनम्लैर्वा जांगलैर्वा रसैर्हितैः ॥ मद्यं पुराणं मन्दाग्नेर्यवान्नोपहितं हितम् ॥ ४५ ॥ सव्योषं वितरेत्तक्रं कफारोचकपीडिते ॥ कृशोऽल्पदोषो दीनश्च तरो जीर्णज्वरार्दितः

॥ ४६ ॥ विबंधः सृष्टदोषश्च रूक्षः पित्तानिलज्वरी ॥ पिपासार्तः सदाहो वा पयसा स सुखी भवेत् ॥४७॥ तदेव तु पयः पीतं तरुणो हन्ति मानवम् ॥ सर्वज्वरेषु सप्ताहं मात्रावत् भोजनं हितम् ॥ ४८ ॥ वेगापायेऽन्यथा तद्धि ज्वरवेगाभिवर्द्धनम् ॥ ज्वरितो हित-मश्नीयाद्यद्यप्यस्यारुचिर्भवेत् ॥ ४९ ॥ अन्नकाले ह्यभुंजानः क्षीयते म्रियते-ऽथ वा ॥ गुर्वभिष्यन्द्यकाले च ज्वरी नाद्यात्कथंचन॥ ५० ॥ नतु तस्याहितं भुक्तमायुषे वा सुखाय वा ॥ सततं विषमं वापि क्षीणस्य सुचिरोत्थितम् ॥ ५१ ॥ ज्वरं संभोजनैः पथ्यैर्लघुभिः समुपाचरेत् ॥ मुद्गान्मसूरांश्चणकान् कुलत्थान् समकुष्ठकान् ॥ ५२ ॥ आ-हारकाले यूषार्थं ज्वरिताय प्रदाप-येत् ॥ लावान् कपिंजलानेणान्पृष-तान्छरभान्छशान् ॥ ५३ ॥ कालपु-

च्छान्कुरंगांश्च तथैव मृगमात्रिकान् ॥ मांसार्थं मांससात्म्यानां ज्वरितानां प्रदापयेत् ॥ ५४ ॥

जिसका मल और मूत्र रुक गया हो उसकी गुदामें पीपल, पीपलामूल, अजवायन और चव्य इनकी बत्ती करके रखना किंवा वात इत्यादिकोंको यथास्थान स्थापन करनेवाली यवागू पिलावे. जो दोनों मार्गोंसे वमन विरेचनादिकोंको करके शुद्ध भी हुआ होय और वह रूक्ष होय तथा कुछ दोष शेष रहा होवे और उसका ज्वर शान्त न हो तौ घृतपान कराकर ज्वरको शांत करे और जिसके दोष अल्प हों तथा वह कृश होय तौ उसका ज्वर शमनीय औषधोंकरके शांत करना. जो ज्वर संतर्पणसे उत्पन्न हुआ होवे और रोगी बलवान होवे तौ लंघन कराके ज्वर शांत करे. जो मंदाग्नि और तृषाकरकें पीडित होय उसको यवागू पिलावे. जो मद्यपान करता होवे और तृषा, वांति, दाह, पसीनाकरके पीडित होवे उसको धानकी लाई (खील) पानीमें तर करके सहत मिलाकर देवे और जब वह पच जावे तब यूष और मांसरसयुक्त भात खानेको देवे. जो उपवास और श्रमकरके क्षीण मनुष्यके वाताधिक ज्वर उत्पन्न हुआ होवे तथा उसकी जठराग्नि प्रदीप्त होवे तौ उसको मांसका रस और भात देवे. कफज्वरमें मूंगका

Indira Gandhi National Centre for the Arts

यूष और भात देवे. वही मूंगका यूष और भात शक्कर मिलाकर शीतल करके खिलाना पित्तज्वरमें हितकारक है. वातपित्तज्वरमें दाडिम, आंवला और मूंग इनका यूष हित है. कफवातज्वरमें लघुपंचमूलका यूष हित है. पित्तकफज्वरमें कडू परवल और नींबका यूष हित है.जो रोगी दाह और वांति करके युक्त तथा कृश और अन्न नहीं खाता होवे तथा तृषा करके पीडित होवे उसको धानकी लाई (खील) पान शक्कर सहत मिलाकर देवे. जो कफपित्तकरके पीडित हो उसको तथा ग्रीष्मऋतुमें रक्तपित्तवालेको और जो नित्य मद्यपान करता है उसको यवागू हित नहीं है. उसको अम्ल पदार्थयुक्त अथवा अनम्ल यूष किंवा हितकारक जंगली जानवरोंके मांसके रसकरके उपचार करना. जो मंदाग्नि है उसको यवके भातके संगमें पुराना मद्य हित है. जो कफ और अरुचि करके पीडित हो उसको सोंठ, मिरच, पीपलके चूर्णमें मठा मिलाकर पीलावे.जो कृश अल्पदोष करके दीन अर्थात् घबराया हुआ होवे और जीर्णज्वर करके पीडित बद्धकोष्ठ किंवा मल प्रवाहयुक्त रूखा और पित्तवातज्वरवाला तृषायुक्त और दाहयुक्त मनुष्य दूधसे सुखी होगा वही दूध तरुणज्वरमें पिया हुआ मनुष्योंके प्राणनाशक है. सर्व ज्वरोंमें सात दिनपर्यंत माफिक पथ्य भोजन कराना अन्यथा अधिक

Indira Gandhi National Centre for the Arts

भोजनसे जो ज्वरका वेग कमती भी होय तौ बढता है. ज्वरवाले रोगीको जिस अन्नपर रुचि भी न होवे और वह पथ्य हित होवे तौ उसीका सेवन करावे; कारण कि अन्न भोजनकालमें न भोजन करे तौ क्षीण होय तथा प्राणोंका नाश होवे. जहां लंघन कहा है वहांही लंघन करावे. जो पदार्थ कफकारक होवे उसको त्याग देवे और अकालमेंभी भोजन न करावे, कारण कि अहित भोजन उसके आयुष्य सुखके लिये नहीं होनेका. जो क्षीण मनुष्य होय और उसके सतत तथा विषमज्वर होय तौ हलके और पथ्य भोजनोंकरके ज्वरका शमन करना. ज्वरवाले मनुष्यको आहारके समयमें मूग, मसूर, चना, कुलथी और मोठ इनका यूष देना. जो ज्वरवाला मांसआहारी होवे तौ उसको लवा, कपिंजल, हिरण, चीता, शरभ, शशा (खरगोश), कालपुच्छ (गरगौवा), काला हिरण ऐसे औरभी मृगोंका मांस देना ॥ ३९–५४ ॥

ज्वरके पश्चात् वर्जित कर्म.

सारसक्रौंचशिखिनः कुक्कुटांस्तित्ति-
रींस्तथा ॥ गुरूष्णत्वान्न शंसंति ज्वरे
केचिच्चिकित्सकाः ॥ ५५ ॥ ज्वरिता-
नां प्रकोपं तु यदा याति समीरणः ॥

तदैतेऽपि हि शस्यंते मात्राः कालोपपादिताः ॥ ५६ ॥ परिषेकावगाहांश्च स्नेहान् संशोधनानि च ॥ स्नानाभ्यंगदिवास्वप्नशीतव्यायामयोषितः ॥५७॥ न भजेत ज्वरोत्सृष्टो यावन्नो बलवान् भवेत ॥ त्यक्तस्यापि ज्वरेणाशु दुर्बलस्याहितैर्ज्वरः ॥ ५८ ॥ प्रत्यापन्नो दहेद्देहं शुष्कं वृक्षमिवानलः ॥ तस्मात्कार्यः परीहारो ज्वरमुक्तेन देहिना ॥ ॥ ५९ ॥ यावन्न प्रकृतिस्थः स्याद्दोषतः प्राणतस्तथा॥ज्वरे प्रमोहो भवति स्वल्पैरप्यवचेष्टितैः ॥ ६० ॥ निषण्णं भोजयेत्तस्मान्मूत्रोच्चारौ च कारयेत् ॥६१॥

सारस, कुलंग, मोर, मुर्गा, तीतर ये भारी तथा उष्ण हैं; इसीसे ज्वररोगीको अपथ्य है. जब ज्वरवालेके वायुका कोप होय तब ये सारस इत्यादिक भोजनकालमें हित होते हैं.मनुष्यका ज्वर गये पीछेभी जबतक बलवान् न होवे तबतक परिषेक, अवगाह (जलमें रहना तथा डुबकी मारना). स्नेहपान और शोधन, स्नान, अभ्यंग (तेल लगाना), दिनमें सोना, शीत

पदार्थ, कसरत, परिश्रम करना और मैथुन न करे, कारण कि जिसका ज्वर गया भी है वह जो अहित कुपथ्य सेवन करे तौ फिर ज्वर आनकर उसको जला देता है.इसलिये ज्वर गये पीछे भी ज्वर जानेका उपाय करते रहना. जबतक वातादिक दोष और बल यथा-स्थित न होय तहांतक अल्प भी कुचेष्टा होनेसे मोह (चित्तकी व्याकुलता) होता है, इसलिये उसको सुखपूर्वक बैठे हुएको भोजन और मल मूत्रका त्याग करता रहे ॥ ५९-६१ ॥

अरोचके गात्रसादे वैवर्ण्यंगमला-
दिषु ॥ शांतज्वरोऽपि शोध्यः स्याद-
नुबंधभयान्नरः ॥ ६२ ॥ न जातु तर्प-
येत्प्राज्ञः सहसा ज्वरकर्षितम् ॥ तेन
संदूषितो ह्यस्य पुनरेव भवेज्ज्वरः॥ ६३ ॥

जो ज्वर शांत हुए पीछे अरुचि और अंगकी शिथिलता, अविवर्णता तथा अंगमें मलादिक हुए होंय तौ शोधन करना, कारण कि दूसरा रोगांतर न उत्पन्न होय. जो ज्वरसे दुर्बल है उसको एकाएकी पौष्टिक द्रव्य सेवन न करावे ऐसे पदार्थोंके सेवन

करनेसे जठराग्नि नष्ट होकर फिर ज्वर उत्पन्न हो जायगा ॥ ६२ ॥ ६३ ॥

इति श्रीमन्माथुरकुलोद्भवचातुर्वेदीयशंकरलालमथुरानिवासी तस्यात्मजचौबेक्याखूबरामप्रसादविरचिते ज्वरतिमिरनाशके तृतीयं प्रकरणम् ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थं प्रकरणम्.

वातज्वरनिदान.

वेपथुर्विषमो वेगः कंठोष्ठमुखशोषणम्॥ निद्रानाशः क्षयः स्तंभो गात्राणां रौक्ष्यमेव च ॥ १ ॥ शिरोहृद्गात्ररुक्व-क्त्रवैरस्यं बद्धविट्कता ॥ शूलाध्माने जृंभणं च भवत्यनिलजे ज्वरे ॥ २ ॥

शरीरमें कंप, ज्वरका वेग विषम (अर्थात् कभी कम और कभी अधिक), कंठ ओष्ठ और मुखका सूखना, निद्राका नाश, छींकका न आना, गात्रोंमें रूखापन, शिर, हृदय और सब अंगोंमें पीडा, मुखकी विरसता, मल बंधा हुआ,कष्टसे झाडा होना, पेटमें अफरा और शूल, जंभाईका आना ये वातज्वरके लक्षण हैं ॥ १ ॥ २ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वातज्वरचिकित्सा.

पिप्पलीसारिवाद्राक्षाशतपुष्पाहरेणुभिः ॥ कृतः कषायः सगुडो हन्याच्छ्वसनजं ज्वरम् ॥ ३ ॥ शृतशीतकषायं वा गुडूच्याः पेयमेव तु ॥ बलादर्भश्वदंष्ट्राणां कषायं पादशेषितम् ॥ ४ ॥ शर्कराघृतसंयुक्तं पिबेद्वातज्वरापहम् ॥ शतपुष्पा वचा कुष्ठं देवदारुहरेणुकाः ॥५॥ कुस्तुम्बुरूणि नलदं मुस्तं चैवाशु साधयेत् ॥ क्षौद्रेण सितया चापि युक्तः क्वाथोऽनिलात्मके ॥ ६ ॥ द्राक्षागुडूचीकाश्मर्य्यत्रायमाणाः ससारिवाः ॥ निःक्वाथ्य सगुडं क्वाथं पिबेद्वातकृते ज्वरे ॥ ७ ॥ गुडूच्याः स्वरसो ग्राह्यः शतावर्य्याश्च तत्समः ॥ निहन्यात्सगुडः पीतः सद्योऽनिलकृतं ज्वरम् ॥ ८ ॥ घृताभ्यङ्गस्वेदलेपानवस्थासु च योजयेत् ॥ किराताब्दामृतोदीच्यबृहतिद्वयगोक्षुरैः ॥ सस्थिराकलसीविश्वैः क्वाथो वातज्वरापहः ॥९॥

पीपल, सारिवा, दाख, सौंफ, हरेणु इन्होंका कषाय गुड मिलाकर पान करे तौ वातज्वर नाश होवे तथा गिलोयके क्वाथको शीतल करके पीवे. खैरेंटी, दाभ, गोखरू इनके क्वाथको चौथाई रहनेपर खांड और घी डालकर पीवे तथा वचा, सौंफ, कूट, देवदारु, हरेणु, धनियां, नलद (खसका भेद) इनके क्वाथमें सहत और मिश्री मिलाकर पीवे तथा दाख, खंभारी, त्राय- माण, सारिवा इन्होंके क्वाथमें गुड मिलाकर पीवे तथा गिलोयका रस निकालकर और शतावरीका रस लेकर दोनोंको मिलावे और गुड मिलाकर पीनेसे वातज्वर नष्ट होवे. जीर्णज्वरमें घीका मर्दन,स्वेद और लेप कर और चिरायता, नागरमोथा, गिलोय,सुगंधवाला,भटकटैया, वनभांटा, गोखरू, सालवन, पिठवन और सोंठ इनका काढा पीनेसे वातज्वर नष्ट होता है ॥ ३–९ ॥

पाचनरूप.

सोंठ,चिरायता, नागरमोथा, गिलोय,छोटी पीपली, और जटामांसी इनका काढा वातज्वरीको सातवे दिन देवे तो पाचन है. तथा कचूर,दारुहलदी, देवदारु, सोंठ, पुष्करमूल, बडी इलायची, गिलोय, कुटकी, पित्तपापडा, धमासा, कांकडासिंगी, चिरायता, दश- मूल इन्होंके काढेमें पीपर और सैंधानोन पीसके

Indira Gandhi National Centre for the Arts

डालकर प्रतिवासर पीनेसे सर्वज्वर नष्ट होते हैं. तथा गिलोय, सारिवा, मुनक्का,दाख, वाला, अंशुमति इनका काढा पीवे तथा डाभ, वाला, गोखरूका काढा चतुर्थांश जब रहे तब खांड घी मिलाकर पीवे तथा चिरायता, नागरमोथा, वाला, दोनों कटेली, गिलोय, गोखरू, सोंठ, शालिपर्णी, पृष्ठपर्णी, पोहकरमूल इनका क्वाथ पीवे तथा धमासा,सोंठ, कुटकी,पहाडमूल, कचूर, वांसा, अरंडकी जड इनका काढा पीवे तथा सोंठ, गिलोय,पीपलामूलका काढा पीवे. तथा देवदारु, कटेली, सोंठ, धनियां इनका काढा पीवे तथा खस्टी, पंचमूल, रास्ना, कुलथी, पुष्करमूल इन्होंका काढा पीवे तथा पीपल, लहसन, गिलोय, सोंठ,कटेली, कची निरगुंडी, नागरमोथा,चिरायता इनका काढा पीवे तथा काकोली, बडी कटेली,नागरमोथा, कुलिंजन, देवदारु, वासा, सोंठ इनके काढेमें मिश्री मिलाकर पीवे तथा सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, हल्दी, धमासा इनके काढेमें पीपलका चूर्ण डालकर पीवे. तथा चिरायता, नागरमोथा, गिलोय,वाला, दोनों कटेली,गोखरू,शालिपर्णी, पृष्टिपर्णी, सोंठ इनका काढा पीवे. तथा हरड, बहेडा, आंवला, सोंठ, मिरच, पीपल, निसोत ये सब बराबर और गुड दूनी खांड मिलाकर मोदक (लड्डु) बनाकर खावे और पांच सेर गरम जल ऊपरसे पीवे तौ पसली-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

का शूल, अरुचि, कास, वातज्वर नष्ट होते हैं. तथा पीपल,शुद्ध सिंगरफ, शुद्ध सिंगिया मोहरा इनको खरलमें पीस रत्तीभर सहतके संग देवे तौ वातज्वर नष्ट होवे. तथा मुनक्का, दाख, धमासा, छोटी हरड, चिकनी सुपारी ये सब बराबर लेकर चूर्ण कर गुड सहत मिलाकर खानेसे वातज्वर नष्ट होता है. तथा शुद्ध पारा एक तोला, सुहागा एक तोला, सोंठ दो तोले, मिरच आठ तोले, पीपल आठ तोले ये सब खरलमें पीस छान फिर खरलमें डाल और शुद्ध गंधक थोडी मिलाकर दो पहर घोटे फिर इसमेंसे एक रत्ती अदरखके रसमें मिलाकर खानेसे वातकफरोग नष्ट होते हैं. यह कल्पतरु रस है.

भैरवरस.

बच, नागविष,सोंठ,पीपल,मिरच और लाल आक लेकर अदरखके रसमें खरल करे यह वातज्वरनाशक है.

शीतमंजरी.

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध हरिताल, तामेश्वर, सुहागा ये सब बराबर लेकर खरल करे फिर करेलाके रसमें खरल करे फिर तांबेके पात्रमें रखकर और तांबेकेही पात्रसे ढककर कपडमिट्टी करके चूल्हेपर चढाकर लकडीकी अग्नि देवे. जब शुद्ध हो जाय तब शीतल कर तांबेके पात्रसे निकालकर बराबरकी काली मिरच

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मिलाकर दो रत्ती पानमें देनेसे वातज्वर, चातुर्थिक, तृतीयक, विषमज्वर ये नष्ट होते हैं.

पित्तज्वरनिदान.

वेगस्तीक्ष्णोऽतिसारश्च निद्राल्पत्वं तथा वमिः ॥ कंठोष्ठमुखनासानां पाकः स्वेदश्च जायते ॥ १० ॥ प्रलापो वक्त्रकटुता मूर्छा दाहो मदस्तृषा ॥ पीतविण्मूत्रनेत्रत्वक् पैत्तिके भ्रम एव च ॥ ११ ॥

पित्तज्वरको यूनानी भाषामें तपेसफराबी कहते हैं, सो हम उसके लक्षण कहते हैं. ज्वरका वेग तीक्ष्ण होवे, अतीसार, निद्रा कम, वांती, कंठ होंठ मुख और नाक इनका पकना, देहमें पसीना न आना, प्रलाप (बडबड, बकना हिजयान), मुख कडुआ, मूर्छा, दाह, मद, प्यास, मल मूत्र नेत्र थूक और त्वचाका रंग पीला, भ्रम ऐसे लक्षण पित्तज्वरमें होते हैं ॥ १० ॥ ११ ॥

पित्तज्वरचिकित्सा.

पटोलयवनिःक्वाथो मधुना मधुरीकृतः ॥ तीव्रपित्तज्वरामर्दी पानात्तृड्दाहनाशनः ॥१२॥ एकः पर्पटकः श्रेष्ठः पित्तज्वरविनाशनः ॥ किं पुनर्यदि युज्येत चंदनोदीच्यनागरैः ॥ १३ ॥

व्युषितं धान्याकजलं प्रातः पीतं सश-र्करं पुंसाम् ॥ अंतर्दाहं शमयत्यचि-राद्दूरप्ररूढमपि ॥ १४ ॥ विश्वांबुपर्प-टोशीरघनचंदनसाधितम् ॥ दद्या-त्सुशीतलं वारि तृट्च्छर्दिज्वरदाह-नुत ॥ १५ ॥

कड़ू परबल और जव इनका काढा शीतल करके सहत मिलाकर पीनेसे तीव्र पित्तज्वर, तृषा और दाहका नाश होता है. एक पित्तपापडेहीका काढा पित्तज्वर-नाशक है जो कि लाल चंदन, सुगंधवाला और सोंठ-युक्त किया होय तौ फिर कहनाही क्या है. रात्रिको धनियां भिगोदेवे और प्रातःकाल शक्कर डालकर पीवे तौ पित्तज्वरसे उत्पन्न हुआ बहुत दिनका अंतर्दाह होय तौभी शांत होय. सोंठ, सुगंधवाला, पित्तपापडा, खस, नागरमोथा और रक्तचंदन इनका काढा शीतल करके पीवे तौ तृषा,वांती, ज्वर और दाह नाशको प्राप्त होते हैं ॥ १२–१५ ॥

मतबूख (काढा तथा क्काथ).

येज्रुशांदा तपगरम (गरमीका ज्वर) और प्राचीन ज्वरको नाश करता है. बनानेकी रीति इस प्रकारसे है कि गिलोय, शाहतरा, धनियां, मुलहठी, कांकडा-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सींगी, कडवी, खस, रक्तचंदन, नींबके पत्ते और खुर-बुजाके बीज (खरबूजेकी मींगी) सब समान लेकर इसमेंसे दो ड्राम (तीन तोला और चार मासे) लेकर आध सेर पानीमें औटावे जब चौथाई भाग शेष रहे तब छानकर पीवे.

योग.

पित्तज्वर, रक्तज्वर और तपेदिक (विषमज्वर) को हित है. कद्दू ताजा, दराजशीरीं (लोकी हालकी तोडी औरं बडी और मीठी) एक लेकर और उसपर कपरोटी करके तन्दूरमें एक ईंटपर रख दे उस तंदूरमें मंद अग्नि हो और जब पक जावे तब निकालकर मिट्टी उसकी दूर करके और उसमें छिद्र करके पानी उसका निकालकर और उस पानीमें तुरन्जबीन किंवा शीर-खिस्त तथा शर्बत नीलोफरका अथवा सिकन्जबीन या शर्बत बनफशा जो ठीक समझा जावे डालकर पिलावे. तंदूरमें भूभलराख मंद अग्नि होवे.

खमीराखस (खसका अवलेह.)

आध सेर खसके अर्कमें चार ड्राम खस (छः तोले आठ माशे) रात्रिको भिगोदेवे। फिर प्रातःसमय औटावे जब आधा सेर रहे तब पावसेर शक्कर डालकर चासनी करे फिर एक मासा खसका अतर डाले और थोडा गुलाब डाले जो इसका शर्बत बढाना होतौ

Indira Gandhi National Centre for the Arts

एक तोला मीठा कद्दू पीसकर डाल देवे. इसके सेवनसे पित्तज्वर और प्यास शांत होते हैं और जो तपेदिक (विषम जीर्णज्वरों) में देना हो तौ इसीमें दो दिन चार रत्ती कपूर मिलाकर देवे और अतीसारमें देना हो किंवा मलको कोमल करनेके लिये देवे तौ इसीमें दो द्राम (छः मासे) तवाशीर (वंशलोचन) मिलाकर देवे. यह खमीरा बहुतही श्रेष्ठ और गुणदायक है.

श्रीपर्णिचन्दनोशीरपरूषकमधूकजः । शर्करामधुरो हन्ति कषायः पैत्तिकं ज्वरम् ॥ १६ ॥ पीतं पित्तज्वरं हन्यात्सारिवाद्यं सशर्करम् ॥ सयष्टीमधुकं हन्यात्तथैवोत्पलपूर्वकम् ॥ १७ ॥ शृतशीतकषायं वा सोत्पलं शर्करायुतम् ॥ गुडूचीपद्मरोध्राणां सारिवोत्पलयोस्तथा ॥ १८ ॥ शर्करामधुरः क्वाथः शीतपित्तज्वरापहः॥ १९ ॥

खंभारी, रक्तचंदन, खस, फालसा, मुलहठी इनके क्काथमें मिश्री मिलाकर पीनेसे पित्तज्वर नाश होता है. तथा सारिवादि गणका क्काथ कर मिश्री डालकर पीवे किंवा उत्पलादिगण और मुलहठीके क्काथको पीवे या कमल और मिश्रीका क्काथ शीतल करके पीवे अथवा

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गिलोय, कमल, लोध, नीलोफर इनके क्वाथमें मिश्री मिलाकर पान करे ॥ १६-१९ ॥

सिकन्जवीन वजूरी.

कासनीकी जडका छिलका और कासनीके बीज, खीरे, ककडीके बीज (जिसको खैयारन कहते हैं) ये सब बराबर भाग और सिरका तीन भाग और दो भाग शक्करमें मिलाकर औटाकर चासनी कर अवलेहसमान बना लेवे. सिरका न मिलाया जायगा, तब इसका नाम शर्बत वजूरी वारद कहेंगे. यह पित्तज्वरकी गरमीकी शांति करनेको हित है.

द्राक्षारग्वधयोश्चापि काश्मर्याश्चाथवा पुनः ॥ स्वादुतिक्तकषायाणां कषायैः शर्करायुतैः ॥ २० ॥ सुशीतैः शमयेत्तृष्णां प्रवृद्धां दाहमेव च ॥ शीतं मधुयुतं तोयमाकण्ठाद्वा पिपासितम् ॥ २१ ॥ वामयेत्पाययित्वा तु तेन तृष्णा प्रशाम्यति ॥ क्षीरैः क्षीरिकषायैश्च सुशीतैश्चन्दनायुतैः ॥ २२ ॥ अन्तर्दाहे विधातव्यमेतैश्चान्यैश्च शीतलैः ॥ निदध्यादप्सु चालोड्य निशापर्युषितं ततः ॥ २३ ॥ पद्मकं मधुकं

द्राक्षा पुण्डरीकमथोत्पलम् ॥ यवान् भृष्टानुशीराणि समङ्गा कश्मरीफलम् ॥ २४ ॥ जिह्वाताल्लुगलक्लोमशोषे मूर्ध्नि च दापयेत् ॥ केशरं मातुलुङ्गस्य मधुसैन्धवसंयुतम् ॥ २५ ॥ शर्करादाडिमाभ्यां वा द्राक्षाखर्ज्जूर्योस्तथा ॥ वैरस्ये धारयेत्कल्कं गंडूषं च यथा हितम् ॥ २६ ॥

दाख और अमलतासका क्काथ तथा खंभारीका क्काथ अथवा मिष्ट तिक्त और कषाय द्रव्योंका क्काथ मिश्री डालकर शीतल करके पीवे तौ बढी हुई प्यास और दाहशांति होती है तथा प्याससे मनुष्यको शीतल जलमें सहत डालकर कंठपर्यंत पेट भरकर पान करावे और पान कराकर फिर वमन करावे तब तृषा शांत होती है. दूधवाले वटादि वृक्षोंका क्काथ और चंदनके क्वाथको शीतल करके दूधके साथ पिलावे और अन्तर्दाहमें अन्य शीतल द्रव्योंका क्वाथ देवे किंवा शीतल द्रव्योंको रात्रिके समय जलमें भिगोदेवे प्रातःसमयको मलकर छान लेवे और सहत मिलाकर पिलावे.पद्माख, मुलहठी, दाख, पुंडरीक (कमल)उत्पल, भूने हुए जौ, खस, मजीठ, खंभारी ये ज्वर और दाहको शांत करते

Indira Gandhi National Centre for the Arts

हैं. जिह्वा, तालु, कंठ और क्लोमशोषमें बिजोरेकी केशर, सहत इनको सिरपर लगावे. खांड, अनार, दाख और खजूर इनका कल्क मुखकी विरसता दूर करनेके लिये मुखमें धरे तथा इन्हींके क्राथसे कुल्ले करे ॥ २०-२६ ॥

कुर्स तवाशीर.

कुर्स नाम टिकियाका है और तवाशीर नाम वंशलोचनका है. ये टिकिया (कुर्स) जुलाब देनेके पश्चात् पित्तज्वरसे पीडित रोगीको दी जाती है. बनानेकी विधि गुलाबके फूलोंकी पंकडी, वंशलोचन पांच पांच भाग, कासनीके बीज, काहूके बीज, तरबूजके बीज, खीरे, ककडीके बीज (खयारन) प्रत्येक तीन भाग, नीलोफरके पुष्प दो भाग, कूट छानकर टिकिया बनावे फिर दो द्राम (छः मासे) खिलावे.

मृगमदविलासल्ललाटमध्ये मृगमदहारिणिलोचनद्वयेन ॥ मृगनृपतितनूदरश्रीपित्तज्वरमपीह द्यति रैणवः कषायः ॥ २७ ॥ एक एव खलु पैत्तिकज्वरं हन्ति पर्पटकृतः कषायकः ॥ चन्दनोदकमहौषधान्वितश्चेत्तदा किमु पुनर्विचारणा ॥ २८ ॥ द्राक्षापर्पटराज-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वृक्षकटुकामुस्ताभयानां जलं मूर्च्छाशोषनिदाघतृट्प्रलपनभ्रान्त्याढ्यपित्तज्वरे ॥ दुस्पर्शप्रमदाकिराततकटुकासिंहास्यरेणूद्भवः क्वाथः शर्करयान्वितो हरति तृट्दाहस्रपित्तज्वरान् ॥ २९ ॥ कट्फलेंद्रयवांबष्ठातिक्तामुस्तैः शृतं जलम् ॥ पाचनं दशमेह्नि स्यात्तीव्रे पित्तज्वरे नृणाम् ॥ ३० ॥

केवल पित्तपापडेका काढा पित्तज्वरको नाश करता है. यदि रक्तचंदन किंवा सोंठ भी मिलाकर देवे तब अतिश्रेष्ठ है. दाख, पित्तपापडा, अमलतास, कुटकी, मोथा, हरड इनका काढा मूर्छा, राजयक्ष्मा, पसीना, प्यास, बडबडाना, भ्रांति इनसे युक्त पित्तज्वरका नाश करता है. कायफर, इंद्रजौ, पाढ, कुटकी, नागरमोथा इनका काढा तीव्र पित्तज्वरीको दश दिनपर यह पाचन देवे ॥ २७–३० ॥

अहो किमर्थं बहुभिः कषायैः पराशराद्यैर्मुनिभिः प्रदिष्टैः ॥ छिन्नाशिवापर्पटतोयपानात् पित्तज्वरः किं न सरीसरीति ॥ ३१ ॥ पिपासादाहपित्तास्र-

युतं पित्तज्वरं जयेत् ॥ ३२ ॥ लोहितचन्दनपद्मकधान्यच्छिन्नरुहापिचुमन्दकषायः ॥ पित्तकफज्वरदाहपिपासावांतिहुताशविनाशहरः स्यात् ॥ ३३ ॥ द्राक्षा हरीतकी मुस्तं कटुका कृतमालकः ॥ पर्पटश्च कृतः क्वाथ एषां पित्तज्वरापहः ॥३४॥ तृण्मूर्च्छादाहपित्तास्रक्शमनो भेदनः स्मृतः ॥ जलजलजजलवाहारेण विश्वौषधशिशिरैः शिशिरजलं शृतं स्यात् ॥ सपदि सुखकरं सदा सदाहज्वरतृषि योज्यमिदं नवज्वरेपि ॥ ३५ ॥

गिलोय, आंवला, पित्तपापड़ा इनके काढेके पीनेसे पित्तज्वर नष्ट होता है, पित्तपापडा, अडूसा, कुटकी, चिरायता, धमासा, प्रियंगूके पुष्प इनके काढेमें खांड मिलाकर पीनेसे प्यास, दाह और रक्तपित्तकफ नष्ट होता है. रक्तचन्दन, पद्माखकी त्वचा, धनियां,गिलोय, नींब इनके क्काथके पीनेसे रक्तकफ नष्ट होता है. दाख, छोटी हरड, नागरमोथा, कुटकी, किरवारीका गूदा, पित्तपापडा इनका काढा पीवे तथा सुगंधवाला, खस,

मोथा, पित्तपापडा, सोंठ, रक्तचन्दनका काढा पीवे यही क्वाथ नवीन पित्तज्वरमें पीवे ॥ ३१-३५ ॥

बनफशाका शर्बत ।

ज्वर, खांसी, दाह, जलन, तृषा इत्यादिको नष्ट करता है, बनानेकी विधि—बनफशा अढाई पावको पानीमें औटावे और छानकर पंद्रह छटांक कन्द सफेद डालकर चासनी करके शर्बत बना लेवे.

नीलोफरका शर्बत.

पित्तको शांत करता है. नीलोफरके पुष्प अढाई पावको पानीमें औटाकर छानकर पंद्रह छटांक कन्द डाल चासनी बनाकर शर्बत बना लेवे.

खांसीपर योग.

जो ज्वरके साथ खांसी हो तो मुलहठी, गांवजुबांके पत्ते, बनफशा, खत्मी, उन्नाव इनको रात्रिसमय गरम पानीमें भिगोदेवे फिर प्रातःसमय छानकर और मिश्री मिलाकर इसी भांतिसे सात दिनतक पीवे.

खांसीपर कत्थेकी गोली.

पापडीकत्था (सफेद कत्था) चार भाग, कपूर एक भाग कूटकर बेरके समान गोंदके पानीमें गोलियां बना लेवे, एक गोली नित्यप्रति खाया करे.

इमलीका शर्बत.

जो पित्त, दाह और तृषाको शांत करता है,

Indira Gandhi National Centre for the Arts

इमली आधी छटांक कम आधसेर लेकर पानीमें औटावे, छानकर पंद्रह छटांक कन्द डालकर चासनी बनाकर तैयार करे.

चन्दनका शर्बत.

प्यासको बुझाता है.सफेद चंदनका बुरादा (चन्दनचूरा साढे सात तोले लेकर) एक रात्रिदिन गुलाबजलमें भिगोदेवे फिर पंद्रह छटांक कंद डालकर मंद अग्निपर चासनी कर लेवे.

आलूबुखारेका शर्बत.

कफनाशक, पित्तरेचक, दाह और प्यासको शांत करता है.आलूबुखारे नग एक सौ, इमली दश छटांक, निसोत सफेद, बनफशा प्रत्येक पांच पांच तोले और दश दश मासे लेकर वस्त्रकी पोटली बनाकर और उस पोटलीको पांच छटांक कम पांच सेर पानीमें डालकर अग्निपर औटावे, जब जलकर एक छटांक कम एकसेर पानी शेष रह जावे तब खूब मलकर छानकर उसमें पंद्रह छटांक कंद डालकर मंद अग्निपर चासनी कर लेवे.

अर्ककपूर योग यूनानी.

गरम पित्त और दिक (विषमज्वर) और तृषाको नष्ट करता है. कपूर वीस मासे, धनियां दस मासे, गांवजुबाके पुष्प दस मासे, श्वेतचंदन और रक्तचंदन दोनों वीस मासे, कासनीके बीज, खीरे, ककडीके बीज,

काहूके बीज, घिया काहूके बीज,खुरबुजेके बीज,खुरफेके बीज,बनफशा,वंशलोचन प्रत्येक दस दस मासे,गुलाबके फूलोंकी पंकडी एक तोला, नीलोफरके पुष्प और बीज, शाहतरा, वेद्मुश्क ताजा प्रत्येक एक एक तोला, काहूके हरे पत्ते पंद्रह छटांक, सौंफ देशी, मीठे सेव,मीठी वीह, अमरूद प्रत्येक पंद्रह छटांक; गुलाबजल, अर्क-वेद,अर्ककासनी प्रत्येक पौने दो सेर जल जितना पड सके डालकर भपकामें अर्क खींचे.

क्याखूबासिकन्जबीन.

चौबे क्याखूब हकीमकी अजमाई हुई जो पित्तज्व-रको नष्ट करती है और प्लीहाकी कठोरताको खोती है. खीरे, ककडीके बीजोंकी मींगी सात तोला, खुरबु-जेके बीजोंकी मींगी साढे तीन तोले, कासनीके बीज चार तोले और साढे चार मासे, कासनीकी जडका वक्कल चार तोले और साढे चार मासे, सौंफ देशी साढे दस मासे, सौंफ रूमी साढे दस मासे और सौंफकी जडका वक्कल साढे दस मासे, रेवन्दखताई साढ़े सात तोले, कंद चौदह छटांक, सिरका अंगूरी सात छटांक, गुलाबजल सात छटांक इन औषधियोंको गुलाबजलमें चौबीस घंटेतक भिगोदेवे फिर अग्निपर औटाकर छान-कर कंद और सिरका डालकर मंद अग्निपर चासनी करके अवलेहसमान बना लेवे.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कमोनीमुसहल (जुलाबके लिये).

दस्त मामूली लानेवाली और पित्तको नष्ट करनेवाली है, बालछड, ऊदविलसा, दालचीनी, सलीखा (दालचीनीका भेद है), हब्बविलसा प्रत्येक नौ मासे, बादामका तेल डेढ तोला, जवाखार तीन तोले, काली मिरच पौने नौ तोले, तिल्लीके पत्ते सोंठ प्रत्येक ग्यारह तोले आठ मासे, जीरा छः छटांक, निसोत सफेद सब औषधियोंके बराबर और सहत तीन गुना सबको कूट पीसकर सहतमें मिलाकर अवलेहसमान बना लेवे.

बनफशाकी गोलियां.

जो पित्त और कफको दस्तोंके द्वारा निकालती है चौबे क्याखूब हकीमका तजुर्वा है. बनफशाके फूल साढे दस मासे, पीली हरडका वक्कल साढे दस मासे, श्वेत निसोत साढे दस मासे, मुलहठीका सत्त साढे तीन मासे, सक्मोनियां भूनी हुई पौने दो मासे, कतीरा साढे तीन मासे ये सब कूट छानकर जलके साथ चनेके प्रमाण गोलियां बनाकर बलअवस्थाके अनुसार दिया करे.

द्राक्षादिकाढा.

मुनक्का दाख, हरड छोटी, नागरमोथा, कुटकी, अमलतास, पित्तपापडा इन्होंका काढा पित्तज्वरका नाश करता है.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पटोलादिकाढा.

कडू परवल, जौ, धनियां, मुलहठी इन्होंका काढा सहत मिलाकर पीनेसे पित्तज्वरकी सर्व व्याधियोंका नाश करता है.

भूनिंबादिकाढा.

चिरायता, अतीस, लोध, नागरमोथा, इंद्रजौ, गिलोय, वाला, धनियां, बेलफल इनका काढा सहतयुक्त पीनेसे पित्तज्वर नष्ट होता है.

ससिक्तादिकाढा.

धनियां, चावल इनको रात्रिको जलमें भिगोदेवे, प्रभातको मलकर छानकर मिश्री मिलाकर पिलाया करे तौ पित्तज्वर नष्ट होता है.

जवारस जरश्क.

आमाशयको बलदायक करती है और आंतों और जिगरको पुष्ट करती है और आमाशय और जिगरकी गरमीको और प्यासको शांत करती है और पित्तको नष्ट करती है तथा रक्तकी गरमीको शांत करती है. बनानेकी विधि यह है कि पानी जरश्कका औटावे और छान लेवे फिर उसमें कंद डालकर मंद अग्निपर पकाकर बना लेवे.

सिकन्जबीन सादा.

पित्तको हरती है, प्यासको शांत करती है, गाठों-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

को खोलती है. कन्द पंद्रह छटांक, सिरका ढाई पाव मिलाकर मंद अग्निपर चाशनी करके अवलेह समान बनाकर और उसमें गुलाब पौने तीन तोले मिलादेवे.

सिकन्जबीन वजूरी मौअतदिल.

जो तिल्ली (प्लीहा) और कलेजे और मसाने (मूत्राशय) के रोगोंको नष्ट करती है. कासनीके बीज, सौंफ देशी, अजमोदके बीज प्रत्येक दस मासे, खुरबुजाके बीज, खीरे, ककडीके बीज प्रत्येक साढे सत्तरह मासे; कासनीकी जडका छिलका, सौंफकी जडका छिलका प्रत्येक पांच तोले कूटकर पानीमें डालकर औटावे फिर छानकर सिरका दश छटांक और कंद पंद्रह छटांक डालकर मंद मंद अग्निपर पकाकर बना लेवे.

नींबूकी सिकन्जबीन.

बीहका पानी अठारह तोले नौ मासे, सिरका ग्यारह तोला, गुलाबजल ग्यारह तोला, नींबूका रस ग्यारह तोला, कंद पंद्रह छटांक सबको मिलाकर मंद अग्निपर पकाकर बना लेवे.

सिकन्जबीन वज़ूरी सर्द.

यह कलेजेके रोगोंको बहुत गुणदायक है. कासनीकी जडका छिलका तीन तोले, खुरबुजेके बीज साढे सत्तरह मासे, खीरे, ककडीके बीज साढे सत्तरह मासे कूटें और दस छटांक सिरकामें मिलाकर पानीमें चौबीस

Indira Gandhi National Centre for the Arts

घंटेतक भिगो रखे फिर मंद अग्निपर औटा लेवे, फिर पंद्रह छटांक कन्द डालकर अग्निपर पका लेवे.

सिकन्जबीन बजूरी गरम.

कासनीके बीज, अजमोदके बीज, अजमोदकी जड़का छिलका, कर्ड सौंफ, देशी सौंफ, रूमी प्रत्येक सत्तरह मासे, सौंफकी जडका छिलका तीन तोले पानीमें कुछ कालतक भिगोकर फिर औटावे, फिर छानकर और पंद्रह छटांक कन्द डालकर चासनी कर लेवे.

सिकन्जबीन जंगली प्याजकी.

प्लीहा (तिल्ली) को तथा कलेजेको गुण करती है. क्याखूब हकीमकी अजमाई हुई । टाहेमरेहुए बालकको गर्भाशयसे शीघ्र बाहर निकालती है. जंगली प्याजका सिरका पंद्रह छटांक, सोंठ, सौंफ देशी, सौंफ रूमी, हींग, अकरकरहा, जंगली पोदीना प्रत्येक तीन तोले, अजमोद, जीरा, किरमानी प्रत्येक साढे सत्तरह मासे सबको कूटकर सिरका और दस छटांक सहतमें चौवीस घंटेतक भिगोदेवे फिर सात दिनतक धूपमें रखे फिर छान लेवे और काममें लावे.

वंशलोचनका चूर्ण.

जो रुधिर और पित्तके दस्तोंको रोकता है. जावित्री, बंबूलका गोंद, भूना हुआ वंशलोचन, कैहरुवा, मुलहठीका सत्व प्रत्येक छः मासे; ईसबगोल, भूना हुआ

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वाकला, जीरा भूना हुआ प्रत्येक एक तोले कूट छान-कर चार मासे नित्य खावे.

सिरप आफ् लैमन (नींबूका शर्बत).

सिरफ़ नाम शर्बत्का डाक्टरीमें है और लैमन नाम नींबूका है. जिसके बनानेकी विधि डाक्टरीमतके अनुसार हम कहते हैं. नींबूका छिलका दो औंस और लैमन जूश (नींबूका रस) छाना हुआ एक पाइंट, शक्कर सफेद सवा दो पौंड, रैक्टीफाइड स्पिरेट (टपकाई हुई मद्य) ढाई फिल्यूड औंस लेवे. प्रथम नींबूके रसको अग्निपर चढावे, जब उफान आने लगे तब उसमें छिलकेके छोटे छोटे टुकडे करके डालकर ढक देवे. जब शीतल हो जावे तब छानकर फिर शक्कर मिलाकर अग्निपर चासनी करे फिर मद्यको मिलाकर रखे.

नारंगीका शर्बत.

प्यास बुझाता है, गरमीकरके जो मस्तकमें पीडा हो उसको शांत करता है. नारंगीका रस पंद्रहछटांक लेकर औटावे जब आधा रह जावे तब उसके ऊपरसे पीले झागोंको अलग कर दे और आधपाव कम दो सेर कन्द डालकर मंदअग्निपर चासनी कर लेवे.

टिन्चर आफ् औरेन्जपिल.

खट्टी नारंगीका छिलका महीन कतरा हुआ और कुचला हुआ दो औंसको प्रूफ स्पिरेट एक पाइंटमें

डालकर बंद पात्रमें सात दिनतक भिगोकर फिर छान लेवे.मात्रा इसकी एक फिल्यूड ड्रामसे दो फिल्यूड ड्रामतककी है.

सिरप आफ् औरेन्जपिल.

सिरफ् नाम शर्बतका है और औरेंज नाम नारंगीका है. टिञ्चर आफ् औरेंज पिल एक फिल्यूड औंसमें शरबत सात फिल्यूड औंस मिलाकर बना लेवे. मात्रा इसकी एक फिल्यूड ड्रामकी है.

शर्बत सहतूतका.

सहतूतका रस छानकर औटावे जब आधा रह जावे अर्थात् दो सेर रस हो तौ आधपाव कम दो सेर कंद मिलाकर चासनी करके बना लेवे और डाक्टरीभाषामें इसका नाम सिरप आफ् मलेवरीज है. जिसके बनानेकी विधि इस प्रकारसे है. मलेवरी जूस (मलेवरी नाम सहतूतका और जूस नाम रसका है) एक पाइंट और शक्कर दो पौंड, शराब मुक्तर (टपकाई हुई मद्य) ढाई फिल्यूड औंस लेवे. प्रथम सहतके रसको अग्निपर औटावे जब उफान आ जावे तब अग्निसे उतारकर शीतल करके छानकर शक्कर मिलाकर मंद अग्निपर चासनी करके अग्निसे उतारकर फिर मद्यको मिलाकर रख लेवे. यह शर्बत तैयार होकर तोलमें छः औंस और तीन पौंड होना चाहिये.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मीठे अनारका शर्बत.

कलेजेको पुष्ट करता है और प्यासको बुझाता है. मीठे अनारका रस पंद्रह छटांक और कंद पंद्रह छटांक मिलाकर अग्निपर चासनी करे.

शर्बत गाउजुबां.

हृदयको हित है, वातप्रकृतिवालोंको गुण करता है. गाउजुबां दस छटांक, पानी पंद्रह छटांक, कन्द साढे पंद्रह छटांक लेकर प्रथम गाउजुबांको पानीमें औटाकर फिर छानकर कंद मिलाकर चासनी करके गुलाब सात तोले डालकर फिर किंचित् और भी अग्नि देकर बनाकर रख लेवे.

हर्डका शर्बत.

गरमीके ज्वरको नष्ट करता है और प्रकृतिको नरम करता है. पीली हर्ड नग एक सौ लेकर कुचल डाले फिर पानी डालकर तीन दिनतक धूपमें रख छोडे और फिर पानी डालते रहै फिर दस छटांक तुरंजवीन मिलाकर छान लेवे और औटावे फिर अग्निसे उतारकर सकमूनिया साढे चार मासे पीसकर मिलाकर काममें लावे.

गुलाबका शर्बत.

यह पित्तरेचन है. गुलाबके फूल हालके तोडे हुए आधी छटांक कम आध सेर पानी आठ सेरमें डालकर

औटावे जब पानी साढे छः सेर शेष रह जावे तब आधी छटांक कम आधसेर गुलाबके और फूल डालकर फिर औटावे इसी प्रकारसे कई वार करे, जब पानी जलकर पंद्रह छटांक बाकी रहै तब छानकर उसमें पंद्रह छटांक कंद मिलाकर मंद अग्निपर चासनी करके बना लेवे. डाक्टरीभाषामें इसका नाम सिरप आफ् रेड रोज (सिरप नाम शर्बतका रेड नाम लालका रोज नाम गुलाबका)कहते हैं. जिसके बनानेकी रीति इस भांतिसे है. लाल गुलाबके पुष्पोंकी पंखड़ी दो औंस, शक्कर तीस औंस, उबलता खलबलाता खोलता हुआ गरम पानी एक पाइंटमें मिलाकर दो घंटेतक भीजने देवे फिर वस्त्रमें छानकर फिर मंद अग्निपर चासनी करे, तैयार शर्बत तोलमें दो पौंड और चौदह औंस रहना चाहिये. मात्रा इसकी एक फिल्यूड ड्रामकी है.

कफज्वरका निदान.

स्तैमित्यं स्तिमितो वेग आलस्यं मधुरास्यता ॥ शुक्लमूत्रपुरीषत्वं स्तंभस्तृप्तिरथापि च ॥ ३६ ॥ गौरवं शीतमुत्क्लेदो रोमहर्षोऽतिनिद्रता ॥ प्रतिश्यायोऽरुचिः कासः कफजेऽक्ष्णोश्च शुक्लता ॥ ३७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कफज्वरके लक्षण कहते हैं.ऐसा मालूम होता है कि जैसा देहमें गीला कपडा लिपट रहा हो, ज्वरका वेग मंद, आलस्य, मुख मीठा, मूत्र विष्ठा और त्वचा श्वेत, देहका जकड जाना, विना भोजन किये हुएही तृप्ति, शरीर भारी, शीतका लगना, जी मचलाना, रोमांचका होना, निद्राका अधिक आना, नाकसे कफ गिरना, अरुचि, कास, नेत्रोंमें सफेदी ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

कफज्वरकी चिकित्सा.

निंबविश्वामृतादारुशठीभूनिंबपौष्क-रम् ॥ पिपल्यौ बृहती चेति काथो हंति कफज्वरम् ॥ ३८ ॥ सेन्दुवार-दलक्वाथं शोषणं कफजे ज्वरे ॥ जंघ-योश्च बले क्षीणे कर्णे वा पिहिते पिबेत् ॥३९॥ कट्फलं पौष्करं शृंगी कृष्णा च मधुना सह ॥ कासश्वासज्वरहरः श्रेष्ठो लेहः कफांतकृत् ॥ ४० ॥ ऊ-र्ध्वजत्रुजरोगघ्नी सायं स्यादवलेहि-का ॥ अधोरोगहरी या तु सा पूर्वं भो-जनान्मता ॥ ४१ ॥ क्षौद्रोपकुल्यासं-योगः श्वासकासज्वरापहः ॥ गुडूची

चन्दनं पद्मं नागरेन्द्रयवासकम् ॥४२॥
अभयारग्वधोदीच्यपाठाधान्याब्दरो-
हिणीः ॥ कषायं पाययेदेतत्पिप्पली-
चूर्णसंयुतम् ॥ ४३ ॥ कासश्वासज्वरा-
न्हन्ति पिपासादाहनाशनः ॥ विण्मूत्रा-
निलविष्टम्भे त्रिदोषप्रभवेपि च ॥४४॥

नींब, सोंठ, गुरच, देवदारु, कपूरकचरी, चिरयता, पोहकरमूल, पीपर और भटकटैया इनका काढा कफज्वरका नाश करता है. जो पिडरियोंका बल क्षीण हो गया हो और कान भी बंद हो गये होवें ऐसे भी कफज्वरमें संभालूका काढा पीवे. कायफल, पुष्करमूल, कांकडाशींगी और पीपर इनके चूर्णमें सहत मिला अवलेह बनाकर चटावे तौ कासश्वासज्वर नष्ट होते हैं. अवलेहके देनेका समय भी कहते हैं.जो जत्रुके ऊपरके (हँसियेके ऊपरके) नाक कान इत्यादि रोगोंके वास्ते देना हो तो संध्यासमय देना और जो गलेके नीचेके अंगमें रोगोंके लिये देना हो तौ प्रभातसमय देवे. सहतके संगमें पीपर चाटनेसे श्वास, कास, ज्वर, तापतिल्ली, हुचकी इनका नाश होता है.यह बालकोंको भी हितकारक है. गुरच, रक्तचंदन, पद्मकाष्ठ, सोंठ, इद्रंजौ, जवासा,

Indira Gandhi National Centre for the Arts

हरड, अमलतास, सुगंधवाला, पाढ, धनियां, नागरमोथा और कुटकी इनका काढा पीपरका चूर्ण डालकर देनेसे श्वास, कास, ज्वर, प्यास, दाह तथा मल मूत्र और अधोवायुका अवरोध तथा त्रिदोष इनका नाश होता है ॥ ३८–४४ ॥

सप्तच्छदं गुडूचीं च निम्बस्फूर्जकमेव च ॥ काथयित्वा पिबेत्क्वाथं सक्षौद्रं कफजे ज्वरे ॥ ४५ ॥ कटुत्रिकं नागपुष्पं हरिद्रा कटुरोहिणी ॥ कौटजं च फल हन्यात्सेव्यमानं कफज्वरम् ॥ ४६ ॥ हरिद्रां चित्रकं निम्बमुशीरातिविष वचाम् ॥ कुष्ठमिन्द्रयवां मूर्वां पटोलं चापि साधितम् ॥ ४७ ॥ पिबेन्मरिचसंयुक्तं सक्षौद्रं कफजे ज्वरे ॥ सारिवातिविषाकुष्ठपुराख्यैः सदुरालभैः ॥ ४८ ॥ मुस्तेन च कृतः क्वाथः पीतो हन्यात्कफज्वरम् ॥ मुस्तं वृक्षकबीजानि त्रिफला कटुरोहिणी ॥ परूषकानि च क्वाथः कफज्वरविनाशनः ॥ ४९ ॥

कफज्वरवालेको सातला, गिलोय, नींब, फणीन्द्र इनका क्वाथ सहत मिलाकर पिलावे तथा सोंठ,मिरच, पीपल, नागकेशर, हल्दी, कुटकी, इंद्रजौ इनका क्वाथ कफज्वरको दूर करता है तथा हलदी, चीता, नींब,खस, वच, कूठ, अतीस, इंद्रजौ, मडोडफली, परवल, काली मिरच इनके क्वाथमें मिश्री डालकर पीवे तथा सारिवा, अतीस, कूठ, गूगल, जवासा, मोथा इनका क्वाथ पीवे किंवा-मोथा, इंद्रजौ, हरड, बहेडा, आंवला, कुटकी, फालसा इनका क्वाथ पीवे तथा नागरमोथा,सोंठ, धमासा, वांसा इनका क्वाथ पीवे तथा पीपल, पीपलामूल, मिरच, गजपीपल, सोंठ, चीता, चव्य, रेणुकेबीज,वेलदोडे, अजमोद, सर्षप, हींग, भारंगी, पहाडमूल, इंद्रजौ, जीरा, बकायन, मोरवेल, अतीस, कुटकी, वायविडंग इनका क्वाथ पीवे. कफ, वायु, गुल्म, शूल, ज्वर,अरुचि को नष्ट करता है, आमको पकाता है ॥ ४५-४९ ॥

आंवलेकी चटनी.

आंवला, हरड, बहेडा, पीपल ये सब बराबर भाग लेकर पीस छान सहत मिलाकर चाटनेसे खांसी नष्ट होती है.

कायफर अवलेह.

कायफर, पुष्करमूल, काकडासिंगी, अजवायन, सोंठ, अजमोद, मिरच, पीपल ये सब बराबर भाग

लेकर अदरखके रसमें तथा सहतमें मिलाकर चाटनेसे कफज्वर, खांसी, ज्वर जो कफकरके हो, श्वास, छर्दि, कफ, वायुरोग नष्ट होते हैं.

योग.

निर्गुंडीका काढा वनपीपरका चूर्ण मिलाकर पीवै किंवा अजवायन, पीपल, वासा, खसखस (खशखाश) का वक्कल इन्होंका काढा पीवे तो खांसी, श्वास, ज्वर नष्ट होते हैं.

बीजपूरं शिवा पथ्या नागरं ग्रंथिकैः शृतम् ॥ सक्षारं पाचनं श्लेष्मज्वरे द्वादशवासरे ॥५०॥ भूनिंबनिंबपिप्पल्यः शठी शुण्ठी शतावरी ॥ गुडूची बृहती चेती काथो हन्यात्कफज्वरम् ॥ ५१ ॥

बिजौरेकी जड़, छोटी हरड, सोंठ, पीपलाभूल इनका काढा जवाखार मिलाकर बारह दिनके पश्चात् कफज्वरपर यह पाचन देवे किंवा चिरायता, नींबकी छाल, पीपल, कचूर, सोंठ, सतावर, गिलोय, कटैली इनका काढा पीनेसे कफज्वरका नाश होता है ॥ ५० ॥ ५१ ॥

वातपित्तज्वरलक्षण.

तृष्णा मूर्च्छा भ्रमो दाहो निद्रानाशः शिरोरुजा ॥ कंठास्यशोषो वमथू रो-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

महर्षोऽरुचिस्तमः ॥ पर्वभेदश्च जृंभा च वातपित्तज्वराकृतिः ॥ ५२ ॥

जिस ज्वरमें तृषा, मूर्च्छा, भ्रम, दाह, निद्रका नाश, मस्तकमें पीडा, कंठ और मुखका सूखना, वांति, रोमांच, अरुचि, नेत्रोंके अगाडी अंधेरी, पर्वभेद और जंभाई हो वह वातपित्तज्वर है ॥ ५२ ॥

वातपित्तज्वरचिकित्सा.

विश्वामृताब्दभूनिम्बैः पंचमूलीसमन्वितैः ॥ गुडूचीनिम्बधान्याकैः पद्मकं रक्तचंदनम् ॥ एष सर्वज्रान् हंति गुडूच्यादिस्तु पाचनः ॥ ५३ ॥

सोंठ, गिलोय, नागरमोथा, चिरायता, सालवन, पिठवन, भटकटैया, वनभाट और गोखरू इनका काढा पीवे तथा नींबकी छाल, धनियां, पद्मकाष्ठ, रक्तचंदन इनका काढा पीवे ॥ ५३ ॥

धान्याकं मधुकं रास्ना पथ्या द्राक्षा मधूरिका ॥ गुडूची पर्पटं चैव समभागांश्च कारयेत ॥ ५४ ॥ शोणामुखी सर्वतुल्या ग्राह्या वैद्येन धीमता ॥ पचेदष्टपले तोये पलशेषेऽवतारयेत् ॥५५॥ मत्स्यंडिकायास्तोलं च प्रक्षिप्य पा-

यथेत् सुधीः ॥ वातपित्तज्वरं घोरं नाशयेन्नात्र संशयः ॥ ५६ ॥

धनियां, मुलहठी, रास्ना, हरड, दाख, महुएका सार, गिलोय, पित्तपापडा ये सब समभाग और सनाय इन सबोंको बराबर लेकर बत्तीस तोले पानीमें काढा करे जब चार तोले बाकी रहे तब उतारकर लाल शक्कर एक तोला मिलाकर पीनेसे घोर वातपित्तज्वरका नाश होता है ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

किराततिक्तममृतं द्राक्षामामलकं शठीम् ॥ निःक्वाथ्य वातपित्तोत्थे तं क्वाथं सगुडं पिबेत् ॥५७॥ रास्नावृषोत्थस्त्रिफला राजवृक्षफलैः सह ॥ कषायः साधितः पीतो वातपित्तज्वरं जयेत्॥५८॥ पटोलत्रिफलातिक्ताशठीवासामृताभवः ॥ क्वाथो मधुयुतः पीतो हन्यात्कफकृतं ज्वरम् ॥ ५९ ॥

चिरायता, मोथा, दाख, आंवला, कचूर इनका क्वाथ गुड मिलाकर पीवे तथा रास्ना, अडूसा, त्रिफला, अमलतास इनका क्वाथ पीवे तथा पटोलपत्र,हरड, बहेडा, आंवला, कुटकी, कचूर, गिलोय इनका काढा सहत मिलाकर पीवे ॥ ५७ ॥ ५८॥ ५९ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वातकफज्वरनिदान.

स्तैमित्यं पर्वणो भेदो निद्रा गौरवमेव च ॥ शिरोग्रहः प्रतिश्यायः कामः स्वेदाप्रवर्तनम् ॥ ६० ॥ संतापो मध्यवेगश्च वातश्लेष्मज्वराकृतिः ॥ ६१ ॥

वातकफज्वरके लक्षण कहते हैं. शरीरमें जैसे गीला कपडा लेपेटा हो ऐसा मालूम होवे और पर्व जो संधियां उनमें फोडनेके समान पीडा, नींद बहुत आवे, शरीर जड, शिरका जकड जाना, नाकसे कफ गिरना. खांसी पसीने नहीं आते, अंगमें संताप होवे और ज्वरका वेग मध्यम होय ॥ ६० ॥ ६१ ॥

वातकफज्वरचिकित्सा.

क्षुद्राशुंठीगुडूचीनां कषायः पौष्करस्य च॥कफवाताधिके पेयो ज्वरे चापि त्रिदोषजे ॥६२ ॥ कासश्वासारुचिकरे पार्श्वशूलविधायिनि ॥ आरग्वधकणामूलमुस्ततिक्ताभयाकृतः ॥ ६३ ॥ क्वाथः शमयति क्षिप्रं ज्वरं वातकफोद्भवम् ॥ आमशूलप्रशमनो भेदी दीपनपाचनः ॥ ६४ ॥

कटेरी, सोंठ, गिलोय, अरंडकी जड इनका काढा पीवे तथा अमलतासका गूदा, पीपलामूल, नागरमोथा, कुटकी और जंगी हरड इन्होंका काढा पीवे तो वातकफज्वर नष्ट होता है ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥

कफवातज्वरे स्वेदान् कारयेद्रूक्षनिर्मितान् ॥ स्रोतसां मार्दवं कृत्वा नीत्वा पावकमाशयम् ॥ हत्वा वातकफस्तंभं स्वेदो ज्वरमपोहति ॥ ६५ ॥ खर्परभ्रृष्टस्थितकांजिकसिक्तो हि वालुकास्वेदः ॥ शमयति वातकफामयमस्तकशूलांगभंगादीन् ॥ ६६ ॥ रास्ना द्राक्षा वचा पथ्या यवानी मधुयष्टिका ॥ मधूरिकेंद्रबीजं च तिक्ता विश्वं गुडूचिका ॥ ६७ ॥ द्विमाषमेषां प्रत्येकं ग्राहयेत् कुशलो भिषक् ॥ पचेदष्टपले तोये ग्राह्यं पादावशेषितम् ॥६८॥ शीते च मधुनश्चात्र पलार्धं प्रक्षिपेत्सुधीः॥मुहुर्दण्डान्तरैः पानाज्ज्वरो याति न संशयः ॥ ६९ ॥ पिप्पलीभिः शृतं तोयमनभिष्यंदि दीपनम् ॥ वातश्ले-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ष्मविकारघ्नं प्लीहज्वरविनाशनम् ॥७०॥
आरग्वधग्रंथिकमुस्ततिक्ताहरीतकी-
भिः क्वथितः कषायः ॥ सामे सशूले
कफवातयुक्ते ज्वरे हितो दीपनपाच-
नश्च ॥ ७१ ॥ क्षुद्रामृतानागरपुष्कराह्वयैः कृतः कषायः कफमारुतोत्तरे ॥
-सश्वासकासारुचिपार्श्वरुग्ज्वरे ज्वरे
त्रिदोषप्रभवेऽपि शस्यते ॥ ७२ ॥

कफवातज्वरमें प्रथम रूक्ष पदार्थोंका निर्मित स्वेदन करना. यह स्वेदविधि इंद्रियोंकी कोमलताकरके जठराग्निको उसके स्थानपर स्थापित करती है तथा वातकफजन्य जडत्वका नाश करके ज्वरका भी नाश करती है. एक खपरेमें वालूको खूब तपायकर वह वालूसहित खपरा रोगी अपने अगाडी या किसी तजबीजसे नीचे रखकर ऊपरसे वस्त्र ओढ लेवे और उस वालूपर कांजीके छींटे देवे इसी भांतिसे पसीना निकाले. ये वालूका स्वेद वातकफसंबंधी रोग, मस्तकका शूल और अंगकी पीडाका नाशक है. रास्ना, दाख, वच, हरड, अजवायन, मुलहटी, महुआ, इंद्रजव, कुटकी, सोंठ और गिलोय इन सबोंको दो दो मासे लेकर सबोंका बत्तीस तोले पानीमें काढा करके जब आठ तोले रहे तब उतार लेवे. शीतल

Indira Gandhi National Centre for the Arts

करके फिर इसमें दो तोले सहत मिलाकर इसको एक एक घटिकामें पीता रहे तो ज्वर नष्ट होवे. केवल पीपलका पीना कफनाशक तथा दीपन और वातकफजन्य विकार, तापतिल्ली और ज्वरका नाशक है. अमलतास, पीपलामूल, मोथा, कुटकी और हरडका काढा आमशूल और कफवातयुक्त ज्वरका नाश करता है तथा दीपन और पाचन है. दाख, गिलोय, सोंठ और पुष्करमूल इनका काढा कफवातज्वर तथा जो कास, श्वास, अरुचि और पसलीकी पीडायुक्त ज्वर होवे और त्रिदोषज्वर इनमें श्रेष्ठ है ॥ ६९–७२ ॥

पित्तकफज्वरनिदान.

लिप्ततिक्तास्यता तन्द्रा मोहः कासोऽरुचिस्तृषा ॥ मुहुर्दाहो मुहुः शीतं पित्तश्लेष्मज्वराकृतिः ॥ ७३ ॥

पित्तकफज्वरके लक्षण कहते हैं. मुख कफसे लिपा हुआ और कडुआ, तन्द्रा (नेत्र ढकेसे रहें), मोह, कास, अरुचि, तृषा, वारंवार दाह और शीत लगे ॥ ७३ ॥

पित्तकफज्वरकी चिकित्सा.

अमृतारिष्टकटुकामुस्तेंद्रयवनागरैः ॥ पटोलचंदनाभ्यां च पिप्पलीचूर्णयु-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

क्लृतम् ॥ ७४ ॥ अमृताष्टकमेतच्च पित्तश्लेष्मज्वरापहम् ॥ छर्द्यरोचकहृल्लासदाहतृष्णानिवारणम् ॥ ७५ ॥

गिलोय, नींबकी छाल, कुटकी, नागरमोथा, इंद्रजौ, सोंठ, पटोलपत्र, लाल चंदन इनका काढा पीनेसे पित्तकफज्वर नष्ट होता है ॥ ७४ ॥ ७५ ॥

अमृतेन्द्रयवारिष्टपटोलं कटुरोहिणी॥ नागरं चन्दनं मुस्तं पिप्पलीचूर्णसंयुतम् ॥ ७६ ॥ अमृताष्टक इत्येष पित्तश्लेष्मज्वरापहम् ॥ हृल्लासारोचकच्छर्दीपिपासादाहनाशनः ॥ ७७ ॥ कंटकार्यमृता भार्ङ्गी नागरेन्द्रयवासकम् ॥ भूनिम्बं चन्दनं मुस्तं पटोलं कटुरोहिणी ॥७८॥ कषायं पाययेदेतं पित्तश्लेष्मज्वरापहम् ॥ दाहतृष्णारुचिच्छर्दिकासहृत्पार्श्वशूलनुत् ॥ ७९ ॥

गिलोय, इंद्रजौ, नींबकी अंतर छाल, पटोलपत्र, कुटकी, सोंठ, रक्तचंदन और नागरमोथा इनका काढा पीपलके चूर्णयुक्त सेवन करनेसे पित्तकफज्वर नाश होता है और मतिलाई, वांति, अरुचि, प्यास, दाहको नष्ट

करता है. इसका नाम अमृताष्टक है. भटकटैया, गिलोय, भारंगी, सोंठ, इंद्रजौ, जवासा, चिरायता, रक्तचंदन, नागरमोथा, कडुवा परवल, कुटकी इनका काढा पित्तकफज्वरका नाशक है तथा दाह, तृष्णा, अरुचि, वांति, कास और हृदय तथा पसलीके शूलको शांत करता है ॥ ७६–७९ ॥

डैंग्यू फीवर (एक भांतिका वातज्वर).

चौवीस घंटेसे लेकर और दस दिनके भीतर समीयत (विष) का असर देहमें होनेसे एकवारही जाडा लगकर ज्वर चढ आता है. जिसके कारणसे बल नष्ट, मस्तकमें शूल, झाडा (दस्त) कष्टसे हो, कभी अधिक दस्त होवे, कभी दस्त होवे नहीं, संधियोंमें पीडा और सूजन होवे, हडफूटन होवे, हाडोंमें फूटनी होनेसे इस ज्वरका नाम ब्रेकवोन फीवर कहते हैं, फोतोंमें सूजन हो जाती है, ज्वरके बारह घंटे किंवा तीन चार दिन पश्चात् तीव्र लक्षणोंमें कमी आने लगती है. यहांतक कि केवल मस्तकमें शूल और कृशता रह जाती है, परंतु दो तीन दिन पीछे यह ज्वर फिर पूर्वदशाके भांति आ जाता है और मस्तक और आमाशयमें शूल होने लगता है. मिचली, उबकाई आती है, जीभ मैली हो जाती है, रोगके प्रारम्भसे पाँचवें छठे किंवा सातवें दिन देहके ऊपर लाल ज्वरके समान तथा खसरासमान लाल दाने,

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कभी वैसीकेल तथा पसचूएल, कभी लालवादेके मान्द (सदृश) उत्पन्न हो आते हैं. कभी पटक्याई निकलते हैं. तब देहकी खालमें खुजली और जलन होती है. किसी २ रोगोंके प्रारम्भसेही देहपर पापियूलरके समान फुंसियां उत्पन्न होकर बैठ जाती तथा नष्ट हो जाती हैं आरोग्य होनेके पश्चात् देहसे छिलका उतरता है और रोगी आठ दिनमें आरोग्य हो जाता है. ये एपिटेम्क और इनफैकशिस ज्वर है जो सन १८७२ ईसवीमें हिन्दुस्तानमें अधिक फैला था; इसमें आरोग्य होनेपर किसी २ रोगीके हाथ पांवोंमें कठोरता तथा पीडा और कमजोरी रह जाती है. किसी २ को ये कईवार रोग हो जाता है और कई रोग उस समय उत्पन्न होकर अपना अपना उपद्रव करते हैं. जैसा कि वरनकाईटिस (खांसीका भेद), कमलवायु (पीलिया),जातउलरिया, अकथलमिया, कारबंगल, अतिसार, संधिपीडा.

डैंग्यूफीवरकी चिकित्सा.

कोई औषध ऐसी नहीं है कि जिससे इस ज्वरकी मर्यादा कम हो सके. हां कष्ट दूर करनेको वामक और जुलाब देते हैं. अर्थात् वमन विरेचनादिक उपाय करते हैं. डाईफोरेटिक मिक्सचरके संग थोडी अफीम किंवा बिलाडौना मिलाकर देवे जो दरद शांत हो. मस्तकके शूलकी शांतिके लिये शीतल पानी लगावे देह और

हाडोंके भडकनकी शांतिके लिये उष्ण जलमें स्पंज भिगोकर देहपर फेरे.

सन्निपातज्वरलक्षण.

क्षणे दाहः क्षणे शीतमस्थिसंधिशिरोरुजा ॥ सास्रावे कलुषे रक्ते निर्भुग्ने चापि लोचने ॥ ८० ॥ सस्वनौ सरुजौ कर्णौ कंठः शूकैरिवावृतः ॥ तंद्रा मोहः प्रलापश्च कासः श्वासोऽरुचिर्भ्रमः ॥८१॥ परिदग्धा खरस्पर्शा जिह्वा स्रस्तांगता परा ॥ ष्ठीवनं रक्तपित्तस्य कफेनोन्मिश्रितस्य च ॥८२॥ शिरसो लुंठनं तृष्णा निद्रानाशो हृदि व्यथा ॥ स्वेदमूत्रपुरीषाणां चिराद्दर्शनमल्पशः ॥८३॥ कृशत्वं नातिगात्राणां सततं कंठकूजनम् ॥ कोष्ठानां श्यावरक्तानां गुरुत्वमुदरस्य च ॥ ८४ ॥ चिरात्पाकश्च दोषाणां सन्निपातज्वराकृतिः ॥ ८५ ॥

सन्निपातज्वरके लक्षण कहते हैं. क्षणमें दाह और क्षणमें शीत लगे तथा हाड, संधि और मस्तकमें पीडा होय, कंठमें भारीपन मालूम होवे, तंद्रा (झपनी)

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मोह, प्रलाप, कास, श्वास, अरुचि, भ्रम, जीभ जली समान और खरदरी, अंग शिथिल, रक्त और कफ-मिश्रित पित्तका थूकना, शिर हलावे, झुलावे, तृषा, निद्राका नाश, हृदयमें पीडा, पसीना, मूत्र और मल ये बड़ी देरमें थोडे होवें, शरीर अतिकृश न हो, निरंतर कांखें पीतमिश्रित, श्याम और लालरंगके मंडल, फुंसियां देहपर उत्पन्न होवें, वाक्यबंद (स्वर बैठ जावे), नाक कान इत्यादिकोंका पकना, पेट भारी और वातादिक दोषोंका पाक बहुत दिनोंमें होय वही सन्निपातज्वर है ॥ ८०-८५ ॥

अथ सन्निपातज्वरारि रस.

गंधेशौ लशुनाम्भोभिर्मर्दयेद्याममात्रकम् ॥ तस्योदकेन संयुक्तं नस्यं तत्प्रतिबोधयेत् ॥ मरिचेन समायुक्तं हन्ति तंद्राप्रलापकम् ॥८६॥

पारा और गंधककी कजली करके लहसनके रसमें मिलाकर नास देना और जिसको झपनी होय तथा बकवाद होय उसको मिरचके संगमें नास देना ॥ ८६ ॥

कुलवधूरस.

शुद्धसूतं मृतं नागं मृतं ताम्रं मनःशिलाम् ॥ तुत्थकं तुल्यतुल्यांशं दिन-

मेकं विमर्दयेत् ॥ ८७ ॥ रसैश्चोत्तरवी-
रिण्याश्चणमात्रा वटी कृता ॥ सन्निपातं
निहंत्याशु नस्यमात्रेण दारुणम् ॥८८॥
एषा कुलवधूर्नाम जलैर्घृष्टा प्रदापयेत् ८९

शुद्ध पारा, सीसाभस्म, ताम्रभस्म, मनशिल, शुद्ध नीलाथोथा इनको समभाग लेकर एक दिन इंद्रायनके रसमें खल करके चनेके प्रमाण गोलियां बनावे और सुखाकर रक्खे और सन्निपातसे पीडित रोगीको पानीमें घिसकर सुंघावे ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥

ज्वरांकुशो रसः।

ताम्रतो द्विगुणं तालं मर्द्दयेत्सुषवीरसैः ॥
प्रपुटेद्भूधरे शीते वज्रीक्षीरेण मर्दयेत्
॥ ९० ॥ प्रपुटेद्भूधरे पश्चात्पंचगुञ्जामितं
भजेत् ॥ आर्द्रकस्य रसेनैव सर्वज्वर-
निकृंतनः ॥ ९१ ॥ एकाहिकं द्व्याहि-
कं च त्र्याहिकं चतुराहिकम् ॥ विषमं
चापि शीताढ्यं ज्वरं हंति ज्वरां-
कुशः ॥ ९२ ॥

तांबेसे दूनी हरिताल लेकर करेलेके रसमें घोटकर भूधरयन्त्रमें अग्नि देवे, शीतल होनेपर सेहुंडके दूधमें

Indira Gandhi National Centre for the Arts

खरल करके उसी भांति भूधरयन्त्रमें अग्नि देवे, फिर इसमेंसे पांच रत्तीभर अदरखके रसमें देनेसे एकाहिक, द्याहिक, त्र्याहिक, चतुराहिक, विषम, शीतज्वर ये नाश होते हैं॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥

दूसरा योग ज्वरांकुशका.

मरिचं टंकणं शंखचूर्णं पारदगंधकम्॥
शोधितं ब्रह्मपुत्रं च भागमेकं विनिः-
क्षिपेत् ॥ १३ ॥ गुंजामात्रं प्रदातव्यं
नागवल्लीदलैः सह ॥ ज्वरांकुशो रसो
ह्येष ज्वरमष्टविधं जयेत् ॥ १४ ॥

काली मिरच, सुहागा, शंखकी भस्म, पारा, गन्धक और शुद्ध विष इनको समभाग लेकर खरल करना, फिर इसमेंसे एक रत्तीभर नागवेलके पानमें रखकर खानेसे सर्वप्रकारके ज्वरोंका नाश होता है ॥१३॥१४॥

तीसरा योग ज्वरांकुशका.

खंडितं मृगशृङ्गं च ज्वालामुख्या रसैः
समम् ॥ रुध्वा भांडे पचेच्चुल्यां याम-
युग्मं ततो नयेत् ॥ १५ ॥ अष्टांशं
त्रिकटुं दद्यान्निष्कमात्रं च भक्षयेत् ॥
नागवल्या रसैः सार्धं वातपित्तज्वरा-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

पहम् ॥ अयं ज्वरांकुशो नाम रसः सर्वज्वरापहः ॥ ९६ ॥

हरिणके सींगके महीन टुकडे करके पात्रमें रख उसमें ज्वालामुखीका रस डालकर मुखपर शराव ढककर कपरोटी मिट्टीकर फिर चूल्हेपर रखकर नीचे उसके दो पहरपर्यंत अग्नि देवे जब शीतल हो जावे तब उन टुकडोंकी भस्मको बाहर निकालकर उस भस्मका आठवां भाग, सोंठ, मिरच, पीपल इनका चूर्ण करके उस भस्ममें मिलावे फिर उसमेंसे चार मासेके अनुमान पानके रसमें मिलाकर पीवे यह सम्पूण ज्वरोंका नाशक है ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

मृतसंजीवनी वटिका.

बचनाग, विष, सोंठ, मिरच, पीपल, गंधक, सुहागा भूना, तांबेका भस्म, धतूरेके बीज, सिंगरफ ये सब बराबर लेकर एक दिन भांगरेके रसमें खरल करे, पीछे चनेसमान गोली बनावे और आककी जडके कषायके संग गोली खिलावे तो सन्निपातज्वरका नाश होवे.

निंबाद्य चूर्ण.

निंबपत्रं वरा व्योषं यवानी लवणत्रयम् ॥ क्षारो दिग्वह्निरामेषुत्रिनेत्रक्रमशोंशकान् ॥ ९७ ॥ सर्वमेकीकृतं चूर्णं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

प्रत्यूषे भक्षयेन्नरः ॥ एकाहिकं द्व्याहि-
कं च तथा त्रिदिवसज्वरम् ॥ ९८ ॥
चातुर्थिकं महाघोरं संततं सततं दिवा॥
धातुस्थं च त्रिदोषोत्थं ज्वरं हंति न
संशयः ॥ ९९ ॥

नींबके पत्ते दस भाग, त्रिफला तीन भाग, अजवायन पांच भाग, तीनों नोन तीन भाग, जवाखार दो भाग इनका चूर्ण प्रातःकाल सेवन करे तौ एकाहिक, द्व्याहिक, तृतीयक, चातुर्थिक, संतत, सतत, धातुगत और त्रिदोषज्वर नष्ट होते हैं ॥ ९७ ॥ ९८ ९९ ॥

टाईफसफीवर (संधिकज्वर)

शीतल देशोंमें और शीतल स्थानोंपर और शीतकालमें अधिक मनुष्योंके इकट्ठे होनेसे और अकालके पडनेसे और मैले और मलीन स्थानोंसे स्पर्श की हुई दूषित पवनके कारणसे मरीके सदृश विष और छूतके लगनेसे यह ज्वर फैल जाता है. छूत लगनेके समयसे बारह दिनतक तौ कोई लक्षण विदित नहीं होता है. किसी २ को अल्प शीत लगता है, बेचैनी, आलस्य, सुस्ती, काहिली तथा कमरमें पीडा, तृषा अधिक, उबकाई, वमन और कभी मस्तकमें पीडा होती है. फिर अचानक जाडेसे ज्वर चढता है. जब

Indira Gandhi National Centre for the Arts

चेहरा सुस्त, किंचित् काला, मस्तकमें पीडा,नेत्र लाल, होठोंपर पापडी पडी हुई, जीभ भूरी रूखी बाहर निकालते समय कांपती है, भूख नष्ट हो जाती है, तृषा, अजीर्ण, कृशता (बल नष्ट), संध्यासमयपर बेचैनी अधिक होती है, रात्रिमें नींद नहीं आती है, हिजयान (रोगी बकवाद करता है), भ्रम, खामोशी (रोगी चुपचाप पडा रहता है), कदापि भ्रमकी दशामें नींद आ जावे तो लक्षण आरोग्य होनेके जानो और जो नींद न आवे तो कौमा (डिलेरियम) बेहोशी हो जाती है. उस समयपर नाडी एक मिनिटमें १५० से १६० वार फडकती है. देह उष्ण और रूखी हो जाती है, गरमी प्रथम सप्ताहमें तौ ज्वरके दूसरे दिन १०९ दरजेकी और तीव्रदशामें दो तीन दिनतक इससे भी अधिक होती है. यह गरमी अल्परोगदशामें एक सप्ताहतक तौ एक भांतिकी रहती है. पश्चात्को शनैः शनैः कम होकर दूसरे सप्ताहके अन्ततक क्राईसिर (बहरान) का समय होता है. अर्थात् ज्वर उतर जाता है और ऐसी दशा हो जाती है जैसी कि आरोग्य दशा होती है. कदापि दूसरे सप्ताहमें भी ये गरमी एकसी बराबर रहे और कम न होवे तौ यह तत्क्षण संधि और स्थानमें सूजन होनेका है. पांचवे छठे दिन पीठ, बगल, पहुँचा, कलाई, चेहरा, गर्दन इत्यादि स्थानोंपर सहतूतके रंगके

Indira Gandhi National Centre for the Arts

समान अर्थात् सहतूतफलकी भांतिके काले दाग फुँसियोंकी भांति उत्पन्न हो जाते हैं. जो कभी फूटकर (दूर दूर) और कभी परस्पर मिले हुए उत्पन्न होते हैं. रंग इन दागोंका सहतूतके रंगके समान होता है और फिर एक दो दिन पीछे ये ईंटके रंगसमान हो जाते हैं और कठोरताई भी इन्होंमें आ जाती है और अंततक इसी भांतिके रहते हैं. रोगकी अल्पदशामें दश दिनसे चौदह दिनके मध्यमें क्राईसिर (बहरान) होकर नाडी मंदगमनी और देहकी गरमी भी कम हो जाती है और ये दाग भी घटने लगते हैं. नींद तथा भूँक लगती है,जीभ साफ हो जाती है और बल भी आ जाता है और रोगकी तीव्रदशामें बारह दिनसे वीस दिवसपर्यंत दुष्ट लक्षण विदित होते हैं.यथा जीभ रूखी और भूरी, कभी पापडी पडी हुई काली, बाहर निकालते समय कांपती हुई, गनूदगी (तंद्रा), निद्राका नाश, देह जकड जाती है, करवट लेनेमें कष्ट होता है,हडफूटन, चेहरा सूख जाता है, मुखसे गंध आती है, सामर्थ्य जाती रहती है, मुख खुला रहता है, नेत्र आधे खुले रहते हैं, मूत्र कम और लालरंगका होता है, कभी मूत्र होताही नहीं है. ज्वरके नौवें दशवें दिन अधिक तंद्रा होती है, संज्ञा और ज्ञान नष्ट हो जाता है, जिसके कारणसे मल मूत्र निकल जाता है, पश्चात्को बेहोशी होकर वा ईंटें आने लगते हैं और प्राण जाते रहते हैं.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

टाईफस् फीवरकी चिकित्सा.

प्रथम ज्वरकी उत्पत्तिके कारणको दूर करे जो भूखे रहनेसे अकालके कारणसे हो तौ पेटभरकर भोजन करावे जिस स्थानपर ऐसा रोगी रहा हो तौ रोगीके चले जानेके पीछे उस स्थानपर सफेदी कराकर पवित्र कर देवे. रोगीको पवनदार स्थानमें रखे, पतले, हलके, आहारोंसे संतुष्ट राखे, मुनासिब औषधियां थोडे २ कालमें देते रहे, औषध देनेमें विलंब न होवे, कदापि विलंब होगी तौ रोगी मर जायगा.

सिरेविरोइस् पाइनल फीवर.

यह ज्वररूपी तीव्र व्याधी है. जो शीतकालमें विषैली दूषित पवनके हेतुकरके उत्पन्न होती है इसको सिरेविरोइस् पाइनल मिनन जाईटसभी कहते हैं.विशेषकरके इसकी उत्पत्तिका हेतु परिश्रम, थकावट, दूषित भोजन, शीतका लगना है. पंद्रह वर्षकी अवस्थासे लेकर और तीस वर्षकी अवस्थावालोंके यह उत्पन्न होता है. इसमें शीशके चमडेमें रक्त इकट्ठा होता है. दीमाग (मस्तक) और हराम मग्जकी छिल्लियोंमें सूजन होती है और दीमागके साइंसमें काले रंगका रुधिर किंवा रुधिरका लोथडा होता है. आरेकनाइडमें वरिनके नीचे अधिक सीरम किंवा लैम्फ होता है.यथा दीमाग (मस्तक) का तला लैम्फके निकलनेसे सफेद किंवा श्वेत पीलापन

लिये तथा हरा पीपसदृश होता है. दीमागकी साख्त (मस्तककी बनावट) में रुधिर बहुत आ जाता है, इसीसे बनावट कोमल पड जाती है. देहका रुधिर गाढा और काला हो जाता है. फैंफडा, जिगर, यकृत और प्लीहामें भी रुधिर इकट्ठा हो जाता है. विशेष लक्षण इसके कहते हैं. सरदी लगकर एक वारही ज्वर चढता है उस समय् देहकी गरमी एक सौ दरजेसे लेकर एक सौ तीन दरजेतककी होती है और नाडीका गम एक सौ वारसे एक सौ वीसवार तक फडकनेका होता है. श्वास शीघ्र शीघ्र चलता है, उलटी होती है, नेत्रोंकी पुतरियां (तारे) सुकड जाते हैं, सम्पूर्ण देहमें अतिपीडा होती है सो ये दरद एक दो दिनमें रीड (शंखभाग) में फैल जाता है, अजीर्ण होता है, पहिले तो होश रहता है फिर होश जाता रहता है, रोगी बकवाद करने लगता है, तंद्रा होती है, जिनका रोग तीव्र होता है उनको होश नहीं रहता है और कनवलजन्स (देह शीतल पड जाती है) अल्परोगकी दशामें हडफूटन होती है और तीव्र-रोगकी दशामें देहपर लाल काले धब्बे (दाग) पड जाते हैं. बांई ओरका नेत्र सूजकर बैठ जाता है और उसमें पीप पड़ जाती है. संधियोंमें एवसिस हो जाता है अर्थात् व्रणशोथ, फफोले हो जाते हैं और वरनकाई-टिस (खांसीका भेद है) और निमोनियां (फैंफडेमें

सूजन) और प्रेकार डाईटेस और पैरोटाईटिस इत्यादि रोग उत्पन्न होते हैं। इस ज्वरके पीडित सौ रोगियोंमेंसे चालीस रोगी तौ आरोग्य होते हैं बाकी साठ रोगी मर जाते हैं.

सिरेविरोइस पाइनल फीवरकी चिकित्सा.

रोग होतेही रोगी बलहीन हो तो इस्टूमेलेन्ट (बलदायक) औषधियां देवे यथा शराब (मद्य) और हल्का आहार देवे. जो शीघ्र पच जावे, देहको गरम रखे, आयोडाइड आफ् पुटासियमसे मस्तककी रतूबतको सोखता करे, मस्तककी पीडाकी शांतिके लिये कनपटी तथा कानके पीछे जोंक लगावे. मस्तक और रीढपर बर्फ रखे, बेचैनी शांति करनेको अफीम, मारफाइन, किलोरल हैडरेट, ब्रोमाइड आफ् पुटासियम, बिलाडोना इत्यादि देवे.

टाईफाइडफीवरका निदान.

आंतोंमें जब कुछ उपद्रव होता है तब टाईफाइड फीवर उत्पन्न होता है. इसीसे इसका नाम इनटीरेक फीवर भी है और आंतोंमें उपद्रव होनेको हेतु यह है कि मलमूत्रके स्थानोंमें सफाई न रखनेसे दुर्गंध आती है और मरे हुए पशुओंको गांवोंके समीप डाल देते हैं उन्होंकी भी दुर्गंधि फैलती है. यह दुर्गंध पवनमें मिलाकर वह पवन दूषित हो जाती है. जो पवनं मनुष्योंकी श्वासद्वारा

Indira Gandhi National Centre for the Arts

देहमें प्राप्त होकर विषरूपी हो जाती है और दूसरा हेतु दुर्गंधित पदार्थोंका भोजन करना और दुर्गंधित और दूषित जलका पान करनेसे भी आंतोंमें उपद्रव होते हैं तब यह ज्वर उत्पन्न होता है.जिसके लक्षण उस समयपर ये होते हैं–दस दिनसे चौदह दिनके कालमें इस विषका असर मनुष्योंको होता है तब सुस्ती आलस्य(काहिली) हो जाते हैं. सम्पूर्ण देहमें पीडा, दाह और भ्रम, पतले फीके दस्तोंका होना,पश्चात्को कभी जाडा लगताहै और कभी गरमी लगती है तब दिनके समय तंद्रा (गनूदकी झपनी) रात्रिके समय निद्राका नाश कदापि किंचित् निद्रा आवे भी तौ उस समयपर नानाप्रकारके भयानक आश्चर्य्यके स्वप्न दीखते हैं, भूक नष्ट हो जाती है, तृषा अधिक लगती है, कभी नकसीर फूट जाती है, जिह्वा मध्य भागमें मैली और नोक और किनारोंपर लाल हो जाती है.कपोलोंपर लाल रंगके धब्बे (दाग) पड जाते हैं.नाडी डाईक्रोटिस (भरी हुई) और बलहीन और भारी चलती है,श्वासमें दुर्गंधि आती है किसीका पेट फूल जाता, उस समय पेटके दबानेसे पेटमें पीडा होती है;उलटी और दस्त लग जाते हैं. कभी उलटी दस्त नहींभी लगते हैं लेकिन अक्सर यही दो हेतु इस रोगके प्रारम्भके हैं.न तौ करवट बदलनेसे चैन पडता है और न बैठनेसे आराम मिलता है.रात्रिके समय देह

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गरम और रूखी हो जाती है, उस दशामें देहकी गति गरमीकी १०४ दर्जेसे १०६ दर्जेतककी हो जाती है, कमजोरी हो जाती है, कांति मलीन पड जाती है, नेत्र घुस जाते हैं, मूत्र लाल रंगका होता है, सो थोडा होता है, कभी होता भी नहीं है. प्रथम सप्ताहमें ज्वर कम होता है (अर्थात् हल्का होता है) फिर दूसरे सप्ताहमें ज्वर धीरे धीरे बढता है. नौ दिनसे चौदह दिनतक लक्षणोंमें तीव्रता होती रहती है. यथा देहका चर्म गरम और रूखा, कभी किंचित् पसीनेके आनेसे नरम नाडी महीन बलहीन विना प्रबंध एक मिनिटमें १२० वार चलती है. श्वास जल्दी २ और दुर्गंधियुक्त चलती है, ओष्ठ रूखे सूखे पड जाते हैं. जीभका रंग श्वेत, जिसमें दरार पडी हुई, चमकती हुई, तथा लाल रंगकी, कभी भूरी पड जाती है, उदरमें शूल अधिक होता है, देहकी गरमी इस प्रकारकी हो जाती है कि प्रातःकालमें जो गरमी होती है, वह संध्या समय दो दर्जे अधिक हो जाती है और अगले दिन प्रातःसमयपर फिर एक दर्जा कम हो जाती है और फिर संध्याको दो दरजा अधिक हो जाती है. मूल बात यह है कि इसी भांति बढती कमती हुआ करती है और यह दशा चार पांच दिनतक रहती है.

गौरीशंकरका क्याखूबजीसे - प्रश्न–हे स्वामी ! यह

Indira Gandhi National Centre for the Arts

बात समझमें नहीं आई, इसलिये इस गरमीकी अधिकता और कम होनेको समझाइये.

उत्तर—जैसे संध्या समयपर गरमीकी गति १०२ दर्जेकी है तो दूसरे दिन प्रातःकालको १०१ दर्जेकी गरमीकी गति हो जायगी और फिर उसी दिन संध्यासमयको १०३ दर्जेकी हो जायगी और फिर तीसरे दिन प्रभात समय १०२ दर्जेकी और फिर उसी दिन संध्यासमयको १०४ दर्जेकी हो जायगी. यह बात खास टाईफाइड फीवरकी गरमीमें होती है और चार पांच दिनतक बराबर रहती है और कठिन व्याधिसे पीडित रोगियोंको यह गरमी १०७ तथा १०८ दर्जेतककी हो जाती है और इसका उतार फिर इस भांतिसे होता है अर्थात् चौथे सप्ताहमें लाइसस होकर ज्वर इस प्रकारसे उतरता है कि प्रथम तो प्रभातके समयपर गरमी कम होने लगती है फिर तीन चार दिन पीछे संध्या समयपर भी गरमी कम होने लगती है. ज्वरसे सातवे किंवा आठवे दिन हृदय (सीना) और सिकम (उदर) पर गोल फुंसियां गुलाबी रंगकी फूटकर निकलने लगती हैं और वे चार दिनतक रहती हैं; फिर ये फुंसियां नष्ट हो जाती हैं फिर दूसरे स्थानपर इसी भांतिकी फुंसियां निकलती हैं, इसी भांतिसे ज्वरके सातवें दिनसे और तेईसवेंदिनतक इसी प्रकारसे

Indira Gandhi National Centre for the Arts

फुंसियां उत्पन्न होती रहती हैं और नष्ट होती रहती हैं. कदापि अल्परोग हो तो उसमें अधोंडियां अर्थात् छोटी महीन फुंसियां निकलती हैं और वे दूसरे सप्ताहमें नष्ट हो जाती हैं, परंतु तीव्र व्याधियोंमें पेट ढोल सरीखा फूल जाता है. प्लीहा बढ जाती है, उबकाई आती है, उलटी होती है और दस्त पतले पीले कुछ गदले दुर्गंधित होते हैं.नाडीकी चाल और देहकी गरमी बढ जाती है. कानोंमें सनसनाहटसा शब्द होता रहता है. कोई २ रोगी बहरा भी हो जाता है, भ्रम होकर रोगी बकवाद करने लगता है, हुचकियां आती हैं, शरीर कृश होकर खाटमें लग जाता है,सामर्थ्य जाती रहती है, न कुछ खाता है, न भोजनकी इच्छा रहती है, दस्त बराबर होते रहते हैं. जब अत्यंत देह कृश हो जाती है तब हाथ पांव कांपते हैं, देहमें भडकन हुआ करती है, संज्ञा भी नष्ट हो जाती है, रोगी मल मूत्र विस्तरपरही त्याग देता है, और तंद्राके पश्चात्त बेहोशी होकर रोगी अपने प्राणोंको त्याग देता है.

दूसरा प्रकरण यह है कि तीसरे सप्ताहके अन्त और चौथे सप्ताहके आदिमें धीरे धीरे जब ज्वर उतरने लगता है तब नाडी कम फुदकती है, जीभ साफ हो जाती है, भूख लगती है, दस्त बंद हो जाते हैं, रोगीको बैठनेके लिये बल आ जाता है.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गौरीशंकरका चौबे क्याखूबजी हकीमसे प्रश्न–दाने फुंसियां सम्पूर्ण रोगियोंके निकलती हैं, या नहीं ? निकलती हैं तौ और क्या क्या लक्षण हो जाते हैं ?

उत्तर–सम्पूर्ण रोगियोंको फुंसियां नहीं निकलती हैं, न सब रोगी बकवाद करते हैं, बल भी बना रहता है, किसी किसीकी आंतोंमें घाव भी नहीं होते हैं और दस्त नहीं होते किन्तु अजीर्ण होता है. बालकोंके ज्वरके लक्षण भी इसी प्रकारके होते हैं, इसलिये हम प्रथम इस स्थानपर बालकोंके ज्वरका भी निदान कहते हैं.

इन्‌फन्‌टायल रिमिटंट फीवर (बालकोंका ज्वर).

बालकोंके टाइफाइड फीवरको इन्‌फन्‌टायल रिमिटंट फीवर कहते हैं और ये दो प्रकारके होते हैं.

१ खफीफ (अल्प) जिसमें सम्पूर्ण लक्षण अल्पही होते हैं.

२ शदीद (तीव्र) कि जिसमें सम्पूर्ण लक्षण तीव्र ही होते हैं.

गौरीशंकरका चौबे क्या खूबजी हकीमसे प्रश्न–हे स्वामी ! कृपा करके दोनोंको जुदे जुदे लक्षण कहिये.

चौबे क्याखूबका उत्तर–खफीफ(अल्प)ये विना जाने उत्पन्न होता है अर्थात् इसके प्रारंभ होनेकी खबर नहीं होती है, भूख नष्ट, प्यास कुछ अधिक, बालक सुस्त और

Indira Gandhi National Centre for the Arts

काहिल हो जाता है.ये लक्षण तौ इसके प्रारंभके हैं.दिनमें बालक चुप पडारहता है,चिडचिडादा स्वभाव हो जाता है, संध्यासमयपर तंद्रा (झपनी) होती है, रात्रिमें नींद आती नहीं है,बेचैनी बहुत होती है फिर कुछ काल व्यतीत होनेपर देह कभी शीतल,कभी गरम रहा करती है, मुखसे दुर्गंध आने लगती है, दस्त पतला दुर्गंधियुक्त हो जाता है, नाडी शीघ्रगमनी होनेसे गणनामें नहीं आ सकती है. यह रोग रिमिटंटकी भांतिका है. प्रभातको तबीयत अच्छी मालूम होती है लेकिन संध्याको गरमी जाती है और ज्यों ज्यों रात्रि होती है त्यों त्यों गरमी बढ़ती जाती है. दूसरे सप्ताहमें बेचैनी अधिक होती है, बालक रात्रिको कराहता (कांखता) है,दांत पीसता है, किलाकरी मारकर चौंकता है, पानी पानी पुकारता है, उलटी होती है,कभी बकवाद करता (बडबडाता) है.इस सप्ताहमें चौवीस घंटेके भीतर ज्वर एकवार कभी दो वार चढता है अर्थात् एक ग्यारह बजे दिनके चढकर तीसरे पहरको कम हो जाता है और फिर दो वार संध्याको चढता है और पिछली रात्रिको कम हो जाता है.देहका चर्म रूखा पड जाता है, बालक अपनी नाक और मुँहको नोंचता है,जिह्वा मध्यभागमें मैली और किनारोंपर लाल हो जाती है, पेट फूल जाता है, दस्त लग जाते हैं, मल सडा हुआ निकलता है. तीसरे सप्ताहके

Indira Gandhi National Centre for the Arts

प्रारंभमें सम्पूर्ण लक्षण कम हो जाते हैं. भूख लगती है. रोगी धीरे धीरे आरोग्य हो जाता है, यह साध्य है.

२ तीव्र (शदीद) इसमें सब लक्षणोंमें तीव्रताई होती है तथा चेहरेपर चिन्ता भ्रम और भारी मालूम होता है. मस्तकमें शूल,वमन, गफलत इत्यादिक होते हैं. छः दिनसे दस दिनके बीचमें पेट पीठ और सीना (हृदय)पर गुलाबी रंगके दाग (बूंद) फुंसियां उत्पन्न होती हैं. ये दाने कभी खूब साफ होते हैं, कभी अंधोरी (मडोडी) के समान प्रगट होते हैं. ज्यों ज्यों लक्षणोंमें तीव्रता होती जाती है त्यों त्यों गफलत और वमन भी बढती जाती है. बालक श्वास जल्दी जल्दी लेता है और हृदय (सीने) में दरद होता है, उस समय सूखी खांसी भी उठा करती है.भूरे रंगका पतला दस्त हो जाता है. दूसरे सप्ताहके अन्ततक बालककी देह सूख जाती है, बलहीन होनेसे सामर्थ्य जाती रहती है और अचेत पडा रहता है. नाडी भी धीरगमनी हो जाती है, देहकी गरमी १०३ दर्जेसे १०९ कभी १०८ दर्जेतक हो जाती है. तीसरे सप्ताहमें बालक अधिक कृश, बलहीन, असमर्थ हो जाता है. गफलत, बेहोशी बढ़ जाती है. रोंठन वायटे देहमें आने लगते हैं सो बालक अपने प्राणोंको त्याग देता है, लेकिन कभी ऐसा

Indira Gandhi National Centre for the Arts

भी हो जाता है कि सम्पूर्ण लक्षण नष्ट और दुष्ट होनेपरभी बेमालूम धीरे धीरे बालक आरोग्य हो जाताहै.

गौरीशंकरका चौबे क्याखूबजीसे प्रश्न–इस ज्वरसे आरोग्य हो जानेके लिये कुछ मर्यादा है या नहीं है ? और है तो कितनी मर्यादामें आरोग्यता होता है ?

क्याखूबका उत्तर–इस विषयमें ऐसा लिखा है कि, धीरे धीरे यह रोग नष्ट होता है. कभी पसीना आनकर तथा दस्त लगाकर तथा पसीना और दस्त दोनों आनकर वा पित्तयुक्त वमन होकर ज्वर अचानक उतर जाता है. आरोग्य होनेकी मर्यादा इक्कीस दिन तथा तीस दिनकी है.कदापि अन्य रोगोंका उपद्रव हो यथा फैंफडोंमें व्याधि उत्पन्न हो आवे तो रोगी चालीस दिनमें आरोग्य होता है. आरोग्य होनेके पश्चात् कभी यह रोग फिर भी उत्पन्न हो आता है.

टाइफाइड फीवरसे पीडित सौ रोगियोंमेंसे सोलह रोगी मर जाते हैं अर्थात् सैंकडे पीछे सोलह मरते हैं और मौत वीस दिनसे तीस दिनके भीतर होती है. आंतोंमें आरपार घाव होजानेसे रोगी फिर नहीं बचताहै.

टाइफाइड फीवरकी चिकित्सा.

मलमूत्र स्थानोंकी भले प्रकारसे सफाई कर देवे, जिस समयपर मलमूत्र स्थानकी सफाई होवे उस समय दुर्गंधसे बचे,तालाव इत्यादि स्थान,पीनेके पानीमें मल

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मूत्र मिलाकर पानी दूषित हो गया हो तौ उस पानीको निकाल देवे. प्रारंभ होनेसे रोगीको शैयापर रखे एक कदम भी चलने फिरने न देवे. क्योंकि चलनेसे आंतोंमें सूजन और घाव हो जाते हैं. प्रारम्भमें जो अजीर्ण हो तौ अरंडका तेल पिलाकर मलकी शुद्धि करे तथा क्षार और निमक इत्यादि औषधि न देवे. वाइन्में इपीक्याक् अठारह किंवा वीस घंटे पीछे उलटी करानेको देना हित है. रक्तकी शुद्धिके लिये नाइटिरोन्यूरेटिक एसिड डायलूटिड बहुत पानीमें किंचित् शक्कर मिलाकर देते हैं. तबीयत (प्रसन्नता) के लिये कोइनाइन् और जैनशियन् भी मिला देते हैं.किरेट आफ् पुटासियम् आक्सिजन (प्राणवायु) देहमें पहुँचानेके लिये देते हैं और किलोरिक ईथर वीस बूंद, इनफियूजन जैनशियन एक औंस मिलाकर इसी प्रकारकी तीन मात्रा देवे.जब यह रोग निश्चय कर लिया हो तब टरपेंटाइन और लाइकरपुटासी प्रत्येक दो ड्राम, मियूसज्नि आफ् गम्, औक्सिया चार ड्राम सिरफ् आफ् पापीज् और सिरप् आफ् आरेंज प्रत्येक आठ ड्राम, क्यांफरवाटर इतना लेवे कि जिससे सब मिलाकर आठ औंस होजावे. इसमेंसे चार ड्रामकी मात्राके हिसाबसे चार.चार घंटेके अन्तरसे बराबर रोगके अंततक देते रहें. जिल्द (चर्म देह) का कार्य्य अधिक करनेको डाईफारेटिक् (स्वेदन

पसीना निकालनेवाली औषधि देवे जैसा कि कार्बोनेट आॅफ् एमोनिया, लाइकर एमोनिया, ऐसीटिटस और गरम पतले पदार्थ पिलावे. गरम जलसे स्नान किंवा बफारा देवे और लोथैंग डिलेरियम (बकवाद) और बेहोशी (कौमा) तामसी निद्रा हो तौ प्रतिदिन दो तीन वार रोगीको आधे घंटेतक गरम पानीसे बैठा दिया करे और जब जाडा लगने लगे तब पानीसे निकालकर पोंछकर बिस्तरपर सुलाकर ऊपरसे कंबल उढा दिया करे और गुरदेका कार्य्य अधिक करनेसे डाईफारेटिक्स जैसे नाइट्रिक ईथर जूनपर कम्पौंड, डिकाकशन आॅफ् ब्रोमटस् इत्यादिक देवे. जहांतक पीसके वहांतक चाह और काफी पिलावे. दस्तोंको एक वारही बंद न करे जब अधिक दस्त होने लगें और रोगीका बल क्षीण होने लगे तो केवल डोवर्स पौडर या कार्बोनेट आॅफ् विसमथके साथ देवे. तीव्र अतिसारमें एसिटेट्र आॅफ् लिड, सल्फेट आॅफ् कॉपर, नाइटिरेट सिलवर हित है.लकोइड अक्स, टिराकट आॅफ् ओपियम दससे वीस बूंद, निसास्तामें मिलाकर पिचकारीसे गुदाद्वारा पहुँचावे (बस्तिकर्म करे), उदरके शूलकी शांति करनेके लिये पोस्त तारवीनसे पेटपर सेक करे तथा अलसीकी पुलटीस बांधे किंवा मस्टर्ड प्लास्टर लगावे जो इन औषधियोंसे फायदा न होवे और दस्तभी

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अधिक न होते हों तौ केवल तारवीनका तेल एक ड्राममें किंचित् हींग मिलाकर इसी भांतिकी मात्रा छः छः घंटेके अन्तरसे देवे और गरम पानीसे बस्तिकर्म करे. जो आंतोंके घाव फट गये हों तो केवल अफीम खिलावे. भोजन न करावे, लेटा रहने देवे, गरम पानीसे पेटको सेक देवे और आक्सटिराकट ऑफ् बिलाडोना और आक्सटिराकट ऑफ् पापीज् मिलाकर लेप करे. जो आंतोंसे रुधिर निकलता हो तौ टान्क एसिड्, गिलेक एसिड्, तारविनका तेल दस पंद्रह बूँद, टिन्चर इस्ट्रील इत्यादिकका सेवन करे बर्फ चुसावे. भोजनका प्रबंध इस प्रकारसे कर देवे कि प्रथम सप्ताहमें यखनी और दूध खिलावे लेकिन दूध न पचे और उलटी हो जावे तौ थोडा सोडावाटर तथा लाइम वाटर मिलाकर पिलावे तथा हालका दूध मीठा डालकर पिलावे. दूसरे सप्ताहमें अंडा और हलके पदार्थ जो शीघ्र पच जावें सो खिलावे. किसी २ रोगीको प्रारम्भमेंही शराब पिलानेकी कुछ जरूरत नहीं होती है. लेकिन जब कृश हो जावे अर्थात् बल क्षीण हो गया होवे तब शराब पिलावे.जब कोलप्स की दशा हो जावे किंवा प्रारम्भहीसे दुष्ट लक्षण हों तब शराब हित होती है. साबूदानेका पथ्य देवे.

कैम्फर वाटर बनानेकी विधि.

कैम्फर नाम कपूरका है. वाटर नाम पानीका है.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

आधे औंस कपूरको मलमलके महीन वस्त्रमें बांधकर एक ग्यालन पानीमें एक कांचकी नालीके द्वारा इस-भांतिसे रखे कि जो पात्रके पैंदेपर टिक जावे फिर डाटसे बंद कर दो दिनतक रखे इसीका नाम कैम्फर वाटर है.

सोल्यूशन ऑफ् लाइम.

लाइम् नाम खानेके चूनेका है. चूनेका पानी इस भांतिसे बनाते हैं, बुझा हुआ चूना दो औंस और पानी एक ग्यालन या जितना जरूर हो लेवे. प्रथम चूनेको धो डाले फिर एक डाट लगी बोतलमें पानी भरकर उसमें धुले चूनेको डालकर दो तीन मिनिटतक खूब हिलावे और बारह घंटेतक रख देवे. जब चूना पानीमें बैठ जावे तब उस ऊपरके पानीको नितारकर एक डाट लगी हुई बोतलमें भरकर रखे पवनका प्रवेश इसमें न होने पावे.

सकरैटेड सोल्यूशन ऑफ् लाइम (चूनेका मीठा पानी)

बुझा हुआ चूना एक औंस तथा एक भाग, शक्कर दो औंस तथा दो भाग और पानी एक पाइंट तथा वीस भाग लेकर प्रथम चूनेको खरलमें शक्करसहित पानी डालकर खूब घोट पीसकर एक बोतलमें थोडी देरतक रखे और हला दिया करे, जब चूना पैंदीमें बैठ जावे तब उस पानीको नितारकर दूसरी बोतलमें भर डाट लगा-कर रख छोड़े. मात्रा इसकी पंद्रह बूंदसे एक फिल्यूड ड्रामतककी है.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मियूसलिज् ऑफ् गमएकिशिया.

गोंदका लुआवका नाम मियूसलिज् ऑफ् गमएकिशिया है. बनानेकी विधि यह है—गम (गोंद) चार औंस तथा दो भाग आवमुक्तर (टपकाया हुआ शुद्ध जल), छः फिल्यूड औंस तथा तीन भाग दोनोंको मिलाकर एक पात्रमें रखकर ढकदेवे और कभी २ हिला दिया करे जब गोंद घुल जावे तब महीन वस्त्रसे छानकर रख लेवे.

लन्सैड् पुलटिस (अलसीकी पुलटिश)

लन्सैड नाम अलसीका है. जिसके बनानेकी विधि यह है. अलसीकी खल चार औंस तथा दो भागको लेकर खौलते हुए पानी दस फिल्यूड औंस तथा पांच फिल्यूड भागमें डालकर मिला लेवे.

सिरप् ऑफ् पापीज (शर्बत खशखाश).

पापीज नाम अफीमके डोटे जिसको पोस्त कहते हैं, उसका है. इसका शर्बत बनाते हैं जिसको शर्बत खशखाश कहते हैं. शर्बत बनानेकी विधि यह है कि, पोस्तका चूर्ण महीन पीसा हुआ लम्बर २० का छत्तीस औंस लेकर चार पाइंट खौलते हुए पानीमें डालकर चौवीस घंटेतक भीने देवे, फिर ऊपरसे और खौलता हुआ गरम पानी इतना डाले कि वह सब्र पानी दो ग्यालन हो जावे फिर इस कदर एयो पोरेट् करे कि केवल तीन पाइंट रह जावे. शीतल होनेके पीछे इसमें

सोलह फिल्यूड औंस शराब मिलाकर बारह घंटेतक रखकर फिर छान लेवे और चार पौंड शक्कर मिलाकर चासनी कर रख लेवे.

रसधातुगत ज्वरलक्षण.

गुरुता हृदयोत्क्लेशः सदनं छर्द्यरोचकौ ॥ रसस्थे तु ज्वरे लिंगं दैन्यं चास्योपजायते ॥ १०० ॥

अब रसधातुगत ज्वर कहते हैं.जिसमें अंगका भारीपना, मतिलाई, अंग शिथिल, वांति, अरुचि और दीनता ये लक्षण होते हैं ॥ १०० ॥

मांसगत ज्वरलक्षण.

पिण्डिकोद्वेष्टनं तृष्णा सृष्टमूत्रपुरीषता ॥ उष्मान्तर्मोहविक्षेपौ ग्लानिः स्यान्मांसगे ज्वरे ॥ १०१ ॥

मांसगत ज्वरमें पिंडरिनका ऐंठना, प्यास, पेशाब और झाडेका होना, अंतर्दाह, मोह और हाथ पांव इत्यादिकोंका फेंकना ॥ १०१ ॥

मेदोगत ज्वरलक्षण.

भृशं स्वेदस्तृषा मूर्च्छा प्रलापश्छर्दिरेव च ॥ दौर्गन्ध्यारोचकौ ग्लानिर्मेदस्थे चासहिष्णुता ॥ १०२ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अतिशय पसीना, प्यास, मूर्छा, प्रलाप, वांति, शरीरमें दुर्गंध, अरुचि, ग्लानि और असहनपना होना ॥ १०२ ॥

रक्तगत ज्वरलक्षण.

रक्तनिष्ठीवनं दाहो मोहश्छर्दनविभ्र-
मौ ॥ प्रलापः पिडिका तृष्णा रक्तप्रा-
प्ते ज्वरे नृणाम् ॥ १०३ ॥

रक्त थूकना, दाह, मोह, उलटी, भ्रम, बडबड, बकना, फोडा, फुंसी और तृषा ये लक्षण होते हैं ॥ १०३ ॥

अस्थिगत ज्वरलक्षण.

भेदोऽस्थ्नां कूजनं श्वासो विरेक-
श्छर्दिरेव च ॥ विक्षेपणं च गात्राणा-
मेतदस्थिगते ज्वरे ॥ १०४ ॥

हडफूटनी, कांखना, श्वास, अतीसार, वमन, हाथपांवका पटकना ये लक्षण हाडमें प्राप्त हुए ज्वरके हैं ॥१०४॥

मज्जागत ज्वरलक्षण.

तमःप्रवेशनं हिक्का कासः शैत्यं वमि-
स्तथा ॥ अन्तर्दाहो महाश्वासो मर्म-
च्छेदश्च मज्जगे ॥ १०५ ॥

मज्जागत ज्वरमें ऐसा मालूम पडा करता है जैसे मानो अंधेरेमें गये, हुचकी, कास, ठंड लगना, वांति होना,

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अंतर्दाह, महाश्वास और मर्मस्थानोंमें छेदनेसरीखी पीडाका होना ॥ १०५ ॥

शुक्रगत ज्वरलक्षण.

मरणं प्राप्नुयात् तत्र शुक्रस्थानगते ज्वरे॥शेफसः स्तब्धता मोक्षः शुक्रस्य तु विशेषतः ॥ १०६ ॥

शुक्रगत ज्वरमें लिंगका खडा होना और वीर्य्यका विशेष पात होना ये लक्षण होते हैं॥ १०६ ॥

रिलेपसिंग फीवर.

जब अकाल पडता है तब यह ज्वर उत्पन्न होता है. हेतु उत्पत्तिका-समयपर भोजनके न मिलनेसे, अधिक मनुष्योंका इकट्ठा होना, मलीन अपवित्र रहना इत्यादि हैं. चार दिनसे दस दिनके भीतर छूतके लगनेसे और किसीको छूतके लगतेही असर होता है तब एकवारही देह कांपकर ज्वर चढता है, कांति नष्ट हो जाती है, नेत्र बैठ जाते हैं और उनके चारों ओरको गोलाकर (चक्र) पड जाते हैं, दो दिनतक तो प्रभातको गरमीकी गती १०२ दरजेकी और संध्यासमयको १०४ दर्जेकी होती है; फिर १०८ दर्जेतक बढ जाती है. नाडीका गमन १४० वार फडकनेका होता है, भूख, तृषा दोनों अधिक हो जाते हैं. रोगीकी सामर्थ्य उठने बैठनेकी नहीं रहती है. संधिओंमें पीडा, पित्तयुक्त

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वमन, प्लीहा यकृत् जिगर बढ जाते हैं और कभी कमलवायु पीलियाका रोग हो जाता है, मूत्र रुधिरयुक्त और कम होता है, कभी मूत्र होताही नहीं है, ऐसी दशामें गनूदगी (तंद्रा), झपनी, कोमा (बेहोशी) जिसको तामसी निद्रा कहते हैं, मूर्च्छा कन्वलजन्स (आक्षेप, शरीरमें ऐंठन, वांयटे) आते हैं, किसी २ के पेट और पावोंपर लाल रंगके धब्बे (फुंसियां) पड जाते हैं, रात्रिके समयपर येही लक्षण तीव्र हो जाते हैं. यथा हिजयान (डिलेरियम) अर्थात् बकवाद रोगी करने लगता है, नींद नहीं आती है, गफलतमें भयानक स्वप्न दिखाई देते हैं, तीन दिनसे पांच दिनतक ज्वर निरंतर एकसा चढा रहता है, कभी किंचित पसीना आता है, पांचवे तथा सातवे दिन कभी दशवें दिन ज्वर उतर जाता है तब नाडी ४० वार फड़कती है. फिर आठ सात दिनतक तो रोगी अच्छा रहता है पश्चात् यह ज्वर फिर चढता है, परंतु प्रथमकी भांतिसे दुबारा कम चढता है. सो दो तीन दिनतक रहकर उतर जाता है,इसी भांतिसे यह ज्वर दो तीन चार वार चढता और उतरता है फिर धीरे धीरे रोगी आरोग्य भी हो जाता है. केवल कमजोरी पांच छः सप्ताहतक रहती है. कोई रोगीको लपिस (शीत आनकर) तथा इस्थमेंनिया और कौमाके उपद्रवसे मर भी जाता है.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

इस ज्वरसे पीडित मनुष्य सैंकडा पीछे तीन मरते हैं और ९७ आरोग्य होते हैं. डायरिया (अतीसार) और डिसेंटरी (मडोडा चिवाही) इत्यादि रोग उत्पन्न होकर अपने २ उपद्रव करते हैं. कदापि गर्भिणीको ये ज्वर आवे तौ गर्भ क्षीण हो जाता है.

रिलैपसिंग फीवरकी चिकित्सा.

वमन और दस्त करानेकी आवश्यकता हो तौ जुलाब देवे, उलटी करावे फिर एक ड्राम शौरा एक पाइंड पानीमें मिलाकर पिलानेसे आराम होता है. अफीम और किलोरल हैडरेट मस्तकके शूल और देहकी भडकन और उलटी बंद करनेको हित है. नेत्रोंकी पीडा नष्ट करनेको कानके पीछे प्लास्टर लगावे (अर्थात् फफोला उठावे) एट ओपियाका सोल्यूशन नेत्रोंमें डाले.

आगंतुकज्वरनिदान.

अभिघाताभिषंगाभ्यामभिचाराभिशापतः ॥ आगंतुर्जायते दोषैर्यथास्वं तं विभावयेत् ॥ १०७ ॥

अवघातसे अर्थात् चोट लगनेसे, अभिषंगसे अर्थात् भूतादिकोंके लगनेसे, अभिचार अर्थात् तंत्र मंत्रके प्रयोगसे, अभिशापसे अर्थात् गुरु इत्यादिकोंके शापसे आगंतुक ज्वर होता है ॥ १०७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कामशोकभयाद्वायुः क्रोधात्पित्तं त्र-
यो मलाः ॥ भूताभिषंगात् कुप्यंति
भूतसामान्यलक्षणाः ॥ १०८ ॥ श्या-
वास्यता विषकृते तथातीसार एव च ॥
भक्तारुचिः पिपासा च तोदश्च सह
मूर्च्छया ॥ १०९ ॥ औषधीगंधजे मू-
र्च्छा शिरोरुग्वमथुस्तथा ॥ कामजे
चित्तविभ्रंशस्तंद्रालस्यविभोजनम् ॥
हृदये वेदना चास्य गात्रं च परिशु-
ष्यति ॥ ११० ॥

काम शोक और भयसे वायुका कोप होता है और क्रोधसे पित्त तथा भूताभिषंगमें तीनों दोष कुपित होते हैं. वेही दोष भूतोंके सामान्य लक्षण हैं अर्थात् भूताभिषंगसेभी वेही लक्षण होते हैं.जो विष खाने इत्यादिसे जो ज्वर उत्पन्न होता है उसमें मुख(चेहरे)पर श्यामता तथा अतीसार, भोजनपर अरुचि,तृषा,देहमें सुई छेदने समान वेदना और पीडा, मूर्च्छा ये लक्षण होते हैं.जो औषधी सूंघनेसे ज्वर होता है उसमें मूर्च्छा, मस्तकमें पीडा,वांति ये लक्षण होते हैं तथा कामज्वरसें चित्तभ्रम, तंद्रा, आलस्य, अन्नपर अरुचि, हृदयमें पीडा और शरीर सूखता है ॥ १०८–११० ॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

स्त्रीके कामज्वरके लक्षण.

मूर्च्छांगमर्दतृण्नेत्रचापल्य कुचवक्त्रयोः ॥ स्वेदः स्यात् हृदि दाहश्च स्त्रीणां कामज्वरे भवेत् ॥ १११ ॥

स्त्रीके कामज्वर होनेसे मूर्च्छा, अंगमें फूटन, तृषा, नेत्रोंमें चपलता, कुच और चेहरेपर पसीना, हृदयमें दाह ॥ १११ ॥

विषमज्वरनिदान.

दोषोंल्पोऽहितसम्भूतो ज्वरोत्सृष्टस्य वा पुनः ॥ धातुमन्यतमं प्राप्य करोति विषमज्वरम् ॥ ११२ ॥ यःस्यादनियतात्कालाच्छीतोष्णाभ्यां तथैव च ॥ वेगतश्चापि विषमो ज्वरः स विषमः स्मृतः ॥ ११३ ॥

अहित आहार विहारसे उत्पन्न हुआ,वातादि अल्प दोषसे अथवा ज्वर गये पीछे जो अल्प दोष रहा सो सप्त धातुओंमेंसे कोई भी एक रक्तादि धातुमें प्राप्त होकर विषमज्वर करता है. जो ज्वर शीत उष्ण करके तथा कालनियम विना प्राप्त होय और वेगकरके विषम होय अर्थात कभी कम और कभी अधिक वेग होवे सो विषमज्वर कहा है ॥ ११२ ॥ ११३ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

विषमज्वरके भेद.

संततः सततोऽन्येद्युस्तृतीयकचतुर्थकौ ॥ ११४ ॥

संतत (जिसको डाक्टरीमें क्यूटीडैन फीवर कहते हैं), सतत (डबल क्यूटीडैन फीवर कहते हैं), अन्येद्यु, तृतीयक (टरशियन फीवर) और चतुर्थक (जिसको क्वारटन फीवर कहते हैं) ऐसे पांच भेद विषमज्वर (इन्टरमेटंट फीवर) के होते हैं. संततको इममीटीटेंट फीवर भी कहते हैं ॥ ११४ ॥

विषमज्वर (इन्टरमेटंट फीवर).

सप्ताहं वा दशाहं वा द्वादशाहमथापि वा ॥ संतत्या यो विसर्गी स्यात्संततः स निगद्यते ॥ ११५ ॥ अहोरात्रेः सततको द्वौ कालावनुवर्तते ॥ अन्येद्युष्कस्त्वहोरात्रादेककालं प्रवर्तते ॥ तृतीयकस्तृतीयेह्नि चतुर्थेऽह्नि चतुर्थकः ॥ ११६ ॥

सात दिन किंवा दस दिन अथवा बारह दिनतक निरंतर एकसा रहकर उतरे सो ज्वर संतत है इसमें वात प्रधान सात दिन, पित्त प्रधान दस दिन और कफ प्रधान बारह दिन पर्यंत एकसा रहकर जाता है. सतत-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ज्वर एक रात्रि दिनमें दो वार चढता है और उतरता है. अन्येद्यु ज्वर एक रात्रि दिनभरमें एकही समय चढता है और उतरता है, तृतीयक ज्वर तीसरे दिन प्राप्त होता है और चतुर्थिक ज्वर चौथे दिन प्राप्त होता है. विशेष डाक्टरीमतसे आगे कहेंगे ॥११८॥११६॥

इन्टरमेटंट फीवर.

इस ज्वरका नाम यूनानी भाषामें तपेनौवती है. डाक्टरी भाषामें इन्टरमेटंट फीवर और मारश फीवर और पिल्यूडल फीवर और एग्यू फीवर और प्रसिद्ध नाम तपलर्जा और जाडाजुडीका ज्वर है. उत्पत्ति इस की तालावों और झीलोंके ओर घासके स्थानोंमें मलेरियाके कारणसे होती है.

गौरीशंकरका क्याखूबजीसे प्रश्न–कृपानाथ! ये मलेरिया क्या है?

क्याखूबका उत्तर–मलेरिया एक भांतिकी विषैली पवन है जो गरमी और शीतलताके हेतु (वर्षाके कारण करके) पत्ते, घास, पोख इत्यादि सड जाते हैं उनके स्पर्श करके पवन दूषित विषैली होकर मनुष्योंकी देहमें प्राप्त होकर ज्वरको उत्पन्न करती. है और भी कारण मलेरियाकी उत्पत्तिके हैं. जैसे गरम देशोंमें जहां तालाव, झील, घास, बंगालमें सुंदर वन और नैपालमें तराई और वे देश जो नीचे हैं और वर्षाका पानी जहां

Indira Gandhi National Centre for the Arts

भरा रहता है और उस पानीमें घास पत्ते सड़ा करते हैं और नदियोंके चढ आनेसे अनेक स्थानोंमें पानी भर जाता है और वर्षाकाल व्यतीत होनेपर सूर्य्यकी गरमीसे पृथ्वी सूखने लगती है जब दुर्गंधि फैलती है और तालाब झील सूखते हैं तथा खेतीके लिये प्रथमवार खेतोंमें पानी भर देते हैं उस पानीके सूखनेसे तथा न्हेरके खोदने और साफ करनेसे तथा जंगलके काटनेसे और उसके आबाद करनेसे ये मलेरिया उत्पन्न होता है. जिस वर्षमें उष्ण कालमें गरमी अधिक पडे तब वर्षाके पश्चात् मलेरिया अधिक फैलती है और संध्यासमय और प्रातःकालको ये तीव्र होती है, जो नीचे देशोंमें अधिक कष्टदायक होती है.

गौरीशंकरका प्रश्न–इन्टरमेटंट फीवरके उत्पत्तिका और भी कोई हेतु है या केवल मलेरियाही है ?

क्याखूबका उत्तर–मुख्य हेतु तौ मलेरियाही है परन्तु दूषित भोजन, दूषित जल, परिश्रम, अधिक चलना फिरना, सरदी इत्यादि और भी हैं.

गौरीशंकरका प्रश्न–किस अवस्थामें यह ज्वर उत्पन्न होता है ?

क्याखूबका उत्तर–यह ज्वर सम्पूर्ण अवस्थाओंमें उत्पन्न होता है, परन्तु विशेषकरके तरुणावस्थामें उत्पन्न होता है.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

गौरीशंकरका प्रश्न—इस ज्वरके भेद कौन २ हैं ?

चौबे क्याखूबका उत्तर—भेद इस ज्वरके बहुत हैं. जैसा रोजाना बुखार(नित्यप्रतिका आनेवाला ज्वर), तिजारी (तृतीयक), चौथिया (चातुर्थिक)और पांचवे तथा छठे दिन आनेवाला तथा वर्षा व्यतीतपर आनेवाला इत्यादिक हैं परन्तु मुख्य ये तीनही भेद रखे गये हैं.

१ क्यूटीडइन फीवर (संततः तथा नित्यप्रतिका ज्वर), और २ टरशियन फीवर (तृतीयक) और ३ क्वारटन फीवर (चातुर्थक) येही इन्टरमिटंटके भेद हैं. जिसकी तीन अवस्था है.

गौरीशंकरका प्रश्न—वे तीन अवस्था कौन कौनसी हैं?

क्याखूबका उत्तर—प्रथम शीत लगता है, फिर गरमी लगती है, फिर पसीना आनकर ज्वर उतर जाता है. यथा—

त्वक्स्थौ श्लेष्मानिलौ शीतमादौ जनयतो ज्वरम् ॥ तयोः प्रशांतयोः पित्तमंतर्दाहं करोति च ॥ ११७ ॥ करोत्यादौ तथा पित्तं त्वक्स्थं दाहमतीव च ॥ तस्मिन्प्रशांते त्वितरौ कुरुतः शीतमंततः ॥ ११८ ॥ द्वावेतौ दाहशीतादी ज्वरौ संसर्गजौ स्मृतौ ॥ दाहपूर्वस्तयोः कष्टः सुखसाध्यत-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मोपरः ॥ ११९ ॥ विदग्धेन्नरसे देहे श्लेष्मपित्ते व्यवस्थिते ॥ तेनार्द्धं शीतलं देहमर्धमुष्णं प्रजायते ॥ १२० ॥ काये दुष्टं तथा पित्तं श्लेष्मा चांते व्यवस्थितः ॥ तेनोष्णत्वं शरीरस्य शीतत्वं हस्तपादयोः ॥ १२१ ॥ काये श्लेष्मा यदा दुष्टः पित्तं चांते व्यवस्थितम् ॥ शीतत्वं तेन गात्रे स्यादुष्णत्वं हस्तपादयोः ॥ १२२ ॥

त्वचामें प्राप्त जो कफ और वात वे कफज्वरके आगममें प्रथम शीत पैदा करते हैं जब वे शांत होते हैं तब अंतमें पित्त दाह करता है. त्वचामें प्राप्त जो पित्त यह ज्वरागमके समय अतिशय दाह करता है उसके शांत होनेसे अंतमें कफ और वात यह शीत उत्पन्न करते हैं. यह दोनों दाहादिक ज्वर संसर्गी हैं. यानी द्विदोषज हैं. इनमें दाहपूर्वक कष्टसाध्य है और शीतपूर्वक सुखसाध्य है. देहमें जब अन्नरस अर्थात् आहारका सार दुष्ट होकर जल जाता है तब कफ-पित्त भी दुष्ट स्थितिमें होते हैं इसलिये आधा शरीर गरम और आधा ठंडा होता है. जब पित्त कोठेमें

Indira Gandhi National Centre for the Arts

दूषित होकर रहे और हाथ पांव इत्यादिमें कफ रहे तब पित्तसे मध्यशरीर गरम और हाथ पांव इत्यादि कफसे ठंडे होते हैं. जब कोठेमें कफ दुष्ट होवे और हाथ पांवोंमें पित्त हो तब कफसे मध्यशरीर ठंडा और पित्तसे हाथ पांव गरम होते हैं. जिस प्राणीके वातबलासकज्वर होवे, उसको सदा मंदज्वर बना रहता है. शरीरमें सूजन होवे, शरीर रूखा पड जाय, सम्पूर्ण अंग जकड जावे, कफ विशेष होवे यह ज्वर वात और कफसे होता है ॥ ११७–१२२ ॥

गौरीशंकरका प्रश्न–कृपाकरके क्यूटीडैनके लक्षण कहिये ?

क्यूटीडैन फीवरका निदान.

यह ज्वर रात्रिदिनमें एकवार चढता है और बारी इसीकी बहुत कालतक आया करती है यह ज्वर प्रभात समय विदित होता है. जिन दिनोंमें मलेरिया तीव्रतापर होती है तब यह ज्वर भी तीव्र होता है.जैसा अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर (श्रावण, भादों, कुआर) इन दिनोंमें मलेरिया अधिक फैली रहती है. कभी यही तृतीयक तथा चातुर्थिक इत्यादि हो जाता है, कभी ये ज्वर रिमिटंट फीवरके रूपको धारण कर लेता है तब रोगकी वृद्धिका हेतु जानो. जिसका दूसरा कारण देहके भीतरे भागमें किसी स्थानपर सूजन होनेका है और

Indira Gandhi National Centre for the Arts

जब ये रात्रिदिन (चौवीस घंटेके भीतर) में दो वार चढता है, तब इसको डबल क्यूटीडैन फीवर (सतत ज्वर) कहते हैं. सामान्य लक्षण कहते हैं—छव्वीस दिन-तक इसकी मर्यादा है.जिसमें सुस्ती, आलस्य, काहिली, दाह, हडफूटन, सम्पूर्ण देहमें दर्द, कभी थोडी ठंड लगती है किंवा मस्तकमें और संधियोंमें दर्द तथा मस्तकमें चक्कर, घूमनी, दौरनसिर होता है. भूख कम, निद्राका नाश ये लक्षण होते हैं. कभी इन लक्षणोंमेंसे कोई भी लक्षण नहीं होता है, केवल ठंड लगकर ज्वर चढता है फिर गरमी लगती है फिर पसीना आनकर उतर जाता है, इसीसे इसकी तीन अवस्था रखी गई हैं.

१ अवस्था शीत लगनेकी, २ अवस्था गरमीकी और ३ अवस्था पसीना आनेकी है.

गौरीशंकरका क्याखूबजीसे प्रश्न—तीनों अवस्था-ओंके लक्षण जुदे जुदे कहिये ?

क्याखूबका उत्तर—१ सरदी लगनेकी अवस्था, इसमें प्रथम ठंड पीठपर लगती है फिर सम्पूर्ण देहमें जान पडती है. कभी एकदमसेही ठंड लगती है, तब देह कांपती है. दांतोंसे दांत बजने लगते हैं, जीभ तर (गीली) और साफ फीकी, शीतल, भूख नष्ट, प्यास अधिक, आमाशयमें शूल, गशयान (उबकाई), वमन, मस्तकमें शूल, हाथपांवोंमें तस्नुज (वांयटे), मूत्र

Indira Gandhi National Centre for the Arts

फीका हलका और अधिक और वारंवार होता है;मलेरियाका असर दिलपर होनेसे रक्त धीरे धीरे देहमें वहता है,नाडी महीनगत और बलहीन तथा शीघ्रगमनी कभी विनाप्रमाण चलती है. श्वास शीघ्रगमनी और थोडी और महीन चलती है. रक्त धातुके गमनमें विक्षेप होनेसे सम्पूर्ण देहके चर्ममें झुरीं पड़ जाती है, रोमांच होते हैं, जिसको गोस इस्कन तथा केयूटिस एनसरेनिया किंवा हारीपाईलिशयू कहते हैं.कपोल, ओष्ठ, कान और उंगलियोंको नोंक इन्होंमें रक्त भले प्रकारसे गमन नहीं करता है. जिससे नीलापन दिखाई देता है. देहके भीतर रक्त इकट्ठा हो जाता है, कदापि मस्तकमें रक्त इकट्ठा हो गया होगा तौ शिरमें बोझ जान पडेगा. सीसमें अधिक रक्तके इकट्ठे होनेसे गनूदकी (तंद्रा) पश्चात्को बेहोशी होती है. आमाशय और जिगरमें रक्त इकट्ठा होनेसे उबकाई और वमन होती है और पित्तके निकलनेमें भी फर्क हो जाता है. आंतोंमें रक्त इकट्ठा होनेसे दस्त होने लगते हैं परंतु विशेष करके अजीर्ण रहता है. ठंडके लगनेसे देहकी गरमी कुछ कमी नहीं आती है, अन्त दर्जेपर १०५ किंवा १०६ दर्जेतक देहकी गरमी बढ जाती हैं. ठंडकी अवस्था थोडी रहती है परंतु देहके भीतर रक्तके इकट्ठे हो जानेसे सर्दीकी अवस्था चार पांच घंटेकी रहती है अर्थात् चार पांच

घंटेतक जाडा लगता रहेगा इसी भांतिसे जब कई वारी इसकी व्यतीत हो जावेंगी तब तो ठंड बहुतही थोडी देरतक लगेगी. ज्यों ज्यों वारियां बढती जावेंगी त्यों त्यों शीत लगनेकी अवस्था कम होती जावेगी यहांतक कि फिर किंचित्मात्र ठंड लगकर ज्वर चढ आवेगा.

२ गरमी लगनेकी अवस्था ये एक वारही सुरू होती है. ठंड शनैः शनैः कम होती जाती है और गरमी बढती जाती है,मुखसे बाफ गरम निकलती है.प्रथम तो रोगीको वह गरमी प्रिय मालुम पडती है परंतु जब अधिक गरमी बढ जाती है तब कष्ट होता है ज्यों २ गरमी बढती है त्यों २ देहका चर्म ठीक होता चला जाता है, रक्तकी गतिभी तीव्र होने लगती है इसीसे नाडीकी चाल कुइक् (शीघ्रगमनी) किंवा वाइडंग होती है, चेहरेपर तमतमाहट होती है, कनपटीकी धमनियां तडपती फुदकती हैं, मस्तकमें शूल, रोगी कभी बकवाद करता है कभी कन्व्हलशन्स(शरीरका इठना)भी होता है,नेत्र लाल और चमकीले, मुखका स्वाद नष्ट हो जाता है, देहका चर्म रूखा और गरम और लाल हो जाता है. किसी किसीके शरीरपर लाल लाल दाग धब्बे फुंसियां उत्पन्न हो जाती हैं, भूख नष्ट और प्यास बहुत लगती है. मुख गरम और रूखा, जीभ रूखी सफेद, फरसे ढकी

हुई, उबकाई, वमन, बेचैनी, मूत्र लाल रंगका, भारी और कम होता है. गरमीकी गति देहमें १०० दरजेसे ११२ दरजेतककी होती है. ये लक्षण गरमीकी अवस्थाके हैं.

३ पसीना आनेकी अवस्था. इसमें प्रथम पसीना मस्तक (पेशानी) और चेहरे (मुख) पर आता है पश्चात् सम्पूर्ण देहमें पसीना आता है. ज्यों ज्यों पसीना आता है त्यों त्यों देहकी गरमी कम होती जाती है अर्थात् पांच मिनिटसे लेकर और पंद्रह मिनिटके भीतर दो १ दर्जे गरमी घट जाती है और गरमीकी अवस्थाके सम्पूर्ण लक्षण बदल जाते हैं. किसीको इस अवस्थामें दस्त लग जाते हैं कदाचित् पसीना कम आवे तो शीत आनकर रोगी मर भी जाता है. कभी इन तीनों अवस्थाओंके उलटे लक्षण भी हो जाते हैं. जैसे किसीको ठंड तो मालूम हुई, लेकिन गरमी न लगी और न पसीना आया और ज्वर उतर भी गया ऐसा जब होता है तब रोगी आरोग्य होनेवाला होता है.और मलेरियाके विषमें भी कमी पड जाती है. किसी २ को मलेरियाके देशमें वारंवार जाडा लगता है और सुस्ती, आलस्य, बेचैनी होती है. परंतु इन तीनों अवस्थाओंमेंसे कोईभी अवस्था विदित नहीं होती है तब इस प्रकारके ज्वरका नाम डम्फीवर तथा डेथ्एग्यू कह-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ते हैं. (डेथू नाम मृत्युका है, कालज्वर जानों) और जब सरदी गरमी पसीना तीनों अवस्थाओंके लक्षणोंका प्रबंध भले प्रकारसे नहीं होता, तब उस ज्वरका नाम एरेटिक् फीवर कहते हैं.

टरशियन फीवर (तृतीयक ज्वर).

इस ज्वरमें बारी एक दिन मध्यमें छोडकर आती है अर्थात् तीसरे दिन आता है और इन्टर्व्हलकी अवस्था अडतालीस घंटेकी होती है.

कफपित्तात्त्रिकग्राही पृष्ठाद्वातकफात्मकः ॥ वातपित्तात शिरोग्राही त्रिविधः स्यात्तृतीयकः ॥ १२३ ॥

जो तृतीयक ज्वर कफपित्तसे होता है सो प्रथम त्रिक (कमर) के पिछाड़ी जहां तीन हाड इकट्ठे हैं उस स्थानको पकडता है. जो वात कफसे होता है सो प्रथम पीठसे चलता है और जो वात पित्तसे होता है सो शिरसे होता है ॥ १२३ ॥

मलेरियाके देशवासियोंको इस ज्वरकी बारी दो पहरके समयपर शीतकालमें आती है और जिन्होंकी प्लीहा बढी हुई होती है उनको भी जाडेके दिनोंमें दो पहरपर बारी आती है. यह ज्वर भी दूसरे प्रकारके ज्वरोंमें बदलकर दूसरा रूप धारण कर लेता है,जो ये क्युटीडाइन हो जावे अर्थात् तृतीयकसे नित्यप्रति आने-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वाला ज्वर हो जावे तो फिर व्याधिकी वृद्धि जानो और जो ये चातुर्थिक हो जावे अर्थात् तीसरे दिनसे चौथे दिन आने लगे तो रोगी शीघ्र आरोग्य हो जाता है कभी ऐसा भी होता है कि इस ज्वरकी एक बारी नित्य-प्रति आया करती है जिसको (डबल टरशियन् फीवर) कहते हैं. इस दशामें एक बारीके पश्चात् दूसरी बारी तीव्र होती है. कभी एक दिनमें दो बारी इस ज्वरकी आती है. जैसे एक बारी तो प्रभातको आती है और दूसरी संध्या समयको आती है. फिर दूसरे दिन एकभी बारी नहीं आती. फिर तीसरे दिन जैसी कि प्रथम दिन दो बारी आती हैं उसी भांतिसे आती है. फिर इसी प्रकारसे बारियां आया करती हैं तब इस ज्वरका नाम (डुपलीकेटेड् टरशियन् फीवर कहते हैं) लक्षण इसके नित्यप्रतिके आनेवाले ज्वरके समान हैं परन्तु सरदी, गरमी, पसीनाके अवस्थाओंकी मर्यादा छः घंटेसे आठ घंटेतककी होती है.

कारटन् फीवर (चातुर्थिक).

इस ज्वरकी बारी दो दिनके बाद आया करती है और इन्टरव्हलकी अवस्था बहत्तर घंटेकी होती है.बारी इसकी तीसरे पहरको आती है और कभी दो बारियां इसकी बराबर आती हैं और तीसरा दिन खाली रहता है. फिर चौथे और पांचवे दिन इसी भांतिसे दो बारियां

Indira Gandhi National Centre for the Arts

आती हैं तब इसका नाम (डबल क्वारटन् फीवर) कहते हैं.ऐसा भी होता है कि इस ज्वरकी दो बारियां दर चौथे दिन आया करती हैं (उदाहरण) जैसे शनीचर वारको दो बारियां आईं और ऐतवार (रविवार) और सोमवार दो दिन बीचमें खाली गये. फिर मंगलवारके दिन दो बारियां आईं तब इस भांतिके ज्वरको (डुपलीकेटेड् क्वारटन् फीवर) कहते हैं. लक्षण इसके भी नित्यप्रति आनेवाले ज्वरकेही तुल्य हैं परंतु मर्यादा बारियोंके कारण करके अधिक और ज्वरका समय अल्प और सरदी लगनेकी अवस्था अधिक होती है. इसकी बारीकी मर्यादा तथा समय तथा अवस्था पांच घंटेतककी है और माधवाचार्य्य ऐसे लिखते हैं—

चातुर्थिको दर्शयति प्रभावं द्विविधं ज्वरः ॥ जंघाभ्यां श्लेष्मिकः पूर्वं शिरसोऽनिलसंभवः ॥ १२४ ॥ मध्यकायं तु गृह्णाति पूर्वं यस्तु स पित्तजः ॥ विषमज्वर एवान्यश्चातुर्थिकविपर्ययः॥ स मध्ये ज्वरयत्यह्नि आदावंते विमुंचति ॥ १२५ ॥

चातुर्थिक ज्वर दो प्रकारका है—जो कफजन्य है सो पहले पिंडरिनसे चढता है और जो वातसे है सो प्रथम

माथेसे और जो पित्तसे है सो मध्यशरीरसे प्रथम होता है, यह एक भेद है. और जो विषम ज्वर चातुर्थिकसे उलटा है सो दूसरा भेद है. इसके बीचमें दो दिन ज्वर होता है और आदि अंतमें छोड़ता है॥ १२४ ॥ १२५॥

(नोटबुक् क्याखूबसे) इन ज्वरोंमेंसे कोई ज्वर अपने आनेके समयको त्यागकर दूसरे समयपर आने लगे तो जानों कि अब रोगकी घटती है (अर्थात् रोग घटता जाता है) और जो अपने आनेके समयसे प्रथमही चढे तो जानो रोगकी वृद्धि है.

जो रोगी मलेरियाके देशका वास त्याग देवै और सरदी गरमीसे बचता रहे और विना दूषित भोजन और जलका पान करे पथ्यकरके रहे तो परिणाम इसका उत्तम है.कदापि प्राचीन ज्वर हो जावे और मज्जा,त्वचा, अस्थि, शुक्र, मेद, मांस इत्यादिमें प्राप्त हो जावे और रोगीकी सामर्थ्य जाती रहे,बल नष्ट हो जावे तो बुरा है.

इन्टरमिटेंट फीवरकी चिकित्सा.

इस ज्वरकी चिकित्सा दो प्रकारसे कहते हैं. प्रथम तो बारी आनेकी दशा (जिस दिन ज्वरके आनेकी बारी हो) और दूसरी वकफेकी दशा (जिस दिन ज्वरके आनेकी बारी न हो).

१ बारी आनेवाले दिनकी चिकित्सा. जो भोजन करनेके पश्चात् ज्वर चढा हो और उबकाई आती होवे

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तो सलफेट् आफ् झिंक तीस ग्रेन बहुतसे गरम पानीमें मिलाकर पिलाय वमन करावे तथा और कोई औषधि उलटी करानेवाली देवे,जब उलटी करादी हो तब प्रत्येक अवस्थाकी चिकित्सा करे. (अ) जब रोगीको ठंड लगे तो गरम वस्त्र धारण करावे, गरम पतले पदार्थ पिलावे.

गौरीशंकरका चौबे क्याखूबजीसे प्रश्न–महाराज! किस प्रकारके पदार्थ पिलावे उनके नाम बतलाइये?

चौबे क्याखूबका उत्तर–आश जौ और चाह इत्यादि हितकारक और कमजोरीकी दशामें किंचित् ब्रांडी भी मिला देवे जो बेचैनी हो तो थोडी अफीम मिला देवे. गरम बोतल तथा गरम ईंटसे हाथ पावोंको सेके किंवा भपारा देवे(क) जब ठंड लगना बंद हो जावे और गरमी लगने लगे तो प्यास और गरमीकी चिकित्सा करे.मल इत्यादिककी शुद्धि करनेके लिये औषध देते रहे, जैसे लाइकर एमोनी एसीटेक्स एक तथा दो ड्राम, नाइटर पांच ग्रेन, नाइटर्स ईथर वीस बूंद, सलफेट् ऑफ् मॅगनेशियम एक ड्राम, कॅफरवॉटर एक औंस मिलाकर दो तीन घंटेके अन्तरसे इस भांतिकी मात्रा दिया करे.जब तक देवे तबतक दस्त तथा पसीना न आ जावे. पसीना किंवा दस्त आ जानेसे ज्वर नष्ट हो जावेगा.

योग.

कासनी आधा औंस, तुखमखुरफा डेढ़ ड्रामको लेकर

बारह औंस पानीमें मिलाकर भिगोदेवे, फिर छानकर शक्कर मिलाकर दो तथा तीन घंटेके अन्तरसे दो औंस तथा तीन औंसकी मात्रासे पिलावे. (ज) जब पसीना आने लगे और गरमी कम हो जावे तो फिर विशेष चिकित्सा न करे, केवल पवनसे बचाते रहे. वस्त्र इत्यादिक जल्दी न उतार लेवे, पसीनेकी दशामें पवन लगनेसे यह ज्वर प्राणोंका नाश कर देता है. पसीना अधिक निकालनेके लिये गुनगुना गरम पानी पिलावे.

२ वकफेकी दशा (जिस दिन ज्वरकी बारी न हो)उस दिनकी चिकित्सा कहते हैं. कदापि ज्वरकी दशामें दस्त नहीं हुआ है तो जुलाब देवे.

गौरीशंकरका प्रश्न–जुलाबके लिये कौन कौन औषध हित होगी ? और औषध दी जावे ?

क्याखूबका उत्तर–हमारे विचारमें तौ क्यॉष्टर ऑइल (अरंडका तेल) किंवा हब्बुलनील (काला दाना)उत्तम है. येही दिये जावें और यदि जिगरकी व्याधि करके अजीर्ण होनेसे दस्त नहीं हुआ हो तो कैलोमेल और जलेपका जुलाब देना हित है.

गौरीशंकरका क्याखूबजीसे प्रश्न–जुलाब देकर मलकी शुद्धि करनेके पश्चात् कौन औषध देवे ? तथा क्या कार्य्य करना चाहिये.

क्याखूबका उत्तर–दस्त हो जानेके पश्चात् सलफेट

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ऑफ कोइनाईन पांच पांच ग्रेनकी मात्रामें दो तथा तीन घंटेके अंतरसे दूसरी बारीके आनेके समयतक देते रहे. जो कि पंद्रह वीस ग्रेन क्विनाइन ज्वर चढनेतक रोगीके पेटमें पहुँच कर अपना असर करे. क्विनाइनका सेवन ज्वरोंको नष्ट करनेवाला है; परंतु जब सेवन करना कोई जानता हो.

गौरीशंकरका चौबे क्याखूबजीसे प्रश्न–क्विनाइनका सेवन करना बतलाइये ?

क्विनाइनका सेवन.

उत्तर–मलेरियाके विषकी तीव्रता हो तो सल्फेट ऑफ् कोइनाइन दस ग्रेन कभी वीस ग्रेनकी मात्रामें बारी उतरनेके पश्चात् और एकघंटा बारी आनेसे प्रथम देवे.

गौरीशंकरका चौबे क्याखूबसे प्रश्न–क्विनाइनके खानेकी रीति क्या है ?

चौबे क्याखूबका उत्तर–क्विनाइनका मिक्श्चर किंवा गोली बनाकर काममें लावे और जो कि कोइनाइनका मिक्श्चर कडुआ अधिक होता है इस लिये स्वादिष्ठ करनेके लिये नींबूका शर्बत (सिरप ऑफ लेमन) तथा सिरप ऑफ् ऑरेंज (नारंगीका शर्बत) मिला देवे और गोलियोंपर चांदी सोनेके वर्ख लगा देते हैं.

गौरीशंकरका चौबे क्याखूबजी हकीमसे प्रश्न–

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मिक्श्चर और गोलियोंके बनाने और पिलाने खिलानेकी रीतिको कहिये ?

कोइनाइन मिक्श्चर.

उत्तर–सलफेट्ट ऑफ् कोइनाइन पांच ग्रेन, डायल्यूट्ट सलफियूरिक् एसिड दस बूंद, सिरप ऑफ् आरेंज पिलस् एक ड्राम, पानी एक औंस मिलाकर तीन तीन घंटेके अंतरसे पिलावे, प्रथम कोइनाइनको ॲसिडमें मिलाकर गला लेवे फिर सिरप और पानी मिला लेवे यही रीति बनानेकी है. एसिड दो प्रकारके होते हैं, एक तो तीव्र जिसको इस्टरोग कहते हैं,दूसरे डायल्यूट जो हलके होते हैं. तीव्र काममें नहीं लाते. तीव्रमें पानी मिलाकर उसको हलका करके कामके योग्य होता है. सलफियुरिक् एसिड्ड नाम गंधकके तेजाबका है.

कोइनाइनकी गोलियां.

सलफेट ऑफ् कोइनाइन दो ग्रेन और एक्सटिराकट ऑफ् कलम्भिया एक ग्रेन मिलाकर एक गोली बना लेवे और इसी भांतिकी दो दो गोलियां तीन मात्राओंमें दो दो घंटेके अन्तरसे देवे. उलटी हो जानेके कारण करके कोइनाइन आमाशयमें न ठहरे तो पंद्रह ग्रेन कोइनाइनको पानीमें मिलाकर हुकना करे अर्थात् पिचकारीकर्म करे, ऐसा उपाय बालकोंको हितकारक होता है.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कोइनाइनकी पिचकारी.

सलफेट ऑफ् कोइनाइन चार ग्रेन, टेन्क ॲसिड तीन ग्रेन और पानी एक औंस मिलाकर पिचकारीसे गुदाद्वारा पहुँचावे.

इनजेक्ट.

कोइनाइनको देहपर मलनेसे ज्वरका वेग रुक जाता है. यदि तीन ग्रेन कोइनाइन देहमें प्रवेश हो जावेगी तो ज्वर नष्ट हो जायगा, परंतु देहके जिस भागमें कोइ-नाइन मली जावेगी उसी स्थानपर शोजिस (खराश) सूजनके समान हो जावेगी, परंतु चतुराईसे यह कार्य्य करना हित करता है.

योग.

नियुटर्ल कोइनाइन अस्सी ग्रेन, साइटिरेक एसिड तीन सौ ग्रेन. पानी एक औंस मिलाकर वजरिये हरा-रतके कोइनाइनको गला लेवे फिर इसमेंसे छः बूंद देहके चर्मपर मले. इन छः बूंदोंका असर जिनमें एक ग्रेन कोइ-नाइन है गुण चार ग्रेन खिलाई हुई कोइनाइनके बरा-बर होता है. कोइनाइनको सलफियूरिक एसिडमें गलाकरके इनजेक्ट करनेसे (अर्थात् मलनेसे) तो चर्ममें खराश हो जाता है. इसलिये उत्तम उपाय यह है कि कोइनाइनको ईथरमें गला करके सेवन करे यथा

कोइनाइन सात ग्रेन, सलफियूरिक ईथर पंद्रह बूंदमें गलाकर इनजेक्ट करे.

कोइनाइनके विशेष योग.

कभी ऐसा भी होता है कि कोइनाइन एक वार खिलानेसे ज्वरका वेग (बारी) नहीं रुकती है, परंतु दूसरे वार जो बारी आती है उसका जोर कम हो जाता है. और फिर दो तीन वारके देनेसे तो ज्वर नष्टही हो जाता है. मलेरिया देशनिवासियोंको अधिक कोइनाइन सेवन करानेसे क्यूनेज्म हो जाता है, इसलिये उनको क्यूनेज्मकी दशा न होने पानेके लिये कोइ-नाइनको हैडरोब्रोमक ऍसिडमें मिलाकर देना हित होता है. जैसे सलफेट ऑफ् कोइनाइन एक ड्राम, हैडरो ब्रोमक ॲसिड डायल्यूट् डेढ औंस, पानी डेढ औंस मिलाकर दो ड्रामकी मात्रामें देवे (इसमें पांच ग्रेन कोइनाइन है) तथा ब्रमोहैडरेट् ऑफ् कोइनाइन डेढ ग्रेन पानीमें देवे; इस भांतिसे चौवीस घंटेके भीतर दस बारह ग्रेन कोइनाइन देवे. ज्वर जितना प्राचीन हो उत-नीही अधिक मात्रा कोइनाइनकी देना हित होती है. और चातुर्थिक ज्वरमें तो कोइनाइकी बहुतही अधिक मात्रा देनेसे ज्वर नष्ट होता है. बलहीन रोगीको अधिक कोइनाइन देनेसे कोलेप्स (शीत) आनेका भय रहता है, इसलिये ऐसे रोगियोंको मुहर्क अदवीया

Indira Gandhi National Centre for the Arts

(जनरल इस्ट्रूमेलेंट) अर्थात् बळ पराक्रमके बढानेवाली औषध देना हित होता है. जैसा कि शराब (मद्य), ईथर, केपिसकम इत्यादिकके साथ मिलाकर देना चाहिये. इसके सेवन समय इस बातका ध्यान रहे कि प्रथम सप्ताहमें अधिक देवे और दूसरे सप्ताहमें उससे एक सुल्स (भाग) कम करे. तीसरे सप्ताहमें दो सुल्स (भाग) कम करे. फिर धीरे २ इस भांतिसे कम करतें जावे.

कोइनाइनके विशेष गुण.

कोइनाइनाके गुण हमने योगोंमें आपसे कहे हैं, अब विशेष गुण इसके कहते हैं. कोइनाइन एन्टी प्रयोडिक अर्थात् नष्ट करनेवाली बारी आनेवाले रोगोंकी है और टान्क (बलकर्त्ता) तपळजांकी बारी रोकनेके लिये अतिही श्रेष्ठ है. रीमीटेंट फीवरमें भी जब ज्वरके लक्षण घट जावें और देहके भीतरके किसी भागमें सूजन किंवा रक्तके इकट्ठे होनेकी दशा न हो अर्थात् रुधिर इकट्ठा न हो तो दीर्घमात्रा देना इसका हित है. श्वास, हिक्का और नेत्रोंकी सूजन जब इन रोगोंकी बारी आती हो उनमें देना हित है. प्लीहाके बढ जानेमें देनेसे बहुत गुण करती है. दीर्घमात्रा तथा अधिक इसके सेवन करनेसे सन्कोनेजम तथा कोइजम (मस्तकपीडा, सिर घूमना, कानोंमें शब्द, सनसनाहटका आना, नेत्रोंके आगे पतंगेसे

उडना, उबकाई आना इत्यादि) उपद्रव करती है. जिनकी शांतिका उपाय हम कह आये हैं. जब इस भांतिके नष्ट लक्षण विदित होने लगें तब कोइनाइनका सेवन करना बंद कर देवे.

कोइनाइन निहारमूह (अर्थात् भोजन न किया हो खाली आमाशय हो) और गंधकके तेजाबके साथ देना हित है और जिनका रक्त मस्तककी ओरको बहता हो उनको बहुत चतुराईसे देवे और मस्तकके रोगों और आंतोंकी सूजनमें कोइनाइन कभी न देवे क्योंकि इस प्रकारके रोगोंको अहित है.

कोइनाइनकी मात्राका प्रमाण.

कोइनाइकी मात्रा एक ग्रेनसे दस ग्रेनतककी है. एक या दो ग्रेन केवल तकबीयत (प्रसन्नताके लिये) और पांचसे वीस ग्रेनतक बारी रोकनेके लिये देते हैं.

गौरीशंकरका क्याखूबजीसे प्रश्न–जब कोइनाइनके सेवनसे ज्वरमोक्ष न होवे किंवा रोग प्राचीन हो जावे तौ फिर क्या उपाय करे ?

क्याखूबका उत्तर–कोइनाइनसे रोग नष्ट न हो तौ फिर आरसिनेक (संखिया), वसूरत, फोलर्ज सोल्यूशन पांच किंवा दस बूंद देवे तथा मुर्कबात फोलादके साथ गोली बनाकर देवे जो हम कहते हैं.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

संखियाकी गोलियां.

संखिया एक ग्रेन, सलफेट आफ् कोइनाइन वीस ग्रेन, डराइड सलफेट आफ् आयरन दस ग्रेन, गोंदके पानीमें मिलाकर वीस गोलियां बनावे और दिनमें तीन वार एक एक गोली भोजन करानेके पश्चात् देवे.

दूसरा योग संखियाकी गोलीका.

संखिया एक ग्रेन, काली मिरच वीस ग्रेनको पीसकर गोंदके पानीमें वीस गोलियां बना लेवे, दिनभरमें तीन गोलियां भोजन करानेके पश्चात् खिलावे, और भी योग इन ज्वरोंपर हम कहते हैं.

एमोनीअटेड मिक्श्चर आफ् कोइनाइन.

सलफेट् आफ् कोइनाइन १६० ग्रेन, सोल्यूशन आफ् एमोनिया ढाई फिल्यूड औंस, प्रूफ स्परेट साढे सत्तरह फिल्यूड औंस लेकर प्रथम कोइनाइनको स्परेटमें हलकी हरारतसे गला लेवे फिर सोल्यूशन एमोनिया मिला लेवे. इसकी मात्राका प्रमाण आधे फिल्यूडड्रामसे दो फिल्यूड ड्रामतककी है.

वाइन्म आफ् कोइनाइन.

सलफेट आफ् कोइनाइन वीस ग्रेन तथा एक भाग, साइटरेक एसिड तीस ग्रेन तथा डेढ भाग, औरेंजवाइन एक पाइंट तथा ४३८ फिल्यूड भाग. प्रथम साइटरेक एसिडको वाइन्ममें गला लेवे फिर सलफेट आफ् कोइ-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

नाइनको मिलाकर तीन दिनतक बंदपात्रमें रख छोडे और कभी कभी हला दिया करे फिर छान लेवे.इसकी मात्राका प्रमाण आधे फिल्यूड औंससे एक फिल्यूड औंसतककी है.

टिन्चर आफ् हडरोकिलोरेट आफ् कोइनाइन.

हैडरोकिलोर्ट आफ् कोइनाइन १६० ग्रेन और टिन्चर आफ् औरेन्जपिल एक पाइंट हलकी हरारतसे घोलकर तीन दिनतक रख छोडे. कभी कभी हेला दिया करे फिर छानकर रखे. इसकी मात्राका प्रमाण आधे फिल्यूडड्रामसे दो फिल्यूडड्रामतक है.

फीवर साइड पिल्ज.

ये एक चिकित्सा एमेरिका देशवासियोंकी चलाई हुई प्राचीन ज्वरों और मलेरियासे उत्पन्न हुए रोगोंके नष्ट करनेके लिये बहुत उत्तम है, जो क्याखूब हकीमने अपनी नोटबुकसे लिखा है. कोइनाइन दो ग्रेन, एन्टी फेवरीन दो ग्रेन और हैडरोकिलोरेट् आफ् कोइनाइन $\frac{1}{6}$ ग्रेन मिलाकर एक किंवा दो गोलियां बनाकर तीन वार करके देवे.

सिंकोना फैवरी फियूज.

यह औषध डारजिलिंगके पहाडोंसे आती है और उसी स्थानपर उत्पन्न होती है. ज्वरोंके नष्ट करनेकी बडी गुणदायक है और कोईनाइनके समान इसका

सेवन और गुण है और गुड तथा सहत तथा नींबूके रसमें गोलियां बनाकर देते हैं. सम्पूर्ण मात्रा इसकी पांच ग्रेनसे दस ग्रेनतककी है.

सिंकोना फैवरी फियूजकी गोलियां.

सिंकोना फैवरी फियूज ६० ग्रेन, नींबूका रस एक फिल्यूड ड्राम मिलाकर दो दो ग्रेनकी गोलियां बना लेवे और दो दो गोली दो दो घंटेके अन्तरसे देते रहें.

सिंकोना फैवरी फियूजका मिक्श्चर.

सिंकोना फैवरी फियूज दो औंस, एसिड सलफियूरक, डालल्यूट तीन औंस, पानी सतरह औंस. प्रथम सिंकोनाको एसिडमें गलाकर फिर पानी मिला लेवे, फिर इसमेंसे एक फिल्यूड ड्राम जिसमें छः ग्रेन सिंकोना है एक औंस पानीमें मिलाकर पिलावे.

रैडसिंकोनावार्क

लैकचर नोटबुक क्याखूबहकीमसे—यह वृक्षोंकी लालरंगकी छाल है, ज्वरोंके नष्ट करनेके लिये काममें आती है. मात्रा इसकी दस ग्रेनसे साठ ग्रेनतककी है. इसका क्वाथ (डिकोकशन) और काढा (टिंचर) बनाकर देते हैं.

डिकोकशन आफ् सिंकोना.

रैडसिंकोना वार्क वीस नम्बरका चूर्ण सवा औंस पानी एक पाइंटमें मिलाकर बंद पात्रमें दस मिनटतक

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अग्निपर औटावें जब एक पाइंट शेष रहे तब उतारकर बोतलमें भर लेवे. इसकी मात्रा एकवारके लिये एक फिल्यूड ड्रामसे दो फिल्यूड ड्रामतककी है.

टिन्चर आफ् सिंकोना.

रैडसिंकोनाका चूर्ण चार औंस, पिरूफ स्परेट एक फिल्यूड औंस लेकर डिकोकशन आफ् सिंकोनाकी रीतिसे बना लेवे. मात्रा इसकी आधे फिल्यूड ड्रामसे दो फिल्यूड ड्रामतककी है. इसके एक फिल्यूड औंसमें ८८ ग्रेन सिंकोना है.

कम्पौंड टिञ्चर आफ् सिंकोना.

रैडसिंकोना वार्कका ४० नम्बरका चूर्ण दो औंस और महीन कतरा और कुचला हुआ कडवी नारंगीका छिलका एक औंस, सिपरनटरीकी जड कुचली हुई आधा औंस, केशर पचपन ग्रेन, कौंचनलका चूर्ण अट्ठाईस ग्रेन, पिरूफ स्परेट एक पाइन्ट लेकर डिकोकशनकी रीतिसे बना लेवे. मात्रा आधे फिल्यूड ड्रामसे दो फिल्यूड ड्रामतककी है.

ऐकाहिक एकांतरा तृतीयक चातुर्थिक चिकित्सा.

पटोलारिष्टमृद्वीका श्यामाकं त्रिफला वृषः ॥ क्वाथ एकाहिकं हन्ति शर्करा-मधुयोजितः ॥ १२६ ॥ उशीरं चंदनं

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मुस्तं गुडूचीं धान्यनागरम् ॥ अंभसा क्वथितं पेयं शर्करामधुयोजितम् ॥१२७॥ ज्वरे तृतीयके देयं तृष्णादाहसमन्विते ॥ वासाधात्रीस्थिरादारुपथ्यानागरसाधितः ॥ १२८ ॥ सितामधुयुतः क्वाथश्चातुर्थिकविनाशनः ॥१२९॥

पटोल,नींबकी छाल, दाख, श्यामा, त्रिफला,अडूसा इनका काढा शक्कर और सहत मिलाकर पीनेसे एकाहिक ज्वर अर्थात जो ज्वर पचास घटिका पीछे आया करता है वह नष्ट होता है. खस, रक्तचंदन,मोथा, गिलोय, धनियां, सोंठ इनका काढा सहत शक्करयुक्त तृतीयकज्वरमें अर्थात् जो ज्वर एकांतरेसे आता हो और तृषा दाहसहित हो तो उसका नाश करता है. अडूसा, आंवला, सालवन, देवदारु, हरड और सोंठका काढा शक्कर सहतयुक्त चातुर्थिक अर्थात् जो दो दिन बीचमें देकर आता हो उसका नाश करता है ॥१२६-१२९॥

गिलोय, धनियां, रक्तचंदन, कमलगट्टेकी मिंगी प्रत्येक पांच मासेको तीन पाव पानीमें काढा करे. जब आधपाव पानी बाकी रहे तब छानकरके दो तोला नीलोफरका शर्बत मिलाकर पिलावे तथा नीलोफर एक तोला,खूबकलां छः मासे छः छटांक पानीमें डाल-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कर काढा करे जब दो छटांक पानी शेष रहे तब छानकर मिश्री मिलाकर पिलावे तथा अफीम एक मासे, काली मिरच दो मासे,बबूलका कोयला छः मासे इनको महीन पीसकर एक मासा तथा बलपराक्रमके अनुसार इसमेंसे ज्वर आनेसे चार घड़ी प्रथम विना भोजन कराये खिलावे.ज्वर न आवे और इस औषधको खिलाये हुए छः घंटे व्यतीत हो जावें तब भोजन देवे.

चातुर्थिक जो वादीयुक्त हो तपेसौदावी.

अजवायन देशी, कलौंजी, सौंफ, बादरंजवोया, शाहतरा, मुलहठी, निसोडे, आलूबुखारा, बनफशा, गाउजुबां इनको रात्रिके समय गरम पानीमें भिगोदेवे, प्रभातको शक्कर मिलाकर छानकर पिलावे.

योग.

फिटकरीको भूनकर उसके बराबर मिश्री मिलाकर आधे मासेसे दो मासेतक खिलावे यदि खांसी हो तौ न खिलावे ये योग तृतीयज्वरका नाशक है.

मिश्रित चिकित्सा डाक्टरीमतसे.

सम्पूर्ण ज्वरोंमें फस्त न खोलें (शस्त्रकर्म न करें) कोइनाइन सब भांतिकी औषधियोंके साथ देवे जो रोगी बकवाद करता हो तौ गरदनपर बिलास्टर लगावे (फफोला उठावे) और वीस वीस ग्रेन कोइनाइन खिलावे.जो जिगरके कर्तव्यमें उपाधि हो तौ लैक्यूडस-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

टिंकट आफ् टिरोज अल्प मात्रामें पिडोफेलन और पारेके मुर्कबातके साथ हित है.

विषमज्वरचिकित्सा.

महाबलामूलमहौषधाभ्यां क्काथो निहन्याद्विषमज्वरं च ॥ शीतं सकम्पं परिदाहयुक्तं विनाशयेत् द्वित्रिदिनप्रयुक्तः ॥ ॥ १३० ॥ गुडूचीमुस्तभूनिंबधात्रीक्षुद्राश्च नागरम् ॥ बिल्वादिपंचमूलं च कटुकेंद्रयवासकम् ॥ १३१ ॥ निशाभवं ज्वरं वातकफपित्तसमुद्भवम् ॥ चिरोत्थं द्वंद्वजं हंति सकणं मधुसंयुतम् ॥ १३२ ॥ मुस्तामलकगुडूचीविश्वौषधिकंटकारिकाक्काथः ॥ पीतः सकणाचूर्णः समधुर्विषमज्वरं हंति ॥ १३३ ॥ मधुकं चंदनं मुस्तं धात्री धान्यमुशीरकम् ॥ छिन्नोद्भवा पटोलं च क्वाथः समधुशर्करः ॥ १३४ ॥ ज्वरमष्टविधं हन्ति सन्तताद्यं सुदारुणम् ॥ वातिकं पैत्तिकं चैव श्लैष्मिकं सान्निपातिकम् ॥ १३५ ॥ भाङ्ग्र्यब्दपर्पटकपुष्करशृङ्गवेरपथ्याकणाह्वदशमूलकृतः कषा-

यः॥ सद्यो निहंति विषमज्वरसन्निपातजीर्णज्वरश्वयथुशीतकवह्निसादान् ॥ १३६ ॥

ककहीका मूल और सोंठका काढा दो तीन दिन पीनेसे शीत कंप और दाहयुक्त विषमज्वरमात्रका नाश होता है. गिलोय, नागरमोथा, चिरायता, आंवला, भटकटैया, सोंठ, पंचमूल (बेल, अरनी, करील, पाढर और खंभरिया ये पंचमूल), कुटकी, इंद्रजौ और जवासा इनके काढेमें सहत और पीपर डालकर पीवें तौ ज्वर बहुत दिनका और वात पित्त कफ तथा द्वंद्वज और रात्रिमें आता होय ऐसे ज्वरोंका नाश होता है मोथा, आंवला, गिलोय, सोंठ और भटकटैया इनका काढा सहत और पीपर मिलाकर पीवे तौ विषमज्वरका नाश होता है. मुलहठी, रक्तचंदन, मोथा, आंवला, धनियां, खस, गिलोय और पटोल इनका काढा सहत शक्करयुक्त पीनेसे आठ प्रकारके ज्वरोंका नाश होता है. तथा संतता दिक दारुण विषमज्वर और वात पित्त कफ और सन्निपात ज्वरको विशेष करके हरता है. भारंगी मोथा, पित्तपापडा, पुष्करमूल, सोंठ, हरड, पीपर और दशमूल (सालवन, पिठवन, भटकटैया, बेल, वनभांटा गोखरू, करील, खंभरिया, अरनी, पडरिया ये दशमूल हैं) इनका काढा विषम, सन्निपात और जीर्णज्वर तथा सूजन शीत और अग्निमांद्यका नाश करता है ॥१३०-१३६॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

सिंपल कंटीन्यूड फीवरका निदान.

यह ज्वर हरसमय चढा रहता है जिसको तपेदाइमी साधारण ज्वर कहते हैं और यह दो प्रकारका होता है.

१ अल्प, २ तीव्र. प्रथम हम अल्पके लक्षण कहते हैं. इसमें केवल जुकाम होता है.इसको फैवरीक्यूला कहते हैं परंतु जब देहमें गरमी एक दिनही रहे तौ इसे इफीमैरल फीवर बोलते हैं.लक्षण–सुस्ती, काहिली,आलस्य, ऐजांसिकनी (हडफूटन), मस्तकपीडा, हाथ पांव पीठमें शूल, कमर पीठपर सरदी मालूम होती है,फिर तीव्र जाडा लगता है, थोडे काल पीछे चर्म रूखी और गरम हो जाती है. देहकी गरमी बढ जाती है, नाडी शीघ्रगमनी भरी (भारी) एक मिनिटमें १२० तथा १३० वार फुदकती है. कभी गुलाबी तथा लाल रंगके धब्बे निकल आते हैं, बेचैनी, सम्पूर्ण देह टूटती है, सूजन मालूम होती है, चेहरा तमतमाया हुआ और जीभ रूखी मैली, तृषा, अजीर्ण, कृशता, भ्रम, कभी थोडा बकवाद, रात्रिको रोग तीव्र हो जाता है, तीन चार दिनतक तौ ये लक्षण बराबर रहते हैं. कभी दो तीन सप्ताहतक पसीना आनकर ज्वर उतर जाता है. केवल कमजोरी रह जाती है. जब पसीना नहीं आता है तब नकसीर फूटती है. गुदा और गर्भाशयसे रक्त निकलता है किंवा दस्त हो जाता है तथा मूत्र अधिक होता है.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

२ तीव्र दशा यह गरमीकी ऋतुमें मई जून वैशाख ज्येष्ठ महीनोंमें धूपमें फिरनेसे उत्पन्न होता है; इसको आरडिनर फीवर तथा सन्फीवर कहते हैं. सन् नाम सूर्यका है. लक्षण–ठंड लगती है, उबकाई, वमन, ज्वरका वेग तीव्र, मूत्र हलका काले रंगका होता है,पांचवे दिन रोगी बकवाद करने लगता है और बेहोश हो जाता है. नेत्रोंके तारे (पुतली) सुकड जाती हैं, अन्तको कौमा, डिलेरियम, कोलेप्स अर्थात् बेहोशी, मस्तकमें चक्कर, शीत आनकर रोगीके प्राण नष्ट होते हैं. आरोग्य होनेवाला होता है तो छः दिनसे नौ दिनकी मर्यादामें आराम हो जाता है. जो आरोग्य होनेवाला नहीं है तो फिर प्राण नाश होते हैं.

चिकित्सा.

अल्प पथ्य पाचन आहार देवे, अल्पज्वरमें कोमल औषध जिनसे तीव्रता कम हो, देवे. आरडिन्टफीवरमें वमन, विरेचन, स्वेदन,औषधिका सेवन करावे. सम्पूर्ण देहको गुनगुने गरम जलसे स्पंज भिगोकर पोछे जब ज्वरका तीव्र वेग घटे तब कुइनेन खिलावे तथा इस योगको देवे.

योग.

बनफशा चार ड्राम, कासनीकी जड नौ ड्राम,मुलहठी

Indira Gandhi National Centre for the Arts

नौ ड्राम, सौंफ छः ड्राम, पानी दो पाइंटमें डालकर औटावे और जब एक पौंड रहे तौ दो औंससे चार औंसकी मात्रामें तीन तीन घंटेके अन्तरसे देते रहे.

प्रलेपक ज्वर.

प्रलिपन्निव गात्राणि घर्मेण गौरवेण च॥ मन्दज्वरप्रलेपी च स शीतः स्यात् प्रलेपकः ॥ १३७॥ प्रलेपकाख्यो विषमः प्रायशः क्लेशशोषिणाम्॥ ज्वराश्च विषमाः सर्वे प्रायः क्लेशाय शोषिणाम् ॥ १३८॥

जिस ज्वरमें पसीना और शरीरका भारीपन करके शरीर लिपासा मालूम होय और मंदज्वर होय, शीतलगे उसको प्रलेपक ज्वर कहते हैं. सुश्रुतमें कहा है कि ये प्रलेपक नामका ज्वर बहुधाकरके क्लेश सहन करनेवालोंको होता है और जितने विषमज्वर हैं वे सब बहुधा करके क्षयरोगवालोंको क्लेशकेही लिये हैं॥ १३७॥ १३८॥

जीर्णज्वरलक्षण.

यो द्वादशेभ्यो दिवसेभ्य ऊर्ध्वं दोषत्रयेभ्यो द्विगुणेभ्य ऊर्ध्वम्॥ नृणां

Indira Gandhi National Centre for the Arts

तनौ तिष्ठति मन्दवेगो भिषग्भिरुक्तो ज्वर एष जीर्णः ॥ १३९ ॥

जो ज्वर बारह दिनके उपरांत रहे और वातज्वर चौदह दिन उपरांत रहें, जो पित्तज्वर वीस दिनके ऊपर रहे, कफज्वर अट्ठाईस दिनके उपरांत रहे और ज्वरका वेग मंद होवे वह जीर्णज्वर है ॥ १३९ ॥

जीर्णज्वरकी चिकित्सा.

निदिग्धिकानागरकामृतानां क्वाथं पिबेन्मिश्रितपिप्पलीकम् ॥ जीर्णज्वरारोचककासशूलश्वासाग्निमांद्यार्दितपीनसेषु ॥१४०॥ हंत्यूर्ध्वगामयं प्रायः सायं तेनोपयुज्यते ॥ एतद्रात्रिज्वरे सायमन्यत्र प्रातरिष्यते ॥१४१॥ पित्तानुबन्धे संत्यज्य पिप्पलीं प्रक्षिपेन्मधु ॥ पिप्पलीचूर्णसंयुक्तः क्वाथश्छिन्नरुहोद्भवः ॥ १४२ ॥ जीर्णज्वरे कफध्वंसी पंचमूलीकृतोऽथ वा ॥ पिप्पलीमधुसंमिश्रं गुडूचीस्वरसं पिबेत् ॥ १४३ ॥ जीर्णज्वरकफप्लीहकासारोचकनाशनम् ॥ अजाजी गुडसंयुक्ता

विषमज्वरनाशनी ॥१४४॥ अग्निसादं जयेत् सम्यक् वातरोगांश्च नाशयेत् ॥ १४५ ॥

भटकटैया, सोंठ,गिलोय इनका काढा पीपरका चूर्ण डालकर पीनेसे जीर्णज्वर, अरुचि, कास, शूल, श्वास, मंदाग्नित्व, अर्दित और पीनसरोग नष्ट होते हैं. यह काढा बहुधा करके कंठके ऊपर जो नासिका नेत्र इत्यादि तीनों रोगोंको हरता है, इसलिये संध्यासमय देना. जब रातको ज्वर आता हो तब प्रातःकालमें देना संध्याको नहीं देवे. जो ज्वरमें पित्तकी प्रबलता होवे तौ इसमें पीपलके चूर्णके बदले सहत मिलाकर देना,पीपलका चूर्ण न डाले, जीर्णज्वर, कफ, तापतिल्ली, कास, अरुचि इनका नाशक है ऐसे पीपर और सहत मिलाकर गिलोयका स्वरस पीना. एक भाग भूने हुए जीरेका चूर्ण और दो भाग पुराना गुड इनको बलके अनुसार सेवन करनेसे विषम ज्वर, मंदाग्नि और वातरोगका भी नाश होता है ॥१४०–१४५॥

यलोफीवर (पीलाज्वर).

इस ज्वरमें देहका रंग पीला हो जाता है इसीसे इसका नाम जर्दबुखार है और रुधिरयुक्त वमन होनेके कारण हैमियूगिया सटरंक फीवर भी कहते हैं.जो सम्पूर्ण

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अवस्थाओंमें उत्पन्न होता है, परंतु हिंदुस्थानमें कम उत्पन्न होता है. हेतु इसकी उत्पत्तिका जेहरीली पवन है. जिन स्थानोंमें जल भरे रहते हैं वहां मल मूत्रके कारण दुर्गंध आती है और पसीनोंमें भी दुर्गंध आती है इसीसे वहांकी पवन दूषित होकर विष फैल जाता है यह विष दो दिनसे पंद्रह दिनतक प्रवेश मनुष्योंकी देहमें होता है तब शीत लगकर ज्वर चढता है उस समयपर नाड़ी शीघ्रगमनी होती है. ज्वरका वेग १०२ किंवा १०५ दर्जेतक हो जाता है. नेत्रोंमें पानी भरभर आता है, भूक नष्ट,प्यास अधिक,जीभ किनारों और नोकपर लाल और मध्यभागमें मैली होती है. आमाशय, मस्तक, संधियोंमें शूल, वमन, कभी पीले रंगकी, कभी श्यामरंगकी होती है. जिसमें तीसरे चौथे दिन रक्त भी निकलता है.दस्त भी रक्तयुक्त होते हैं. मल पवन लगकर काला हो जाता है. सामर्थ्य रोगीकी जाती रहती है. ज्वरके दूसरे दिनसे मूत्रमें अलबूमन कभी रक्त निकलता है, कभी मूत्र कम होता है, कभी होताही नहीं है, अल्प रोग हो तो रोगी एक सप्ताहमें आरोग्य हो जाता है और तीव्र रोग हो तो थोडेही कालमें शीत आनकर और तीसरे चौथे दिन काले रंगकी उलटी होकर आमाशयमें रुधिर वहकर प्राणनाश हो जाते हैं.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

चिकित्सा.

पवनदार शीतल स्थानपर रोगीको राखे, प्रारम्भमें जुलाब देनेकी जरूरत हो तौ जुलाब देवे, उलटीके रोकनेको बर्फ चूसे, क्लिरोफारम सूंघे, क्लोरोडाइन् पीवे.

पिलैग (ताऊन.)

इस रोगका नाम महामारी है येभी छूतदार कमजोरीका ज्वर है. विषैली पवनके द्वारा फैल जाता है. (लक्षण) देहके भागोंमें बियूवो (गांठ) और कारबंगल उत्पन्न होते हैं, थोडे कालसे लेकर इक्कीस दिनमें इसका विष विदित होता है तब देह कांपकर ज्वर चढता उस समय मस्तक, पीठ, हाथ पांवोंमें घोर पीडा होती है. बेचैनी अधिक हो जाती है, बल नष्ट हो जाता है, दिलपर कष्ट होता है, रोगी भले प्रकारसे बात भी नहीं कर सक्ता है, नेत्रोंमें पानी भर आता है, नकसीर फूटती है, जिव्हा सूज जाती है, श्वासके लेनेमें कष्ट होता है, अजीर्ण होता है, मूत्र बंद हो जाता है, दो तीन दिनमें देहपर पिटीकियाई उत्पन्न होते हैं, दूसरे सप्ताहके प्रारम्भतक ये लक्षण मौजूद रहते हैं. पश्चात् या तो गांठोंकी सूजन कम हो जाती है या अधिक बढ जाती है. तीव्ररोग होनेसे चौवीस घंटेके भीतर तथा चार दिनसे छः दिनके मध्यमें प्राणनाश हो जाता है. अल्परोग होवे तौ दो तीन दिनमें

Indira Gandhi National Centre for the Arts

कदाचित् कुछ आराम भी होगया तौ फिर किसी और रोगके उपद्रव होनेसे भी प्राणनाश हो जाता है.

यह रोग एशियाके देशोंमें जगह जगह और मिश्रके देशमें सदा फैलता रहता है. रूस और रूमकी लडाईमें रणभूमिमें फैला था. अब कई वर्षसे बंबई इत्यादिक स्थानोंमें फैल रहा है.

वातबलासकज्वर.

नित्यं मन्दज्वरो रूक्षः शूनः कृच्छ्रेण सिद्ध्यति ॥ स्तब्धांगः श्लेष्मभूयिष्ठो नरो वातबलासकी ॥ १४६ ॥

जिसके शरीरमें नित्यही मंदज्वर, शरीर रूखा और सूजन, अंग जड,कफकी अधिकता ऐसे लक्षण होवें सो मनुष्य अतिकष्टसे आराम होता है ॥ १४६ ॥

गंभीरज्वरलक्षण.

गंभीरस्तु ज्वरो ज्ञेयो ह्यंतर्दाहेन तृष्णया ॥ आनद्धत्वेन चात्यर्थं कासश्वासोद्गमेन च ॥ १४७ ॥

अंतर्दाह और तृष्णा तथा अतिशय करिके वातादि दोष और मलके विबंध और श्वास तथा कासका प्रादुर्भाव होय उसको गंभीरज्वर कहते हैं ॥ १४७ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

साध्यलक्षण और उपद्रव.

बलवत्स्वल्पदोषेषु ज्वरः साध्यो-ऽनुपद्रवः ॥ श्वासो मूर्च्छाऽरुचिश्छर्दि-स्तृष्णातीसार विड्ग्रहः ॥ हिक्काकासां-गदाहाश्च ज्वरस्योपद्रवा दश ॥ १४८॥

जो प्राणी बलवान् है और वातादि दोष अल्प हैं और उपद्रवरहित ज्वर हो सो साध्य है. श्वास, मूर्छा, अरुचि, वांति, तृषा, अतीसार, विट्बंध, हुचकी, कास और अंगमें दाह ये ज्वरके दश उपद्रव हैं ॥ १४८ ॥

संतापोऽभ्यधिको बाह्य तृष्णादीनां च मार्दवम् ॥ बहिर्वेगस्य लिंगानि सु-खसाध्यत्वमेव च ॥ १४९ ॥ अंतर्दाहो-ऽधिका तृष्णा प्रलापः श्वसनं भ्रमः॥ सन्ध्यस्थिशूलमस्वेदो दोषवर्चो वि-निग्रहः ॥१५०॥ अन्तर्वेगस्य लिंगानि कष्टसाध्यत्वमेव च ॥ ज्वरः क्षीणस्य शूनस्य गम्भीरो दीर्घरात्रिकः ॥१५१॥ असाध्यो बलवान् यश्च केशसीमंत-कृज्ज्वरः ॥ १५२ ॥

शरीरके बाहर संतापकी अधिकता और तृषा

इत्यादिकोंका कमी रना होना ये बहिर्वेगके चिह्न हैं. ये सुखसाध्य हैं और जिस ज्वरमें अन्तर्दाह और तृषा अधिक तथा प्रलाप, श्वास, भ्रम, संधि और हाडोंमें शूल, पसीनेका अभाव, वात और मलका अवरोध ये लक्षण होते हैं उसको अंतर्वेगी ज्वर कहते हैं, सो कष्ट-साध्य है. और जो मनुष्य क्षीण और सूजनयुक्त होवे उसके बहुत दिनोंका गंभीर और बलवान् तथा शिरमें मांगकी जगहके बालोंका नाश करके मांग सीवन जावे सो असाध्य है ॥ १४९–१५२ ॥

रीमीटेंट फीवर.

इस भांतिका ज्वर उष्ण देशोंमें विशेषकरके उत्पन्न होता है और जबसे चढता है फिर नहीं उतरता है. केवल गरमी चौवीस घंटेमें अधिक और कम होती रहती है, गरमीके कम होनेको रीमीशन और अधिक होनेको एक्साईसरवेटीसिन कहते हैं. कभी इसकी तीव्रता बहुतही कम होती है. शरदी थोडी देर लगती है और पसीना भी थोडेही कालतक आता है. कभी पसीना नहीं भी आता है.इसके नाम भी स्थानोंके नामोंसे प्रसिद्ध हैं. जैसे जंगलमें उत्पन्न होनेसे हीलफीवर कहते हैं. एफिरिकामें एफिरिकन फीवर, तराईमें तराई फीवर और बंगालमें रीमीटेंट फीवर कहते हैं. उत्पत्तिका हेतु भी वही है जो इंटरमेंटेट फीवरकी उत्पत्तिके हेतु हमने कहे हैं,परंतु यह ज्वर जब अधिक होता है तब सूर्य-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

की तेजी होती है और मेलेरियाकी भी वृद्धि होती है. लक्षण ज्वरके विदित होनेसे चौवीस घण्टे पहिले बेचैनी और आमाशयमें कष्ट किंवा मंद शूल, उबकाई, भूख नष्ट, आलस्य, मस्तक और सर्वांगमें वेदना, दाह ये पूर्वरूपमें लक्षण होते हैं. फिर किंचित् ठंड लगकर ज्वर चढता है तब गरमी १०५ दर्जेकी एकवारही देहमें हो जाती है,उस समय चेहरा लाल और तमतमाया हुआ, देह रूखी, नेत्र लाल,मस्तकमें घोर पीडा, भ्रम, बकवाद, नाडी भारी किंवा महीन दबी हुई एक मिनिटमें १२० वार तडफती है. जिह्वा रूखी मलीन, होंठ सूखे, तृषा, वमन वारंवार होती है. उलटीमें प्रथम आहार निकलता है और जब ये व्याधि घोर हो जाती है तब उलटी भूरी और काली होती है.निद्राका नाश,रुधिरके इकट्ठे होनेसे खांसी और चेहरेका कुछ नीला रंग हो जाता है. मूत्र कम और लाल रंगका होता है.रीमीशनके समय कुछ अधिक मूत्र होता है.अजीर्ण और पतले दस्त होते हैं. छः घण्टेसे बारह घंटेके मध्यमें ये लक्षण कम होने लगते हैं,परंतु कभी चौवीस घंटेसे और अडतालीस घण्टेतक किंवा अधिक कालतक ज्वर निरंतर एकसा चढा रहता है. पश्चात् भ्रुकुटी और गर्दनपर पसीना आनकर लक्षण कम होने लगते हैं, ऐसी दशा

Indira Gandhi National Centre for the Arts

प्रातःकालमें हुआ करती है और आठ किंवा बारह घंटेतक रहा करती है, फिर ज्वरका वेग तीव्र हो जाता है. संध्यासमयपर गरमी बढती है और सम्पूर्ण रात्रिभरको रहती है लेकिन् किसीको ज्वर प्रारम्भसेही चौवीस किंवा छत्तीस घंटेतक निरंतर एकसा चढा रहता है. किसीको दो पहरके समय अधिक ज्वरका वेग हो आता है सो आधी रात्रिको कम होता है अथवा आधी रात्रिकोही चढता है सो प्रातःकालतक बढंता रहती है. जो अतितीक्ष्ण होता है सो ज्वर चौवीस घंटेके भीतर दो वार चढता है और उतरता है. ज्यों ज्यों रोगकी वृद्धि होती है त्यों त्यों बल नष्ट होता चला जाता है, देह पीली पड जाती है, कभी रक्त भी बहता, जिगर यकृत् प्लीहा (तिल्ली) बढ जाती है. मर्यादा इस ज्वरकी सात दिनसे चौदह दिनतककी होती है. यदि चिकित्सा इसकी भले प्रकारसे न होवे तो फिर इक्कीस दिनकी मर्यादा है. ज्वरके नष्ट होनेके पश्चात् बलहीन होनेके कारण रात्रिको पसीना आता है और नींद नहीं आती है. कभी उदरविकार भी हो जाता है. जब ज्वर उतरता है तब देहमें ऐंठन होनेका भय रहता है, बेहोशी बकवाद भी हो जाता है.

रीमीटेंट फीवरकी चिकित्सा.

इस ज्वरकी चिकित्सा बारीके ज्वरोंके समान करे

Indira Gandhi National Centre for the Arts

इसमें देहकी गरमीके शांतिके लिये सौलाइन मिक्श्चर तथा एफिरोसंग डराफिट हित है.

योग.

वाईकारबोन्ट आफ़ सोडियम-वीस ग्रेन, हिडरोसियान्क एसिड डायल्यूट दो बूंद, सिर्प आफ़ लैमन एक ड्राम, पानी दो औंस और इसमें चार ड्राम नींबूका रस तथा अठारह ग्रेन साइटरेक एसिड डाल देवे तौ एफिरोसंग डिराफट भी बन जायगा. जिसको चार चार तथा छः छः घंटेके अन्तरसे देते रहें.

सेकन्डयोग.

लाइकर एमोनिया एसीट्टिस दो ड्राम, नाइटिरस ईथर वीस बूंद, टिन्चर एकोनाइट दो बूंद, सिर्प आफ़ लैमन एक ड्राम, कम्फर वाटर एक औंस मिलाकर इसभांतिकी एक मात्रा तीन तथा चार घंटेके अन्तरसे देवे.

तृषाकी शांतिके लिये बर्फका पानी तथा शीतल करके चाह पिलाते रहे तथा वाईकारबोनेट आंफ़ पुटासियम एक औंस, सिर्प आफ़ लैमन एक औंस, पानी दो पाइंट मिलाकर जब प्यास लगे तब पिलाया करे तथा क्रीम आफ़ टारटर एक औंस, ओयल ऑफ़ लैमन पंद्रह बूंद, शक्कर दो औंस, खौलता हुआ पानी दो पाइंट मिलावे. शीतल करके पिलावे तथा किलोरिट आफ़ पुटासियम एक ड्राम, सिर्प आफ़ हमैड सम्स एक औंस, पानी एक पाइंट मिलाकर दिनभरमें पिलावे.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

थईयोग.

शर्बत नीलोफर एक औंस पानी मिलाकर पीना, ज्वरको शांत करता है.

यूनानीयोग.

आलूबुखार चार नग, तुरका, खयारन (खीरे, ककडीके बीज) नौ मासे, मबीज मुनक्का नग दस, कासनीके बीज छः मासे, खुरफेके बीज छः मासे और सौंफ छः मासे कूटकर एक छटांक शीतल जलमें भिगोदेवे. फिर छानकर शर्बत नीलोफर तीन तोले मिलाकर दिनभरमें तीन तीन घंटेके अन्तरसे पिलावे.

सिंकजवीन सिरका अंगूरी.

ककडी, खुरपुजाके बीज एक औंस, तरबूजेके बीज एक औंस, कासनी दो औंस, अंगूरी सिरका दस औंस, पानी एक पौंड मिलाकर औटावे और इतना पानी जला देवे कि जिसमें शक्कर और सिरका मिलानेसे दस औंस तोलमें हो जावे. फिर इसमेंसे आधा औंस तथा एक औंस पानीमें मिलाकर दिनभरमें चार वार पिलाया करे.

जो अजीर्ण हो तो जुलाब देवे तथा डाईफियूरेटिक मिक्श्चरमें मिलाकर सलफेट ऑफ़ मैगनेशियम उस रीतिसे बनाकर देवे जैसा कि हमने इन्टरमेटेंट फीवरकी चिकित्सामें कहा है. तथा विलाक डराफट तथा सैंड-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लीज पौडरका सेवन करावे. जब पित्तकी उत्पत्तिमें कमी हो तो सलफेट आफ् सोडियम दो ड्राम, सकक्स-टिरेकजेसाई एक ड्राम, डिकोकशन आफ् टिरेक जेकस दो औंस मिलाकर प्रभातके समय विना भोजन किये एकही वार पीवे.

बालकोंको गिरग्रेस पौडर वीस ग्रेनसे एक सौ वीस ग्रेनतककी मात्रामें देवे. भोजनका परिपाक न हुआ हो और उबकाई आती हो और वमन रुक रही हो तो ईपी-काकौना वीस ग्रेन गरम पानीमें मिलाकर पिलाकर उलटी करा देवे, कोइनाइन देवे. यदि प्रथम कोइनाइन देनेसे ज्वरका वेग न रुके तो फिर कोइनाइनही देवे. अजीर्ण हो तो एक दो मात्रा कोइनाइनमें वाइन्म एलोज एक ड्राम मिलाकर तथा दो ड्राम अपसिम साल्ट मिलाकर पिलावे.जो वमन अधिक होती हो तो कोइ-नाइन एफिरोसंग डराफ्ट दिया करे. यदि बेचैनी हो, दस्त होते हों तो आधा ग्रेन मारफाइनको कोइनाइनमें मिलाकर देवे परन्तु जब नाडी दीर्घगमनी हो और बल क्षीण हो और ज्वर छः सात दिन निरंतर एकसा चढा रहे और खुप्त न हो और बेचैनी और कष्ट अन्तपर अधिक हों तथा रोगी बकवाद न करता हो, मस्तकमें पीडा और झपनी न हो तो भी एनोडाइनका देना हित है क्योंकि ऐसी दशामें मस्तक (दीमाग), हृदय

Indira Gandhi National Centre for the Arts

(कलत्र) का कार्य्य (फल) ठीक नहीं रहता है और एनोडाइन अफीमसे हानि होती है और कौमा (सिरमें घूमनी, बेहोशी) तथा सन्कोपीसे प्राणोंके नाशका भय रहता है. ऐसी दशामें हायोसाइन १/२०० से १/७५ ग्रेनतक चर्ममें मल देना हित है.जब दीमागी अलामात (मस्तके लक्षण) तेजीसे हों (तीव्रता हो) तो कैलोमेल और जलेप खिलावे और मस्तकको शीतल पानीसे भिगोते रहे किंवा शीतल जलके छींटे देते रहे. हालत खफ्तमें जब झपनी हो तो गर्दनपर एक बिलास्टर (फफोला उठावे) लगावे. रोगी बकवाद करता हो, बल क्षीण हो गया हो तो बलदायक पाचन, दीपन, अल्प आहार वारंवार देवे, परंतु जब निगलनेकी सामर्थ्य रोगीकी जाती रहे तो औषध और आहार दोनों पिचकारीमें भरकर आमाशयमें पहुँचावे.हरारत अधिक हो तो तब थोडी बून्द टिञ्चर एकोनाइट मिला देवे. आमाशयमें खराश हो तथा पीलियाका रोग हो तो फैममेदपर (आमाशयके ऊपर) मस्टरेड पिलास्टर तथा बिलास्टर लगावे तथा टरपनटाइनसे सेक करे तथा आयोडाइन लैनीमेंट लगावे, बर्फ खिलावे, किलोराफारम सुंघावे तथा किलोरोफारम एफिरोसंग डराफटके साथ मिलाकर पिलावे तथा किलोरोफारममें वस्त्र भिगोकर आमाशयपर रखे और ऊपरसे: आयल सल्क तथा

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मोमजामासे ढक देवे. जिगरमें सूजन हो तो सेक देवे तथा मस्टरेड पिलास्टर लगावे.

बल नष्ट होजानेकी दशामें भूख लगनेका उपाय.

ज्वरके पश्चात् कमजोरी होनेके कारण भूख नहीं लगती है, इसलिये भूख लगनेके लिये और बल बढानेके लिये रजोसड आयरन दो ग्रेन, सलफेट आफ् कोइनाइन एक ग्रेन, संखिया $\frac{१}{२०}$ ग्रेन मिलाकर गोली बनावे और ऐसे दो तीन बार भोजन करनेके पश्चात् खिलावे तथा साइटरेट आफ् आयरन एण्ड कोइनांइन तीस ग्रेन, इनफियूजन कोसिया बारह औंस मिलाकर दिनमें तीन वार एक औंसकी मात्रामें पिलावे. जो देहपर सूजन हो तौ सलफेट आफ् कोइनाइन सलफेट आयरन प्रत्येक बारह बारह ग्रेन, लाइकर इस्टर किनाई तीस बून्द, एरोमेटिक सलफियूरिक एसिड डेढ ड्राम, इनफियूजन् कोशिया छः औंस मिलाकर एक औंसकी मात्रामें तीन वार देवे.

सर्वज्वरोंकी चिकित्सा.

दहनसैंधवपूतनिकाकणाऽऽमलकचूर्ण-
मिदं रुचिदायकम् ॥ हरति हारद्दगु-
द्ववसंचयं द्रुतविलंबितकं च कफं ह-
रेत् ॥ १५३ ॥

चित्रक, सैंधानोन, हरड, पीपर और आंवला इनका चूर्ण रुचिदायक और सर्वज्वरोंका नाशक तथा कफनाशक है ॥ १५३ ॥

शर्बत नीलोफर.

मस्तककी पीडा और पित्तज्वर और श्वास जात-उलरियाको नष्ट करता है. नीलोफरके फूल दो तोले दस मासे औटाकर छानकर कंद चौदह छटांक डाल-कर चासनी कर बना लेवे.

अर्क शारिवसंत.

तपेदिक (विषम जीर्ण गंभीर ज्वर) और सौदावी पित्तोंको हित है. बकरीका दूध पांच सेर, वेदमुश्क सेरभर, अर्कवेद सादा दो सेर, अर्क शाहतरा सेरभर, मिश्री आध पाव मिलाकर अर्क द्वारा खींच लेवे.

अर्ककपूर दूसरा योग.

सूए मिजाज गरमको और तपे मौहारिका और तपेदिक और तेज पित्तोंको नष्ट करता है. नीलोफरके फूल दो तोले दस मासे,कादूकी पत्ती,कनेववेद (जंगली वेदका फल), कासनी, हरी, जौ छिले हुए प्रत्येक आध पाव कम सेर, चंदन सफेद सवा ग्यारह तोले, कद्दू ताजा, वाकला ताजा प्रत्येक दो तोला दस मासे; गुलाबके पुष्प पौने दो सेर, खुरफेके बीज भूसी ऊपरकी उतारकर सात छटांक, वंशलोचन कतीरा प्रत्येक पौने

Indira Gandhi National Centre for the Arts

चार तोले, अर्कवेदमुश्क, अर्कनीलोफर, अर्कवेदशाहतरा प्रत्येक चौदह छटांक, गुलाब पौने दो सेर सबोंको मिलाकर अर्क द्वारा खींचे और अर्क खींचते समय साढे सात तोले कपूर कैसूरी प्रथम पीसकर जिस पात्रमें अर्क टपकता है उसमें डाल देवे.

कुर्स जरश्क.

चौथिया तप (चातुर्थिकज्वर) को किमवाद उसका सफरा (पित्त)से हुआ हो तो नष्ट करती है.उसारा जरश्क साढे सतरह मासे, उसारा गाफिस, वंशलोचंन प्रत्येक सात मासे, लाख धुली हुई, कन्दर, बालछड, उसारा अफतीन, रेवन्दचीनी, गाउजुबां प्रत्येक पौने नौ मासे, केशर साढे तीन मासे कूट छानकर हरी कासनीके पानीमें टिकिया बना लेवे.

कुर्स जरश्क दूसरा योग.

तपेगैव और हरारत जिगर और आमाशयको शांत करता है और प्यासको बुझाता है और जलन (दाह)-को शांत करताहै. जरश्क वीहीदाना, खुरबुजाके बीज, खीरे, ककडीके बीजकी मिंगी, कद्दूके बीजोंकी मिंगी, तरबूजके बीजोंकी मिंगी प्रत्येक साढे सतरह मासे, वंशलोचन, गुलाबके फूलोंकी पंकडी, सफेद चंदन प्रत्येक पौने सात मासे, रेवाचीनी सवा दो मासे, लाख धुली हुई नौ मासे, अजमोदके बीज,कपूर प्रत्येक सवा

Indira Gandhi National Centre for the Arts

दो मासे, केशर ४ रत्ती डेढ चावल कूट छानकर कशोतके पानीमें मिलाकर टिकिया बना लेवे. मात्रा इसके खानेकी साढे चार मासे.

कुर्स तवाशीर ममसिक.

तपै मोहरिक सफराबीको हित है और दस्तोंको बंद करती है, रक्तको रोकती है और प्यासको बुझाती है. गुलाबके फूल चार तोले साढे चार मासे, बबूलका गोंद निसास्ता, चूकेके बीज,गेरू प्रत्येक तीन तोला, वंशलोचन, सुमाक (पारा), जरश्क, बीदाना प्रत्येक दो तोले कूट छानकर गुलाबजलमें टिकिया बना लेवे.

कुर्स कपूर.

(कपूरकी टिकिया) यरकान) कमलवायु) और तपे गरम (गरमीकी ज्वर) को नष्ट करती है, जरश्क, बेदाना, वंशलोचन, गुलाबके फूल प्रत्येक दो तोला, काहूके बीज, खुरफेके बीज, कासनी, कतीरा प्रत्येक साढे दस मासे, खरबुजेके बीजोंकी मिंगी, कद्दूके बीजोंकी मिंगी प्रत्येक साढे सतरह मासे; सफेद चंदन,मुलहठीका सत्त प्रत्येक सात मासे, कपूर साढे तीन मासे,इसपगोलका लुआव मिलाकर टिकिया बना लेवे. मात्रा इसकी सात मासेकी है. सिकंजबीनके साथ खिलावे.

कुर्स बनफशा.

ज्वर और खांसीका नाश करती है, बनफशा, मीठे

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

बादामकी मिंगी, कद्दूके बीजोंकी मिंगी, खीरे, ककडीके बीजोंकी मिंगी, कतीरा प्रत्येक साढे सतरह मासे; गेहू, मुलहठीका सत्त, निसास्ता प्रत्येक साढे दस मासे मस्तंगी साढे चार मासे, बालछड साढे तीन मासे कूटकर जलमें टिकिया बनावे. मात्रा इसके खानेकी साढे चार मासे है.

कुर्स मुबार्क.

यह तपेदिक और तपेमोहरको तथा गरम पित्तोंको शांत करती है, (विषम जीर्ण) ज्वरोंको नाश करती है. गुलाबके फूल, तुरंजबीन प्रत्येक साढे सतरह मासे, खीरे, ककडियोंके बीजोंकी मिंगी, वंशलोचन प्रत्येक पौने नौ मासे, काहूके बीज एक तोला एक मासा, खरबूजेके बीजोंकी मिंगी साढे दस मासे, कासनीके बीज चौदह मासे, कद्दूके बीज सात मासे, मुलहठीका सत्त साढे चार मासे, कपूर छः रत्ती सवा दो चावल ये सब कूटकर टिकिया बना लेवे.

तालीशपत्रं मरिचं नागरं पिप्पली शुभा ॥ यथोत्तरं भागवृद्ध्या त्वगेले चार्द्धभागिक ॥ १५४ ॥ पिप्पल्यष्टगुणा चात्र प्रदेया सितशर्करा ॥ श्वासकासारुचिहरं तच्चूर्णं दीपनं परम् ॥ १५५ ॥ हृत्पांडुग्रहणीरोगप्लीहशोषज्वराप-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

हम् ॥ छर्द्यतीसारशूलघ्नं मूढवातानु-
लोमनम् ॥ १५६ ॥

तालीसपत्र, मिरच, सोंठ, पीपर, वंशलोचन इनको एकसे एक भाग अधिक लेकर जैसे तालीसपत्र एक भाग, मिरच दो भाग, सोंठ तीन भाग, पीपर चार भाग इनका चूर्ण श्वास, कास, अरुचि, हृदयरोग, पांडु, संग्रहणी, प्लीहा, शोष और ज्वर इनका नाश करता है ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥

मतबूख (काढा).

तप बलगमी (कफज्वर) और चातुर्थिक ज्वर और दर्द जिगर और अमाशयके शूलको नष्ट करता है. अज़मोदकी जड, सौंफकी जड. अजखरकी जड, हंस-राज, सौंफ रूमी मस्तंगी सब बराबर भाग लेकर काढा बनाकर पिलावे.

मतबूख (काढा).

चातुर्थिक ज्वरको नष्ट करता है. काबूली हरड तीन तोला, पीपलकी जड साढे दस मासे, जीरा किर-मानी पौने दो मासे कूटकर सवा दो सेर पानीमें औटावे जब सात छटांक शेष रहे तब छानकरके उसका तीसरा भाग पिलावे.

काढा तपलर्जा (जाडाजुडी ज्वरपर).

खस, रक्तचंदन, धनियां, नरकचूर, सोंठ, गिलोय

Indira Gandhi National Centre for the Arts

हरी प्रत्येक एक तोला आठ मासे लेकर तीन पुडियां बनावे. एक पुडिया उसमेंसे आठ सकोरा पानीमें औटावे. जब एक सकोरा पानी बाकी रहै छानकर पिलावे, किन्तु बालकको कम पिलावे.

जुशांदा.

चातुर्थिकज्वरका नाश करता है. पोस्त खशखाश जितना जरूरत हो लेकर और दस काली मिरच मिलाकर काढा बनाकर पिलावे तथा काबुली हरडका वक्कल तीन तोला, कसोतके बीज, कासनीके बीज प्रत्येक साढे दस मासे, आलूबुखारे नग २०, उन्नाव विलायती नग २०, सौंफकी जडका छिलका सात मासे, शाहतरा दो तोले इनका काढा बनाकर छानकर फिर काढेमें अमलतास और माजून वर्द प्रत्येक चार तोले साढे चार मासे मिलाकर फिर छानकर पिलावे.

योग.

आलूयेसिहा नग २०, उन्नाव नग २०, ल्हसौडे नग २०,मुनक्का खुरमा ये हिन्दी प्रत्येक छः तोला,गुलाबके फूल, सनायके पत्ते प्रत्येक दो तोला, बनफशाके फूल, खुरफेके बीज, कसोतके बीज प्रत्येक चौदह मासे,सौंफ, सौंफ रूमी, शाहतरा प्रत्येक तीन तोले, पीली हरडका वक्कल चार तोला साढे चार मासे लेकर डेढ पाव कम तीन सेर पानीमें औटावे. शीशाके करावे (कांचके

शीशा) में भरकर धूपमें दिनके समय और रात्रिको उष्णस्थानमें तीन दिनतक रखे, फिर इसमेंसे प्रभात कालको ग्यारह तोला आठ मासे लेकर और उसमें सिकंजबीन चार तोला साढे चार मासे और शर्बत बनफशा तीन तोला मिलाकर पिला दिया करे तो तप दमूई और पित्तज्वरका नाश हो जायगा.

हुब्ब (गोली खांसीपर).

मुलहठीका सत्त साढे सतरह मासे, काली मिरच, करूमाना, हींग, बादामकी मिंगी प्रत्येक सात मासे लेकर शहतमें गोलियां बनावे तथा निसास्ता, गोंद बबूल, तुख्मखैयार प्रत्येक साढे चार मासे, मुलहठीका सत्त, मुनक्का, कतीरा प्रत्येक साढे दस मासे, बतासा, खशखाश प्रत्येक चौदह मासे मिलाकर गोलियां बनावे.

खांसीकी गोली.

बबूलका गोंद, कतीरा, मुलहठीका सत, केशर, खुरफेके बीज, मीठी बादाम, कडवी बादाम, पिस्ता, सनोवरके बीज, सौंफ रूमी, अलसी प्रत्येक आधा-भाग, कद्दूके बीज, खुरबुजाके बीज, खीरे, ककडीके बीज, खशखाशके बीज प्रत्येक एक भाग, कदाचित् हृदय और फैंफडेमें घाव हो तो इसमें हंसराज दो भाग, जूफा ढाई भाग, मेथी तीन भाग, निसौत चार भाग और जो किसी प्रकारका ज्वर भी हो तो इसमें गेरू, गुलम खतूम

Indira Gandhi National Centre for the Arts

प्रत्येक तीन भाग बढादेवे और सम्पूर्ण औषधियोंको बराबर भाग शक्करमें मिलाकर और लुआब तुख्म कनूचा तथा लुआब ईसपगोल तथा जुलाब तुख्म रीहां और बनफशाका तेल मिलाकर गोलियां बनावे.

शर्बत ऐजाज खांसीपर.

विलायती उन्नाव नग २०, लसोडे नग ६०, मुलहठी छिली हुई, तुख्म खुबाजी, तुख्म खत्मी, नीलोफरके फूल, बनफशाके फूल प्रत्येक दो तोला, बीदाना साढे सतरह मासे, कतीरा, गोंद बबूलका प्रत्येक साढे दस मासे, अडूसेके पत्ते आधी छटांक कम आधसेर, कंद छटांक कम सेर लेकर औटावे. कतीरा और गोंदको औटाते समयपर न डाले, जब औट जावे तब छानकर कंद मिलाकर चासनी कर शर्बत बनावे, फिर इसमें कतीरा और गोंदको पीसकर डाल देवे.

शर्बत सिपस्तां.

सिपस्तां नाम लसोडोंका है. यह शर्बत श्वास, कास, खांसी इत्यादिकको नाश करनेवाला नोटबुक क्याखूब हकीमसे है. लसोडे ढाई पावको लेकर आधपाव कम दो सेर पानीमें औटावे जब तिहाई बाकी रहे तब मल-कर छान लेवे और फिर उसमें कंद सफेद पंद्रह छटांक डालकर चासनी बनाकर शर्बत बना लेवे. चौबे क्याखूब हकीमका ब्यान है. कि ये मैंने इलाज उलइमराजसे

Indira Gandhi National Centre for the Arts

अपनी नोटबुकमें लिखा था; इसकी प्रशंसा मुझसे हो नहीं सकती है. खांसीके सम्पूर्ण रोगोंको नष्ट करता है.

शर्बत अन्जवार.

अकाकिया नौ मासे, रक्तचंदन, सफेद चंदन दोनों चंदन पिसे हुए प्रत्येक एक तोला साढे दस मासे,कन्द सफेद छटांक कम सेर पूर्व रीतिसे शर्बत बना लेवे, खांसीको नष्ट करता है.

लाऊक अलसी.

लुआब अलसीका, सहत, लाल शक्कर प्रत्येक आधी छटांक कम आध सेर सबोंको औटावे अवलेहसमान बना लेवे. मात्रा इसकी तीन तोला है. फैंफडेकी सूजनको नष्ट करती है.

लाऊक वंशलोचन.

प्राचीन घाव, फैंफडेको और हृदयको हित है और गरमी और खरखराट, हृदय और फैंफड़ेको नष्ट करती है. बबूलका गोंद, निसास्ता, खशखाशके दाने सफेद प्रत्येक छः तोला, वंशलोचन चौदह मासे, कद्दूबीजोंकी मींगी, खीरे, ककडीके बीजोंकी मींगी प्रत्येक छः तोले, खुबाजीके बीज, खत्मीके बीज प्रत्येक साढे दस मासे महीन कूट छानकर सहत और बादामके तेलमें मिलाकर माजूम बना लेवे और चीनीमिट्टीके पात्रमें रख छोड़े.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लाऊक बादाम.

खांसी और खरखराट हल्क औंसालेके रोगोंको नष्ट करती है. गोंद बबूलका, कतीरा, निसास्ता, मुलहठीका सत प्रत्येक साढे सतरह मासे, कंद सफेद छः तोले, बादामकी मींगी, कद्दूके बीजोंकी मींगी प्रत्येक साढे दश मासे जुलाबमें मिलावे (जुलाब) नाम उस पदार्थका है कि सहतको गुलाबजलमें औटाकर किंवा शक्करको गुलाबजलमें औटाकर चाशनी करके बनाते हैं. वही जुलाब कहलाता है.

इति श्रीमन्माथुरकुलोद्भवचातुर्वेदीयशंकरलालमथुरानिवासी तस्यात्मजचौबेक्याखूबरामप्रसादविरचिते ज्वरतिमिरनाशके चातुर्थिकं प्रकरणम् ॥ ४ ॥

अथ पंचमं प्रकरणम् ।

जवारश ऊद.

आगरखाम सात मासे कूट छानकर आधी छटांक कम आध सेर कंद औटाकर उसमें डालकर मिलावे और थोडी लोंग और छोटी इलायची और केसर चासनी करनेके पीछे मिलाकर और चमचेसे लौट पलटकर अग्निपरसे उतार लेवे.

Indira Gandhi National Centre for the Arts

जवारश ऊद मीठी.

अगर हिन्दी साढे सतरह मासे, लोंग साढे दस मासे, छोटी इलायची, बडी इलायची, बालछड प्रत्येक सात मासे, केशर साढे तीन मासे कूट छानकर पावभर सहतमें मिलावे.

जवारश ऊद तुर्श (खट्टी)

रुब्ब सेवतुर्शका तीन तोला नौ मासे, रुब्ब बीतुर्शका, रुब्ब जरश्कका, पानी मीठे अनारका, पानी खट्टे अनारका, प्रत्येक तीन तोले नौ मासे, पानी तुरसा तुरंजका, नींबूका रस प्रत्येक साढे सात तोले, मिश्री छटांक कम सेर, सहत साढे सात तोले, अगर हिन्दी साढे सात तोले, विना भिदे मोती, पोस्त, विरूपिस्ता, मस्तंगी, वंशलोचन, सफेद चन्दन, कहरवा समई, तेजपात, पोस्त जर्द तुरंजका, वादरंजबीया, दालचीनी, छोटी इलायचीके दाने प्रत्येक डेढ तोला, केशर साढे चार मासे अग्निपर पकाकर बना लेवे.

दूसरा योग जवारश ऊदका.

लोंग सात मासे, बालछड साढे तीन मासे, अगर खाम साढे सतरह मासे और मिश्री पंद्रह छटांक. मिश्रीको गुलाबजलमें घोलकर चासनी मंद अग्निपर बनावे और अग्निपरसे उतारकर चमचेसे हिलाते जावे और ऊपर कही हुई औषधियोंको पीसकर उसमें डालते

Indira Gandhi National Centre for the Arts

जावे और चलाते मिलाते बराबर रहे, खूब घोटकर पात्रमें भरकर रख लेवे. यह जवारस भूख बढाती है, आमाशयकी ठंढको नष्ट करके गरम करती है और हाजमाको बढाती है.

सफूफ.

एक घंटेमें दस्तोंको बंद करता है. शहाबलूत साढे दश मासे, माजु, पोस्त, अनार प्रत्येक चौदह मासे, गेरू सुमाक (पारा) पौने दो तोला, हुब्बुलल्लास (मोरदके बीज) दो तोला कूट छानकर चूर्ण बनावे. मात्रा इसकी सात मासेकी है, शीतलजलके संग फंकी लेवे.

सुदर्शनचूर्ण.

कालीयकं तु रजनी देवदारु वचा धनम् ॥ अभया धन्वयासश्च शृंगी क्षुद्रा महौषधम् ॥ १ ॥ त्रायंती पर्प्पटं निम्बं ग्रन्थिकं बलकं शठी ॥ पौष्करं मागधी मूर्वा कुटजं मधुयष्टिका ॥२॥ शिग्रूद्भवं सेन्द्रयवं वरी दार्वी कुचंदनम् ॥ पद्मकं सरलोशीरं त्वचं सौराष्ट्रिका स्थिरा ॥ ३ ॥ यवान्यतिविषा बिल्वं मरिचं गन्धपत्रकम् ॥ ४ ॥ धात्री गुडूची कटुकं सचित्रकपटोलकम् ॥ ५ ॥

कलशी चैव सर्वाणि समभागानि कारयेत ॥ सर्वद्रव्यस्य चार्द्धं तु कैरातं संप्रकल्पयेत् ॥ ६ ॥ एतत्सुदर्शनं नाम ज्वरान्हंति न संशयः ॥ पृथग्दोषैश्च विविधान् समस्तान् विषमज्वरान् ॥ ७ ॥ प्राकृतं वैकृतं चापि सौम्यं तीक्ष्णमथापि वा ॥ अन्तर्गतं बहिस्थं च निरामं साममेव च ॥ ८ ॥ ज्वरमष्टविधं हंति साध्यासाध्यमथापि वा ॥ नाना दोषोद्भवं चैव वारिदोषभवन्तथा ॥ ९ ॥ विरुद्धभेषजभवं ज्वरमाशु व्यपोहति ॥ प्लीहानं यकृतं गुल्मं हंत्यवश्यं न संशयः ॥ १० ॥ यथा सुदर्शनं चक्रं दानवानां निषूदनम् ॥ तथा ज्वराणां सर्वेषामिदमेव निगद्यते ॥ ११ ॥

कृष्णागरु, हलदी, देवदारु, वच, नागरमोथा, हरड, धमासा, काकडासिंगी, भटकटैया, सोंठ, त्रायमाण, पित्तपापडा, नींबकी छाल, पीपलामूल, सुगंधवाला, कपूरकचरी, पटोल, पीपर, रक्तचंदन, पद्मकाष्ठ, चीडकी

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लकडी, मुरहरा, कूडेकी छाल, मुलहठी, सहँजनेके बीज, इंद्रजौ, शतावरी, दारुहल्दी, खस, तज, गोपीचंदन, शालवन (गोरख गांजा), अजवायन, अतिविष, बेलफल, काली मिरच, तमालपत्र, आंवला, गिलोय, कुटकी, चित्रक, पिठवन ये सब समान भाग और इन सब द्रव्योंका आधा भाग किरायता ये सब कूट छानकर चूर्ण बनावे-यह चूर्ण वातपित्त और कफजन्य, द्वंद्वज, सन्निपात और अनेक प्रकारके सर्व विषमज्वर, प्राकृत, वैकृत, सौम्य, तीक्ष्ण, अन्तर्वेगी, बहिर्वेगी, निराम, साम ऐसे आठ प्रकारके साध्यासाध्य ज्वरोंका नाश करता है तथा जो अनेक प्रकारके जलदोषसे और जो विरुद्ध औषधसे भी उत्पन्न हुए हों उन ज्वरोंका नाश करता हे तथा तापतिल्ली, यकृत्, गुल्म और सर्व ज्वरोंका नाश करता है ॥ १-११ ॥

दूसरा योग सुदर्शनचूर्णका.

त्रिफला रजनीयुग्मं कंटकारीयुगं शठी ॥ चित्रकं ग्रंथिकं मूर्वा गुडूची धान्यवासके ॥ १२ ॥ कटुका पर्पटो मुस्ता त्रायमाणं च वालकम् ॥ निंबं पुष्करमूलं च मधुयष्टी यवासकम् ॥ १३ ॥ यवानीन्द्रयवा भार्ङ्गी शिग्रु-

बीज सुराष्ट्रकम् ॥ वचात्वक् पद्मकोशीरं चंदनातिविषा बला ॥१४॥ शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी विडंग तगरं तथा ॥ चित्रको देवदारुश्च चव्यं पत्रं पटोलकम् ॥ १५ ॥ पुंडरीकं च काकोली पत्रकं जातिपत्रकम् ॥ तालीसपत्रं च तथा समभागानि चूर्णयेत् ॥ १६ ॥

त्रिफला, हल्दी, दारुहल्दी, कटेली छोटी, बडी कटेली, कचूर, पीपलामूल, मूर्वा–लताविशेष, गिलोय, धनियां, सोंठ, चित्रक, पित्तपापडा, मोथा, नींबकी छाल, पुहकरमूल, मुलहठी, अडूसेके बीज, शालिपर्णी, पृष्ठिपर्णी, वायविडंग, तगर, चीता, फिटकरी, वच,तज पद्माख, खस, चंदन, अतीस, बलबीज, कुटकी, अजवायन, इंद्रजौ, भारंगी, देवदारु, पटोलपत्र,विजयसार, लौंग, वंशलोचन, कंकोल, कमलगट्टा, तमालपत्र, जावित्री, तालीसपत्र ये सब बराबर भाग लेवे और इनसे आधा चिरायता लेवे और सबको कूटकर चूर्ण करे ॥ १२–१६ ॥

चंडेश्वररस.

रसं गंधं विषं ताम्रं मर्दयेदेकयामकम् ॥ आर्द्रकस्य रसेनैव मर्दयेत्सप्त-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

वारकम् ॥ १७ ॥ निर्गुंड्याः स्वरसे पश्चान्मर्दयेत्सप्तवारकम् ॥ गुंजेकार्द्र-रसेनैव दत्त्वा हंति ज्वरं क्षणात् ॥१८॥ वातजं पित्तजं श्लेष्मद्विदोषजमपि क्षणात् ॥ सुशीतलजले स्नानं तृष्णार्तें क्षीरभोजनम् ॥ १९॥ आम्रं च पनसं चैव चंदनागरुलेपनम्॥एतत्समो रसो नास्ति वैद्यानां हृदयंगमः ॥ २० ॥ एष चंडेश्वरो नाम सर्वज्वरकुलांत-कृत् ॥ २१ ॥

शुद्ध पारा, गंधक, बचनाग, तांबाभस्म इनको एक प्रहर खरलमें घोटकर फिर अदरखके रसमें सातवार इसी भांतिसे खरलमें घोटे,फिर इसी भांतिसे संभालूके रसमें सातवार घोटे, फिर इसमेंसे एक रत्ती अदरखके संग देनेसे वातज, पित्तज, कफज, द्विदोषज ऐसे इन सर्व ज्वरोंका यह चंडेश्वर रस नाश करता है. इसका सेवन करनेवाला सुंदर शीतल जलसे स्नान करे, तृषा लगे तौ दूध पीवे तथा दूध भात खाय. आम्रफल तथा कटहर खावे, चंदन और अगरका लेप करे ॥ १७–२१ ॥

व्याधिनाशक रस.

पारदं गन्धकं तालं भल्लातं च तथैव

च ॥ वज्रीक्षीरसमायुक्तमेकत्र च वि-
मर्दयेत् ॥ २२ ॥ मृत्तिकाभाजने स्था-
प्यं मुद्रितव्यं विचक्षणैः ॥ अग्निं प्र-
ज्वालयेत्तत्र प्रहरद्वयसंख्यया ॥२३॥
शीतलं खल्लयेत्तत्र भावना च प्रदीय-
ते ॥ भृंगराजरसे तत्र गण्डदूर्वाभवै
रसैः ॥ २४॥ चित्रकस्य रसेनापि भा-
वना दीयते पुनः ॥ पश्चात्तच्चूर्णये-
द्यत्नात् कूपिकायां च धारयेत् ॥ २५ ॥
ज्वर उत्पद्यते तस्य चतुर्थे चापरे
पुनः ॥ माषैकं च रसं देयं तत्क्षणान्ना-
शयेज्ज्वरम् ॥ २६ ॥ ज्वरे शांते परं
पथ्यं देयं मुद्गौदनं पयः ॥ २७ ॥

पारा, गंधक, हरिताल, भिलावा इनको सेहुंडके दूधमें खरल करे, फिर हांडीमें रखकर मुख बंद करके चूल्हेपर दो प्रहरतक अग्नि देवे. स्वयं शीतल होनेपर उसमेंसे निकालकर भांगरा, गंडदूर्वा और चित्रकके रसकी न्यारी न्यारी एक दिनभर एक एक भावना देवे. फिर इसमेंसे एक उरदके समान देवे जब ज्वर शांत होजावे तब मूंगभात किंवा दूधभातकी पथ्य देवे ॥२२-२७॥

१२

Indira Gandhi National Centre for the Arts

स्कार्लेट फीवर (लाल ज्वर).

यह रोग वर्षाके पश्चात् उत्पन्न होता है और तीन प्रकारका होता है. सिंपिल स्कार्लेट फीवर, एनजीनोज स्कार्लेट फीवर और मिलैगनेट स्कार्लेट फीवर. जिनको हम संक्षेप करके कहते हैं. सिंपल स्कार्लेट फीवर (अल्परोग) छूत लगनेसे चार दिनसे छः दिनतक तो कोई लक्षण प्रगटमें नहीं होते हैं, फिर कंठमें ही अल्प सूजन होकर पीडा होती है और एकवार शीत लगकर ज्वर चढ़ आता है. देहमें गति गरमीकी १०४ से १०९ दरजेकी हो आती है. ज्वर होते ही दूसरे दिन लाल दाने प्रथम गलेपर, फिर चेहरा, हृदय, हाथ, पीठ, पेटपर और अन्तमें पांवोंपर उत्पन्न होते हैं, जिनमें खुजली और जलन होती है. तीन दिनतक वे वैसेही रहते हैं फिर मुरझा जाते हैं. फिर पांच दिन पीछे ज्वर उतर जाता है, फिर आठ नौ दिन पीछे या कभी तीन चार सप्ताहमें इनपरसे छिलकेसे उतर जाते हैं. एनजीनोन स्कार्लेट फीवर इसके लक्षण तीव्र होते हैं. ज्वरमें वमन दस्त होते हैं, ज्वरके दूसरे दिन कंठमें सूजन होती है जिसके हेतुसे तालुए और कानमें भी सूजन हो जाती है और घाव हो जाते हैं. कभी २ हृदय, हाथ और पावोंमें फूटकर दाने निकलते हैं, जो उत्पन्न होते ही उसी दिन नष्ट हो जाते हैं और फिर उत्पन्न हो जाते हैं

दानोंके नष्ट होतेही ज्वरमोक्ष हो जाता है. मिलगनेंट स्कार्लट फीवर यह इन दोनोंसे तीव्र है जो चौवीस घंटेमें कभी प्राणनाशक हो जाता है. प्रारंभसेही रोगी बलहीन हो जाता है, हाथ पांव शीतल हो जाते हैं, बकवाद, झपनी, तंद्रा, वमन होती है. जिह्वा भूरी, गर्दनपर सूजन, कंठमें सडे हुए घाव, ज्वरका वेग तीव्र, बेचैनी, नाडी महीन, श्वासमें दुर्गंध, मुख और दांतोंपर पापडी पड जाती है. अंतमें देहपर लाल काली फुंसियां उत्पन्न होकर थोडे कालमें नष्ट होती हैं. तीसरे किंवा चौथे दिन मूत्र बंद हो जानेसे कौमा (बेहोसी, चक्कर) आनकर रोगीके प्राण नष्ट होते हैं.

चिकित्सा.

सिंपल स्कार्लट फीवरमें रोगीको अलग पवन, स्थानमें वस्त्र धारण कराकर रखे.शीतल पदार्थ पिलावे प्रारम्भमें रोगसे पांच छः दिनतक रोगीको पतले आहार खिलावे. एनजीनोज स्कार्लट फीवरसे पीडितके शरीरपर शीतल जलमें स्पंज भिगोकर फेरे. वमन होती हो, जिह्वा मैली हो तौ इपीकाक्यूना देवे. कंठकी सूजनकी शांतिके लिये गरम पानी, सलफोरस एसिड तथा कान्डीज सोल्यूशनका बफारा कंठमें देवे. किलोरेट आफ पुटासियम पानीमें मिलाकर कुल्हे करावे. टिन्चर इस्टील वीस बूंदसे चालीस बूंदतक

Indira Gandhi National Centre for the Arts

मात्रामें तीन तीन तथा चार चार घंटेके अंतरसे देना हित है. इसमें कोईनाइन और मेदनी तेजाब भी मिला देवे, जो मुख अधिक सूज गया हो तौ शोरुआ (मांसरस), दूध, ब्रांडी, एमोनिया इत्यादिक देवे. मिलगनेंट स्कार्लेट फीवरसे पीडितको प्रारंभसे ही बलदायक औषधि देवे. उष्णजलमें मस्टरेड (राई) मिलाकर स्नान करावे तथा शीतल जलके छींटे देवे, बेहोशी हो तौ गरदनपर फफोला उठावे (बिलास्टर लगावे), गुरदेमें सूजन हो तौ अलसीकी पुलटिस बांधे, गरम पानीका बफारा देवे, अजीर्ण हो तौ कम्पौंड जलेप पौडर खिलावे.

गौरीशंकरका चौबे क्याखूबजी हकीमसे प्रश्न— स्कार्लेट फीवरमें क्या क्या उपद्रव होते हैं और इसकी उत्पत्तिका हेतु क्या है सो कहिये ?

उत्तर—मुख्य हेतु इसकी उत्पत्तिका गुरदेकी सूजन है. ज्वरके नष्ट हो जानेके पंद्रह दिन पीछे संधियोंमें पीडा होती है, कभी संधियोंमें पीप पड जाता है, श्वास कास होते हैं, कान पक जाते हैं, कम सुनाई देने लगता है, मस्तकतक सूजन हो जाती है, नेत्रोंमें पीडा और पुतलीमें घाव, फैंफडेमें पीप पड़ जाती है.

पियोर पर्ल फीवर (प्रसूतज्वर).

बालकके उत्पन्न होनेके दूसरे तीसरेदिन यह ज्वर उत्पन्न

Indira Gandhi National Centre for the Arts

होता है, किंचित् ठंड लगकर ज्वर चढता है, देहमें गरमी ज्वरका वेग १०२ तथा १०६ दरजेकी होती है, नाडी एक मिनिटमें १००से १४० वार तडफती है. गर्भाशयमें अल्प तथा तीव्र शूल होता है सो फिर सम्पूर्ण देहमें फैल जाता है. अजीर्ण, कभी रात्रिको बकवाद भ्रम, नेत्र बैठे हुए, जिह्वा मैली, मरनेके समय जिह्वा काली और रूखी, अतीसार, वमन काले रंगकी, स्तनोंका दूध नष्ट, बलका नष्ट, शीत आनकर प्राणोंका नाश होता है. गर्भाशय और योनिमें सूजन और झिल्लियां ढीली पड जाती हैं. गर्भाशय सुकड जाता है किंवा उसकी दीवार कोमल पडजाती है,कदाचित् योनि छिल गई हो तौ कुछ पीला पीला पीपसा चिपटा हुआ दीखता है. जो रोग प्राचीन हो गया हो तौ देहमें पंद्रह दिन पीछे पीप जगह जगह पड जाती है. शीत वारंवार लगता है, ज्वर बना रहता है, शरीरका रंग पीला पड जाता है, कभी देहपर लाल रंग हो जाता है, संधियोंमें सूजन होकर उनमें पीप पड जाती है. नेत्रोंमें भी पीप पड जाती है, पुतलीमें घाव हो जाता है, अंतको नेत्र नष्टही हो जाते हैं, फैंफडेमें भी पीप पड जाती है.

गौरीशंकरका क्याखूबसे प्रश्न—इसकी उत्पत्तिका मुख्य हेतु क्या है ?

Indira Gandhi National Centre for the Arts

उत्तर–बालकके जन्मके पश्चात् गर्भाशय किंवा योनिके भीतर कोई खारजी चीज (छींछडा इत्यादि) कि जिसका निकलना अवश्य है और वह न निकले और रह जावे और वह फुटकर होकर फैलजावे किंवा गर्भाशयमें ही सड जावे तथा गर्भाशयकी कोई बनावट तथा रसौली बालकके जन्मसमय बालकके सिरके दबावसे छिल् जावे तो वहांपर एक प्रकारका विष उत्पन्न हो जाता है.जो मार्ग यूटराइन साइन्स कि जिनके मुख पि़लासन्टा उखड जानेके पश्चात् खुजलाते हैं तथा गर्भाशयके छिले हुए स्थानके द्वारा जो अक्सर या सर्दकस यूटराईयर बालकके जन्मसमय होती है तथा केवल गर्भाशयकी लुआबदार झिल्लीके वसीलेज जिब होकर ये मर्ज़ पैदा करती है अर्थात् गर्भाशयकी रसादिककी झिल्लीके सत्संग करके सोखता करती है किंवा सोख लेती है तब यह रोग उत्पन्न कर देती है, विशेषकरके पियोरपर्लपर टियूनाटिस एरीसिपलिस डफथरिया तथा स्कार्लेट फीवर इत्यादिकोंको विष करकेभी जच्चाके यह रोग उत्पन्न हो जाता है. अल्परोगमें तो पसीना सुखानेवाली धातु इस विषको सुखाती रहती है समयपर इसकी चिकित्सा न करनेके कारणसे विष धीरे धीरे देहमें प्राप्त होकर फिर इस रोगको तीव्र कर देती है. कदापि यह विष यूटराइनके द्वारा देहमें प्राप्त होवे तब तो यह रोग बहुतही

Indira Gandhi National Centre for the Arts

शीघ्र प्राणनाशक हो जाता है. इसमें वैद्यको उचित है कि, जो वैद्य ऐसे रोगीके पास गया हो तौ जबतक स्नान इत्यादिक कर्म करके पवित्र न हो लेवे तबतक किसी दूसरी जच्चाके पास न जावे और न कोई पदार्थ ऐसे रोगीका स्पर्श किया हुआ और जच्चाके पास ले जावे क्योंकि इसमें छूत लगनेसे उस जच्चाके भी इस रोगकी उत्पत्तिका भय है.

गौरीशंकरका क्याखूबसे प्रश्न—पियोफीवरमें कौन् कौन रोग मिश्रित होकर उपद्रव करते हैं ?

उत्तर—परटियूनाइटिस (गर्भाशयमें सूजन),निमोनियां (फैंफड़ेमें सूजन), पिलारेसी (एक प्रकारकी सूजन),परीकार्डाइटिस (यह भी सूजन है),अलव्यूमनोरिया (प्रदरका भेद) और जिगरमें सूजन इत्यादि रोग मिश्रित होकर उपद्रव करते हैं.

चिकित्सा.

कार्बोलिक वाईकिलोराइड आफ् मरक्यूरीलोशन तथा कान्डीज सोल्यूशन,टिन्चर आयोडाईन, इन्जैक्ट करे. जबतक विष प्रबल रहे बलदा बढानेवाली औषध देवे. कांपना बंद होनेको नाइटरेट आफ् आयल्लो कारपैन $\frac{1}{4}$ ग्रेनकी मात्रासे पंद्रह पंद्रह मिनिटके अंतरसे जबतक पसीना और पेशाब न हो दिये जावे. गरम बोतल देहपर फेरना, गरम वस्त्र पहराना हित है.हृदय-

Indira Gandhi National Centre for the Arts

का कष्ट नष्ट करनेको एक एक बूंद टिन्चर एकोनाइट आधे आधे घंटेके अंतरसे पिलावे, जो नाडी क्षीण हो तौ न देवे, ज्वरके वेग और गरमी शांतिके लिये कोई-नाइन दस ग्रेनसे वीस ग्रेनतक. हैडरोब्रोमक एसिड मिलाकर देवे.नाडी कमजोर और नफीखसिकम हो तौ यह योग देवे. स्प्रेट आफ टरपेनटाइन दो औंस, दो अंडेकी जरदीमें मिलाकर और उसमें मियूसलिज आफ गमएकसिया चार औंस, सीरप आफ लैमन दो औंस, टिन्चर बिलाडोना चार ड्राम, सोल्यूशन आफ मार-फाइन दो ड्राम,एसिन्स आफ पिपरमेंट एक औंस, किलोरोफारम वाटर दस औंसतक मिलाकर चारड्रामकी मात्रामें तीन तीन घंटेके अंतरसे खिलावे. कदापि जुलाब देनेकी जरूर जान पडे तौ कैलोमैल तीन ग्रेन, एक्सटिराकटकालूसन ताके संग देवे, देहमें पीप पड गई तौ टिन्चर इस्टिल दस पंद्रह बूंद दिया करे. जो परटियूनाइटिस हो गया हो एक्सटिराकट आफ बिला-डौना बारह ग्रेन डवरस पौडर अडतालीस ग्रेन मिला-कर बारह गोली बनावे और एक एक गोली दो दो घंटेके अन्तरसे जबतक असर न हो देते रहे.

पियोर पल इफीमैरा (जच्चाका ज्वर.).

यह ज्वर कोमल स्वभाववाली स्त्रियोंको बालकके जन्म जानेके कुछ काल व्यतीत होनेपर उत्पन्न होजाता

Indira Gandhi National Centre for the Arts

है. इसीको बिड भी कहते हैं. लक्षण सुस्ती, काहिली, होलदिली, मस्तक, हाथ, पांव और पीठमें ठंड और पीडा, स्तनोंमें पीडा, तृषा, पश्चात् गरमीका लगना, स्तन कठोर और तन जाते हैं, फिर पसीना आता है, तब ज्वर उतर जाता है. जिस दिन ज्वरके आनेकी बारी नहीं होती है उस दिन अजीर्ण उबकाई होती है. कभी बक-वाद करने लगता है. चौवीस घंटे किंवा अडतालीस घंटेके मध्यमें ज्वर उतर जाता है. इसकी उत्पत्तिका हेतु यह है कि बालकके जन्म समय किंवा पश्चात् शरदी लग जानेसे किंवा अपथ्य आहार करनेसे किंवा परिश्रम, चिंता, शोक, नींदके नाश आदिसे भी उत्पत्तिका हेतु है किंवा स्तनोंमें दूध रुका रहनेसे (उदाहरण) जैसे पहली दफे बालकके जन्मकालमें एक तो दूध देरसे उतरताही है तिस ऊपर उतरनेसे पहलेही अगर बालकको स्तनसे लगा दिया जाय तो दूधका निकलना बंद हो जाता है तथा स्तनोंमें दूधही अधिक हो जो बालकके पीनेसे भी बाकी रहा आवे किंवा स्तन कठोर हो किंवा बालक कमजोर कृश हो तथा मिटनी (घंटी स्तनकी) बैठ जावे तथा छोटी हो या अधिक बडी हो जिसको बालक मुखमें दबा न सके किंवा स्तनोंके दूध निकलनेका स्थान मैलसे बंद हो ऐसी दशाओंमें दूध स्तनोंमें रुक जाता है. जिसके हेतुकरके जाडा लगकर यह ज्वर चढता

है, इसीसे इस ज्वरका नाम मिलक फीवर (दूधका ज्वर) भी कहते हैं. (चिकित्सा) इसकी यही है कि हेतुको दूर करे.

प्रसूतकी विशेष चिकित्सा.

दशमूलके काढेको कुछ गरम रहनेपर घृत मिलाकर पिलावे अथवा गिलोय, सोंठ, पियावांसा, चांदवेल, उटकटारा, पंचमूल, नागरमोथा इनके काढेमें सहत मिलाकर पिलावे तथा देवदारु, वच, कूट, पीपल, सोंठ, कायफल, नागरमोथा, चिरायता, कुटकी, धनियां, हरड, गजपीपल, कटेली, गोखरू, धमासा, बडी कटेली, अतीस, गिलोय, बेलफल, काला जीरा इनके काढेमें सैंधानोन और हींग मिलाकर पिलावे तो शूल, ज्वर, खांसी, मूर्छा, कंप, मस्तकपीडा, प्रलाप, तृषा, दाह, तंद्रा, अतीसार, छर्दि और सन्निपात ये सब नष्ट होते हैं तथा पियावांसा, कुलथी, पुष्करमूल, देवदारु, वेत इन्होंके काढेमें हींग नोन मिलाकर पीनेसे प्रसूतिज्वर नष्ट होवे. तथा पंचमूलका काढा कर फिर उसमें गरम लोहेको बुझाकर पीनेसे तथा मदिरामें मिश्री मिलाकर पीनेसे सूतिका रोग नष्ट होता है.

क्याखूबजीका फकीरी लटका.

पीपल, पीपलामूल, चव्य, सोंठ, अजवायन, जीरा स्याह, जीरा सफेद, हल्दी, दारुहल्दी, मनहारी नोन;

Indira Gandhi National Centre for the Arts

काला नोन इनको कांजीमें मिलाकर पकायकर पीनेसे आमवात नष्ट होवे, बल बढे, कफ घटे, अग्नि बढ़े, स्त्रियोंकी जठराग्निको बढावे, सूतिकारोग, शूल नष्ट हो और स्तनोंका दूध बढे.

पंचजीरक पाक.

जीरासफेद, जीराकाला, सौंफ, अजवायन, अजमोद धनियां, मेथी, सोंठ, पीपल,पीपलामूल, चीता, झाऊकी जड, बेरकी गुठली, कूट, सहँजना ये प्रत्येक चार तोले बेरकी गुठली चार तोले, दूध एक सौ अट्ठावीस तोले, घी सोलह तोले इनका पाक बनाय प्रसूताको सेवन करावे तौ सूति और योनिके सर्व रोग, ज्वर, क्षय, खांसी, श्वास, पांडु, कृशता तथा वातरोग नष्ट होते हैं.

नोट.

प्रसूता स्त्री एक महिनेतक स्वेद, अभ्यंग, पथ्य और थोडा भोजन इनका सेवन करे और जो प्रसूताको डेढ महिने पीछे ऋतुधर्म आ जावे तो प्रसूता संज्ञा रहे नहीं,यह धन्वंतरिका मत है और प्रसूतामें उपद्रवसहित ऋतुधर्म और अन्य विकार उपजें तो चार महिने पीछे चिकित्सा करे.

शुंठीपाक.

प्रस्थत्रयं शुंठिमहौषधस्य विपाचयेद् द्रव्यघृतं समं च ॥ चतुर्गुणं क्षीरसमं

च खंडं संशुद्धताम्रायसजे कटाहे ॥ २८ ॥ प्रत्येकजातीपलत्रैफलेन द्वे जीरके धान्यशताह्वयेन ॥ एलोपकुल्याघनवालकानां द्राक्षा विदारी घनसारकं च ॥ २९ ॥ खर्जूरकाश्चैव पलार्द्धमानं पलाष्टकं शीर्षफलं विदध्यात् ॥ पादांशदानेऽश्मजितायसस्य द्विपादयुक्तं मिसि चारुबीजम् ॥ ३० ॥ त्रिवृत्पलाष्टौ शुभमेकपिंसी गंधाढ्यमाधुर्य्यविमिश्रिता च ॥ उमशयोः प्रीतिकरा च शुंठी श्रुताऽजवक्त्रात् किल नारदेन ॥ ३१ ॥

सोंठ तीन प्रस्थ लेकर गौके घीमें पकावे पीछे चौगुने दूधमें डालकर इसका खोया (मावा) करे पीछे खांड तीन प्रस्थ लेकर चासनी करे, फिर उस खोये (मावे)को मिलावे और यह औषधियां जो हम कहते हैं डाले. जायफल आठ टंक, हरड आठ टंक, बहेडा आठ टंक, आंवला आठ टंक, दोनों जीरे सोलह टंक, धनियां आठ टंक, सौंफ, छोटी इलायची, पीपल,नागरमोथा, नेत्रवाला, दाख, विदारीकंद, भीमसेनी कपूर,

Indira Gandhi National Centre for the Arts

छुहारे ये सब आठ टंक, नारियलकी गिरी १२८ टंक, शिलाजीत ३२ टंक, सार ३२ टंक, चारोली ६४ टंक, निसौत १२८ टंक इनके डालनेसे पीछे कुछ सुगंधित वस्तु डाल देवे ॥ २८-३१ ॥

सुपारीपाक.

हेमांभोधरचंदनं त्रिकटुकं जातीं प्रियालीं कुहं मज्जात्रित्रिसुगंधजीरयुगलं शृंगाटकं वंशजम् ॥ जातीकोशलवंगधान्यकयुतं प्रत्येककर्षद्वयं हव्यं गोकुडवं सितार्द्धतुलया धात्री वरी घंजली ॥ ३२ ॥ पूगस्याष्टफलान्युद्रूपलवरे संकुट्य चूर्णीकृतं क्षीरस्याष्टकसंयुतं कृतमिदं मंदाग्निना तं पचेत् ॥ खादेत्प्रातरिदं ज्वरामयहरं दाहं च पित्तं जयेत नासास्याक्षिगुदप्रवाहरुधिरं यद्रोमकूपच्युतम् ॥ ३३ ॥

नागकेशर, मोथा, सफेद चंदन, सोंठ, काली मिरच, पीपल, जावित्री, प्रियंगु, चिरोंजी, कोकनबीजकी मिंगी, बेरकी मिंगी, तज, इलायची, तालीसपत्र, जीरासफेद, जीरा स्याह, सिंघाडे, लोंग, वंशलोचन, जायफल,

धनियां ये सब आठ आठ टंक, गौका घी ६४ टंक, मिश्री ८०० टंक, आंवला १२८ टंक, सतावर १२८ टंक; दक्षिणी चिकनी सुपारी १२८ टंक इनको कूट छानकर फिर घीमें कुछ गरम कर १०२४ टंक दूधमें मंद अग्निपर पकावे पीछे पूर्वोक्त मिश्रीकी चासनी कर पाक बना लेवे. प्रातःकाल सेवन करनेसे ज्वर, दाह, पित्तके रोग, नाक मुख नेत्र और गुदाद्वारा रुधिरका गिरना तथा रोम रोममें रुधिर गिरना इत्यादि रोगोंको नष्ट करता है ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

गर्भिणीके ज्वरकी चिकित्सा.

चंदनं सारिवा लोध्र मृद्वीकाशर्करान्वितम् ॥ क्वाथं कृत्वा प्रदातव्यं गर्भिण्या ज्वरनाशनम् ॥ ३४ ॥ एरंडमूलममृता मंजिष्ठा रक्तचंदनम् ॥ दारुपद्मयुतः क्वाथो गर्भिण्या ज्वरनाशनः ॥ ३५ ॥

चंदन, सारिवा, लोध, दाख और शक्करयुक्त काढा करिके गर्भिणीको देवे यह ज्वरनाशक है. अरंडकी जड, गिलोय, मजीठ, रक्तचंदन, देवदारु और पद्माख इनका काढा गर्भिणीके ज्वरका नाश करनेवाला है. यह उपाय चक्रदत्तने कहा है ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

Indira Gandhi National Centre for the Arts

लवंगादिचूर्ण.

लवंगं टंकणं मुस्तं धातकी बिल्वधान्यकम्॥ जातीफलं सर्जकं च शताह्वा दाडिमं तथा॥३६॥ जीरकं सैंधवं मोचं नीलोत्पलरसांजनम्॥ अभ्रकं वंगकं चैव समंगा रक्तचंदनम्॥३७॥ चव्यं चातिविषा शृङ्गी खदिरं वालकं समम्॥ एतच्चूर्णं प्रदातव्यं संग्रहग्रहणीहरम्॥३८॥ नानावर्णमतीसारं ज्वरं चैव नियच्छति॥ आमारक्तातिसारघ्नं शूलशोथनिषूदनम्॥३९॥ भृंगराजरसैः प्लाव्यं भावयित्वा दिनत्रयम्॥ छागीदुग्धेन मतिमान् गर्भिणीमनुपानतः॥४०॥

लौंग, सुहागा, मोथा, धायके फूल, बेलफल, धनियां, जायफल, राल, सौंफ, दाडिम, जीरा, सैंधानोन, मोचरस, नीला कमल, रसौत, अभ्रकभस्म, वंगभस्म, मजीठ, रक्तचंदन, चव्य, अतीस, काकडासिंगी, खैर और सुगंधवाला इनको समभाग लेकर चूर्ण कर रोगीको देना. यह लवंगादिचूर्ण संग्रहणी, अनेक रंगके अतीसार,

Indira Gandhi National Centre for the Arts

ज्वर, आमातिसार, रक्तातिसार, शूल, शोथरोगका नाशक है. जो गर्भिणीको देना होय तो भांगरेके रसकी तीन दिनतक भावना देकर फिर उस चूर्णको बकरीके दूधके साथ देना ॥ ३६–४० ॥

शुंठीबिल्वकषायं तु यवसक्तुसमन्वितम् ॥ गर्भिणीं पाययेद्वैद्यश्छर्द्यतीसारनाशनम् ॥ ४१ ॥ पृश्निपर्णी बला वासा निर्यूहो रक्तपित्तजित् ॥ गर्भिण्याः कामलाशोथकासश्वासज्वरापहः ॥ ४२ ॥ कुस्तुंबरीणां कल्कं तु तंदुलोदकसंयुतम् ॥ पिबेत्सशर्करं हृद्यं गर्भिणीच्छर्दिवारणम् ॥४३॥ बिल्वं मज्जा च लाजांबु पिबेच्छर्दिषु गर्भिणी ॥ भार्ङ्गीशुंठीकणाचूर्णं गुडेन श्वासकासजित् ॥ ४४ ॥

सोंठ और बेलके काढेमें जवके सत्तू गर्भिणीको पिलावे तौ वांति,अतिसार जाय.पिठवन, वरिआरा और अडूसा इनका काढा रक्तपित्त तथा गर्भिणीका कामला, सूजन, कास, श्वास और ज्वर इनका नाशक है. धनियाको चावलके धोवनमें वांटकर शक्कर मिलाकर गर्भिणीकी वांती बंद होनेके लिये पिलाना. गर्भिणीकी वांति

Indira Gandhi National Centre for the Arts

बंद होनेको बेलकी गरी और धानकी लाईका काढा पिलावे तथा कासश्वासके नाशके लिये भारंगी, सोंठ और पीपलका चूर्ण गुडके साथ खिलावे ॥ ४१-४४॥

बिल्वाग्निमंथपक्वं वा पाटल्या नाग-
रेण वा ॥ सिद्धमंबु पिबेच्छीतं गर्भि-
णीवातरोगजित् ॥ ४५॥

बेल और नींबका काढा अथवा पाडरीका काढा अथवा सोंठका काढा शीतल करके गर्भिणीके वातरोगपर देना ॥ ४५ ॥

कंजाका सफूफ.

बारीसे जो ज्वर आते हैं उनके नष्ट करनेके लिये कन्जाका सफूफ उत्तम औषध है. कन्जाके फलोंकी मिंगी और काली मिरच दोनों बराबर भाग लेकर महीन कूटकर पंद्रह ग्रेनसे तीस ग्रेनतककी मात्रामें खिलावे और ज्वरके मोक्ष होनेके पीछे बल पराक्रम बढानेके लिये पांच ग्रेनसे दस ग्रेनतक खिलावे और ज्वरके वेग (वारी) रोकनेके लिये कन्जाकी जडकी छालको कूट पीसकर दश ग्रेनतक खिलावे और कन्जाकी मिंगी और काली मिरच बराबर भाग लेकर कूट पीसकर नींबूके रसमें गोलियां बनाकर खिलानेसे तृतीयक

Indira Gandhi National Centre for the Arts

चातुर्थिक इत्यादिक ज्वरोंकी वारी रुक जाती है. यह गर्भिणीको न देवे.

अतीसपौडर ज्वरोंपर.

अतीसकी जड़को महीन पीसकर जिन दिन ज्वरके आनेकी वारी नहीं (अर्थात् खाली दिन है) वीस तथा तीस ग्रेनकी मात्रामें तीन किंवा चार घंटेके अंतरसे खिलावे और ज्वरके मोक्ष होनेके पश्चात् ताकत लानेके लिये पांच ग्रेनसे दश ग्रेनतक देवे, गर्भवतीको न देवे.

रसौंतका योग ज्वरपर.

ज्वरोंकी वारी (वेग) रोकनेके लिये रसौंत उत्तम औषध है. ज्वरकी वारी (वेग) रोकनेके लिये आधे ड्रामकी मात्रामें पानीमें घोलकर तीन या चार वार जिस दिन वारी न हो पिलानेसे दो या तीन दिनमें ज्वर नष्ट हो जाता है और इसके पीनेसे आमाशयमें गरमी मालूम होती है, भूक बढ जाती है, अजीर्ण नष्ट हो जाता है. गर्भिणीको न पिलावे.

एपियोल.

एपियोल वारीके जाडेके ज्वरमें दिया जाता है.मात्रा इसकी तीन बूंदसे छः बूंदतककी है.

IGNCA RAR
ACC. No. R-306
Indira Gandhi National Centre for the Arts

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानेकी परमोपयोगी, स्वच्छ, शुद्ध और सस्ती पुस्तकें।

यह विषय आज ७०।८० वर्षसे भारतवर्षमें प्रसिद्ध है कि, इस यन्त्रालयकी छपी हुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रमाणित हुई हैं। इस यन्त्रालयमें प्रत्येक विषयकी पुस्तकें जैसे—वैदिक, वेदांत, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, छन्द, ज्योतिष, साम्प्रदायिक, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोष, वैद्यक तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दी भाषाकी प्रत्येक अवसरपर विक्रीके लिये तैयार रहती हैं। शुद्धता, स्वच्छता तथा कागजकी उत्तमता और जिल्दकी बँधाई देशभरमें विख्यात है। इतनी उत्तमता होनेपर भी दाम बहुत ही सस्ते रखे गये हैं अतः संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी अपनी आवश्यकतानुसार पुस्तकोंके मँगानेमें त्रुटि न करनी चाहिये. ऐसा उत्तम, सस्ता और शुद्ध माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है ‌-)॥ का टिकट भेजकर बड़ा 'सूचीपत्र' मँगा देखें।

पुस्तक मिलनेका पता—

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
बम्बई

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण-बम्बई

1119